प्रतिमा

ISSN : 2250-1193

2018

Year 8, No. 9
July-September, 2018

अनुकृति

An International Refereed Research Journal

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Ba[illegible]haripur [illegible]ala, Jaunpur

Principal
R[illegible] [illegible]havidyalaya
[illegible], Baikunthpur, [illegible]

Reg. No. 694/2009-10

ISSN : 2250-1193

अनुकृति

An International Refereed Research Journal

वर्ष–5, अंक–6

जुलाई–सितम्बर, 2015

प्रधान सम्पादक
प्रो. विजय बहादुर सिंह
हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

सम्पादक
डॉ. रामसुधार सिंह
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
उदय प्रताप स्वायत्तशासी महाविद्यालय
वाराणसी

प्रकाशक
सृजन समिति प्रकाशन
वाराणसी (उ.प्र.)

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur..., Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kat...
Jaunpur

	1857 की अमर सेनानी अवध की बेगम : हजरत महल निकहत परवीन	215-218
⇨	महिला स्वास्थ्य एवं पोषण का भारतीय संदर्भ में स्थितिपरक विश्लेषण नीतू सिंह	219-222
⇨	अनुसूचित जाति की महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर आधुनिकीकरण का प्रभाव प्रतिभा	223-228
⇨	भारतीय लोक संगीत में स्वर वाद्य एवं स्वर वाद्यों पर लोक धुनों का प्रयोग प्रीति सिंह	229-230
⇨	मानवाधिकार और शिक्षा राजीव त्रिपाठी	231-234
⇨	योग विज्ञान और कुण्डलिनी–शक्ति संदीप कुमार	235-238
⇨	भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में गोपाल कृष्ण गोखले का योगदान सन्तोष कुमार	239-242
⇨	स्त्री सशक्तिकरण – सशक्तता की कसौटियाँ सरिता कुमारी	243-246
⇨	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का मिथक : एक ऐतिहासिक मूल्यांकन शिवेन्द्र कुमार	247-250
⇨	उत्तर वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था : एक मूल्यांकन सुरेन्द्र पासवान	251-252
⇨	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में उग्रवाद के उदय के कारणों का ऐतिहासिक विश्लेषण विजय पासवान	253-258

●

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
[illegible], Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
[illegible]

rnational Refereed Research Journal), वर्ष–5, अंक–6, जुलाई–सितम्बर 2015 ISSN : 2250-1193

त जाति की महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

प्रतिमा*

म्पूर्ण सामाजिक जगत में सामाजिक, आर्थिक, व्यवसायिक अथवा प्रजातीय आधारों पर स्तरीकरण था पायी जाती है। सामाजिक स्तरीकरण वह व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत समाज अनेक उच्च एवं मूहों में विभक्त हो जाता है। सामाजिक स्तरीकरण द्वारा समाज विभिन्न उच्च एवं निम्न समूहों में त होता है तथा ये समूह परस्पर एक दूसरे से जुड़े होते हैं और सामाजिक एकता को बनाये रखते माज में स्थिरता कायम रखते हैं। परम्परागत भारतीय समाज इसी दृष्टिकोण पर आधारित था। ज्ञान, जीविका तथा सेवा मनुष्य की ये चार स्वाभाविक इच्छाएं हैं, इन्हीं इच्छाओं की पूर्ति के लिए भारतीय ज वर्ण व्यवस्था पर आधारित था जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को विविध उपजाति श्रेणी क्रम में ा गया था। कालान्तर में वर्ण व्यवस्था का रूप जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गया और व्यवसाय पर धारित प्राचीन जाति व्यवस्था में शुद्धता और अशुद्धता की परिकल्पना के आधार पर बन्द समूहों का निर्माण हुआ जो अनेक प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं, असमानताओं तथा निर्योग्यताओं से ग्रसित रहा।

इस प्रकार जातिगत संस्तरण के अन्तर्गत ऐसी व्यवस्था का प्रादुर्भाव हुआ जिसके अन्तर्गत निम्न जातियों के सदस्यों को मानवोचित अधिकारों से वंचित करके समाज में निम्न स्थान दिया गया और उन्हें अस्पृश्य मानकर अनेक प्रकार के अधिकारों से वंचित कर दिया गया। अस्पृश्य शब्द छुआछूत व भेदभाव की भावना का प्रतिरूप है जिसके आधार पर अस्पृश्य जाति का जन्म हुआ।

डॉ० के०एन० शर्मा के अनुसार "अस्पृश्य जातियां वे हैं जिनके स्पर्श से एक व्यक्ति अपवित्र हो जाये और पवित्र करने के लिए कुछ कृत्य करने पड़े।"

मजूमदार ने लिखा है कि "अस्पृश्य जाति वे हैं जो बहुत सी सामाजिक व राजनैतिक निर्योग्यताओं को परम्परा अथवा धर्म के द्वारा निर्धारित करके सामाजिक रूप से उच्च जातियों पर लागू किया जाये।"

इस प्रकार अस्पृश्यता उस परम्परागत मनोभावों तथा व्यवहार प्रतिमानों का द्योतक है जिसके अनुसार इनके सदस्य अछूत या न छूने योग्य हैं और इसलिए उनसे एक सामाजिक दूरी बनाये रखना न केवल उच्च जातियों का कार्य है, अपितु अस्पृश्य जातियों का भी कर्तव्य है कि वे उच्च जाति के सदस्यों से दूर रहें और उनको न छुएं, इसलिए उनके साथ उठना–बैठना, खाना–पीना या अन्य सम्बन्ध रखने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता, न ही मन्दिर में प्रवेश करने का अधिकार दिया जाता था। यहां तक कि उच्च जाति के लोग जिस तालाब, कुएं या नदी से पानी लेते थे, वहां जाने तक की भी मनाही थी।

ब्रिटिश काल में अस्पृश्यों तथा अछूतों को बहुत समय तक दलित वर्ग कहा जाता रहा। इस नाम पर अधिकतर व्यक्तियों द्वारा आपत्ति किये जाने पर सन् 1931 में असम के जनगणना आयुक्त ने इन्हें बाहरी जाति के नाम से सम्बोधित किया है। सन् 1935 में साइमन कमीशन ने अस्पृश्य जाति के लिए अनुसूचित जाति शब्द का प्रयोग किया। स्वतंत्रता के पश्चात संविधान की धारा 341 के अन्तर्गत राष्ट्रपति को यह अधिकार दिया गया कि वह प्रत्येक राज्य के राज्यपाल से परामर्श करके प्रत्येक राज्य की अनुसूचित जातियों की घोषणा करे। इन जातियों को अधिक सम्मान देने के लिए गांधी जी ने इन्हें हरिजन कहना आरम्भ किया था वर्तमान में उन्हें हरिजन या अनुसूचित जाति कहा जाता है।

डॉ० डी०एन० मजूमदार के अनुसार, अनुसूचित जातियां वे जातियां हैं, जो विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक निर्योग्यताओं से पीड़ित हैं जिनमें से बहुत सी निर्योग्यताएं उच्च जातियों के द्वारा परम्परागत रूप से और सामाजिक रूप से निर्धारित की गयी हैं। इनके सदस्यों में महिलाओं की दशा और दयनीय रही। वैसे भी भारत एक पुरुष प्रधान देश है जहां लिंग के आधार पर स्त्री और पुरुष में भेद किया जाता है। लिंग भेद के आधार पर स्त्री सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक निर्योग्यताओं का शिकार रही है परन्तु अनुसूचित जाति की महिलाएं ...न का शिकार थीं। उच्च जाति के सदस्यों के द्वारा इनका मानसिक और शारीरिक शोषण किया गया ... उनका लम्बे समय तक शोषण किया गया परन्तु परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत नियम ... नहीं जिसमें परिवर्तन नहीं पाया जाता है। समस्त जड़ ... केवल पदार्थों में

Co-ordinator
IQAC
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur Kala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

लित माना जाता है। इस परिवर्तन से अनुसूचित जातियां भी अछूती नहीं रहीं। जैसे-जैसे परम्परागत ज आधुनिक समाज की ओर अग्रसर होता गया, वैसे-वैसे उनमें परिवर्तन होता रहा है।

ध का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार है-

1. अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को ज्ञात करना।
2. अनुसूचित जाति की महिलाओं की पारिवारिक स्थिति एवं उनकी सामाजिक अन्तःक्रियाओं पर आधुनिकीकरण के प्रभाव को ज्ञात करना।
3. अनुसूचित जाति की महिलाओं में व्यवसायिक गतिशीलता एवं आर्थिक स्थिति पर आधुनिकीकरण के प्रभाव को ज्ञात करना।

शोध की उपकल्पना

प्रस्तुत शोध में जिन उपकल्पनाओं का प्रयोग किया गया है। वे निम्न है-

1. परम्परागत रूप से अनुसूचित जाति की महिलाओं की जो सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति थी, उनमें आधुनिकीकरण के फलस्वरूप सुधार की प्रवृति देखने को मिलती है।
2. अनुसूचित जाति की महिलाओं में आधुनिकीकरण के फलस्वरूप रहन-सहन के स्तर में सुधार हुआ और उनका सम्पर्क विभिन्न जातियों की महिला सदस्यों के साथ हुआ।
3. अनुसूचित जाति की महिलाओं में आधुनिकीकरण के फलस्वरूप व्यावसायिक चेतना उत्पन्न हुई, व्यावसायिक गतिशीलता का उनके आर्थिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत सन्दर्भित शोध प्रारूप अन्वेषणात्मक और वर्णनात्मक अनुसंधान अभिकल्प के रूप में विन्यसित है। अनुसंधान अभिकल्प के द्वारा विषय अथवा समस्या के सम्बन्ध में यथार्थ तथ्यों के आधार पर वर्णनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। अनुसंधान विषय तथा समस्या से सम्बन्धित सभी प्रकार की सूचनाएं इस अभिकल्प के द्वारा प्राप्त की गयी है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश में स्थित जौनपुर जनपद के शाहगंज तहसील के विकासखण्ड सोंधी पर आधारित है।

तथ्य संकलन के स्रोत

तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक एवं द्वैतीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत

साक्षात्कार अनुसूची

शोध-प्रबन्ध में आकड़े एकत्रित करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है जिसमें अध्ययन से सम्बन्धित प्रश्नों को एकत्र किया गया। साक्षात्कार अनुसूची का पूर्व परीक्षण भी किया गया है। प्रश्नों को आवश्यकतानुसार विभिन्न श्रेणियों तथा उपश्रेणियों में विभक्त किया गया है।

साक्षात्कार

उत्तरदाताओं से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उनके जीवन पर आधुनिकीकरण के अन्तर्गत प्रभावों को जानने का प्रयास किया गया है और तथ्यों के तह तक पहुंचने का प्रयास किया गया है।

द्वैतीयक स्रोत

इसके अन्तर्गत जनगणना पुस्तिका, विषय से सम्बन्धित पूर्ववर्ती अध्ययन, शोध ग्रन्थ, पत्र, पत्रिका, पुस्तकों, लेखों तथा अन्य स्रोतों का प्रयोग किया गया है।

तथ्यों के प्रस्तुतीकरण में प्रश्नों से सम्बन्धित उत्तरों एवं अवलोकन से प्राप्त तथ्यों का वैज्ञानिक रूप से उपयोगी प्रणालियों का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्श का चयन

इस अध्ययन में व्यवस्थित यादृच्छिक प्रतिदर्श प्रविधि के आधार पर वास्तविक उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। प्रस्तावित अध्ययन के रूप में जौनपुर जनपद के शाहगंज तहसील के सोंधी ब्लाक को लिया

Co-ordinator
IQAC
Raghuvar Mahavidyalaya
Thalai, Shahganj, Jaunpur
...Mahavidyalaya
...Shahganj, Jaunpur

[illegible] एक शोधार्थी के लिए यह सम्भव नहीं है कि सम्पूर्ण [illegible] का अध्ययन कर सके इसलिए [illegible] जाति की [illegible] महिलाओं का अध्ययन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है। [illegible] के अन्तर्गत कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों के आधार पर अनुसूचित जाति की महिलाओं के [illegible] को विश्लेषित किया गया है।

सारणी–1 : शैक्षणिक स्थिति के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

शैक्षणिक स्थिति	उत्तरदात्रियां	
	आवृत्ति	प्रतिशत
निरक्षर	175	43.75
मात्र साक्षर	50	12.50
प्राथमिक	75	18.75
जूनियर हाईस्कूल	36	09.00
हाईस्कूल	28	07.00
इण्टरमीडिएट	22	05.50
उच्च शिक्षा	14	03.50
योग	400	100.00

सारणी में दत्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 175 (43.75 प्रतिशत) उत्तरदात्रिया निरक्षर हैं। 50 (12.50 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां मात्र साक्षर पायी गयी हैं। 75 (18.75 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां प्राथमिक शिक्षित, 36 (09.00 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां जूनियर हाईस्कूल, 28 (07.00 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां हाईस्कूल, 22 (05.50 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां इण्टरमीडिएट शिक्षित और 14 (03.50 प्रतिशत) उत्तरदात्रिया उच्च शिक्षा प्राप्त पायी गयी हैं।

अतः समंको से स्पष्ट है कि अध्ययन के अन्तर्गत अधिकांश उत्तरदात्रियां प्राथमिक स्तर तक और मात्र साक्षर हैं। साथ ही निरक्षर उत्तरदात्रियों का भी बाहुल्य है।

सारणी–2 : व्यवसाय के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

व्यवसाय	उत्तरदात्रियां	
	आवृत्ति	प्रतिशत
कृषि मजदूरी	135	33.75
दस्तकारी	80	20.00
नौकरी	37	09.25
अन्य मजदूरी	75	18.75
स्वव्यापार / घरेलू कार्य	60	15.00
अन्य	13	03.75
योग	400	100.00

Co-ordinator IQAC Raghuvansh Mahavidyalaya

सारणी में दत्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अधिकांश 133 (33.75 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां कृषि कार्य में संलग्न हैं। 80 (20.00 प्रतिशत) दस्तकारी कार्यों में, 75 (18.75 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां अन्य किसी भी प्रकार के कार्यों में मजदूरी, 60 (15.00 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां स्वव्यापार एवं घरेलू [illegible] एवं 37 (09.25 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां नौकरी करने वाली पायी गयीं। 13 (03.25 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां जो किसी अन्य [illegible] के कार्यों को करती हैं।

Principal [illegible] Mahavidyalaya, [illegible] Bhikharipur, [illegible] Jaunpur

... कृषि कार्यों के व्यवसाय से सम्बन्धित हैं। दस्तकारी एवं मजदूरी में संलग्न उत्तरदात्रियां भी महत्वपूर्ण हैं।

तथ्यात स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदात्रियां कृषि कार्यों के व्यवसाय से सम्बन्धित हैं।

सारणी–3 : परिवार का व्यवसाय एवं उत्तरदात्रियां

परिवार का व्यवसाय	उत्तरदात्रियां	
	आवृत्ति	प्रतिशत
जातिगत व्यवसाय	154	38.50
जाति के बाहर का व्यवसाय	246	61.50
योग	400	100.00

सारणी में दत्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 154 (38.50 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां के परिवार जातिगत व्यवसायो से जुड़े हुए हैं। जबकि 246 (61.50 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों के परिवार जातिगत व्यवसाय के बाहर व्यवसाय करने वाले हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अनुसूचित जातियां व्यवसाय के सम्बन्ध में गतिशील हैं। अधिकांश उत्तरदात्रियों के परिवार में गैरजातिगत व्यवसाय होते हैं।

सारणी–4 : जाति के बाहर व्यवसाय करने की स्थिति एवं उत्तरदात्रियां

N = 246

स्थिति	उत्तरदात्रियां	
	आवृत्ति	प्रतिशत
अधिक पूंजी से	24	09.76
पुराने जातिगत नियम टूटने से	120	48.78
सरकारी कार्यक्रमों से	30	12.20
शिक्षा से	57	23.17
आरक्षण से	10	04.06
अन्य	05	02.03
योग	**246**	**100.00**

सारणी में दत्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जिन उत्तरदात्रियों के परिवार का व्यवसाय गैरजातिगत है उनमें से अधिकाश 120 (48.78 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां यह मानती हैं कि पुराने जातिगत नियम टूटने से उनके परिवार के अधिकाश सदस्य गैर जातिगत व्यवसाय को करते हैं। 57 (23.17 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां शिक्षा को, 30 (12.20 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां सरकारी कार्यक्रमों को, 24 (09.76 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां अधिक पूंजी को, 10 (04.06 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां आरक्षरण को एवं 05 (02.03 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां किसी अन्य को जिम्मेदार मानती हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अधिकांश उत्तरदात्रियां यह मानती हैं कि पुराने जातिगत नियम टूटने से उनके परिवार के अधिकांश सदस्य गैरजातिगत व्यवसाय करते हैं।

सारणी–5 : परिवार के महिला सदस्यों के कार्य एवं उत्तरदात्रियां

कार्य	उत्तरदात्रियां	
	आवृत्ति	प्रतिशत
घरेलू कृषि कार्य	75	18.75
कृषि मजदूरी	95	23.75

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikhampur, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikhampur, Jaunpur

[illegible] मजदूरी		
दस्तकारी	30	07.50
सिलाई	45	11.25
दुकानदारी	20	05.00
अन्य	60	15.00
योग	35	08.75
	400	100.00

सारणी में दत्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 120 (23.75) उत्तरदात्रियों के ... में महिलायें अधिकांशतः कृषि मजदूरी करती हैं और 75 (18.75 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों के परिवार में ... कार्य के रूप में महिलाओं को संलग्न पाया गया। 60 (15.00 प्रतिशत) उत्तरदात्रियों के परिवार में ... महिलायें दुकानदारी, 45 (11.25 प्रतिशत) परिवारों में महिलायें दस्तकारी और 20 (05.00 प्रतिशत) ... में सिलाई करती हैं। 35 (08.75 प्रतिशत) परिवारों में महिलायें किसी भी अन्य प्रकार के कार्यों में संलग्न पायी गयी।

अतः तथ्यतः स्पष्ट है कि अधिकांश परिवारों में महिलायें घरेलू, कृषि कार्य और कृषि मजदूरी के रूप में कार्य करती हैं।

सारणी–6 : आर्थिक कार्य करने के सम्बन्ध में उत्तरदात्रियों की प्रकृति

प्रकृति	उत्तरदात्रियां	
	आवृत्ति	प्रतिशत
अपनी स्वेच्छा से	255	63.75
दबाव से	145	36.25
योग	400	100.00

सारणी में दत्त आंकड़ों के परिकलन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 255 (63.75) उत्तरदात्रियां अपनी स्वेच्छा से आर्थिक कार्य करती हैं। जबकि 145 (36.25 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां दबाव में आकर कार्य करती हैं। अतः तथ्यतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदात्रियां अपनी स्वेच्छा से आर्थिक कार्य करती हैं।

इसी प्रकार से जो उत्तरदात्रियां दबाव में आर्थिक कार्य करती हैं उसके पीछे किस प्रकार का दबाव होता है, विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। प्राप्त तथ्यों को अग्रांकित सारणी में प्रस्तुत किया गया है–

सारणी–6 : आर्थिक कार्य करने के पीछे दबाव एवं उत्तरदात्रियां

N = 145

दबाव	उत्तरदात्रियां	
	आवृत्ति	प्रतिशत
पति का	90	62.07
पुत्र का	15	10.34
श्वसुर का	30	20.69
अन्य सदस्य द्वारा	10	06.90
योग	145	100.00

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kalan, Jaunpur
Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kalan

ISSN : 2250-1193

सारणी में दत्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जो उत्तरदात्रियां दबाव में आकर आर्थिक …र्य करती है उनमें से अधिकांश 90 (62.70 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां अपने पति के दबाव में होती है। 30 …9 प्रतिशत) उत्तरदात्रियां अपने सास-श्वसुर, 15 (10.34 प्रतिशत) अपने पुत्र एवं 10 (06.90 प्रतिशत) परिवार के अन्य सदस्यों के दबाव में कार्य करती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अधिकांश उत्तरदात्रियां अपने पति के दबाव में आर्थिक कार्यों को …रती है।

…ष्कर्ष

प्राप्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि अनुसूचित जाति की महिलाओं में आर्थिक कार्यों के प्रति जागरूकता आयी है। महिलायें अपने परम्परागत व्यवसाय एवं कार्यों से पृथक होकर अन्य गैर जातिगत व्यवसाय में संलग्न हो रही है। साथ ही साथ इन जातियों के परिवार के अन्य सदस्यों में जागरूकता के तथ्य दृष्टिगोचर होते हैं।

अतः प्रस्तुत अध्ययन अनुसूचित जाति की महिलाओं में आधुनिकीकरण के सकारात्मक परिणाम को परिलक्षित करते हैं।

संदर्भ :

1. प्रो0 एस0सी0 अरोड़ा (2008) : राधाकमल मुकर्जी : चिन्तन की परम्परा, शताब्दी विशेषांक, अंक 2, समाज विज्ञान की शोध पत्रिका, प्रकाशक : समाज विज्ञान संस्थान, चांदपुर, बिजनौर, उ0प्र0, पृ0 31–32
2. कु0 शिखा श्रीवास्तव (2010) : महिला कृषि श्रमिकों की पारिवारिक निर्णयों की भूमिका, प्रकाशक : राधाकमल मुकर्जी, चिन्तन की परम्परा, सामाजिक विज्ञानों की अन्तरविज्ञानी शोध पत्रिका, समाज विज्ञान विकास संस्थान, चांदपुर, बिजनौर, उ0प्र0, पृ0 73–74
3. मालती इन सरस्वती मिश्रा (1988) : भारतीय स्त्रियों की परिस्थिति, शारदा पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली।
4. Srinivas, M.N. (1966) : Social Change in Modern India, University of California Press, Bekeley.
5. Durkhim, E. (1947) : Elementry Forms of Religious Life Translated by J.W. Swain Free Press Glencoe. pp. 41.
6. Srinivas, M.N. (1956) : A Noton Sanskritization and Westernization for Eastern Qurterly, Vol. 15, pp. 481-496.

●

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikhanpurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN 2393-8048, July-December 2020, Submitted in December 2020, iajesm2014@gmail.com

Review of Literature Attitude of Teachers towards Integration of Students with Special Needs In Relation To School Climate and Their Sense of Efficacy

Abhishek Mishra, Research Scholar, Department of Education, SunRise University, Alwar, Rajasthan (India)
Dr. Atul Kumar Dubey, Assistant Professor, Department of Education, SunRise University, Alwar, Rajasthan (India)
Email: [illegible]

ABSTRACT: On the assumption that the successful implementation of any inclusive policy is largely dependent on educators being positive about it, a great deal of research has sought to examine teachers' attitudes towards the integration and, more recently, the inclusion of children with special educational needs in the mainstream school. This paper reviews this large body of research and, in so doing, explores a host of factors that might impact upon teacher acceptance of the inclusion principle. The analyses showed evidence of positive attitudes, but no evidence of acceptance of a total inclusion or 'zero reject' approach to special educational provision. Teachers' attitudes were found to be strongly influenced by the nature and severity of the disabling condition presented to them (child-related variables) and less by teacher-related variables. Further, educational environment-related variables, such as the availability of physical and human support, were consistently found to be associated with attitudes to inclusion. After a brief discussion of critical methodological issues germane to the research findings, the paper provides directions for future research based on alternative methodologies.

Keywords: Integration, inclusion, teacher attitudes, inclusive education

INTRODUCTION:

More recent studies have been of teachers' attitudes towards inclusion. Early American studies on 'full inclusion'reported results which were not supportive of a full placement of pupils with SEN in mainstream schools. A study carried out by Coates (1989), for example, reported that general education teachers in Iowa did not have a negative view of pullout programmes, nor were they supportive of 'full inclusion'. Similar findings were reported by Semmel et al. (1991) who, after having surveyed 381 elementary educators in Illinois and California (both general and special), concluded that those educators were not dissatisfied with a special education system that operated pullout special educational programmes. Another American study by Vaughn et al. (1996) examined mainstream and special teachers' perceptions of inclusion through the use of focus group interviews.

The basic proposition of inclusive education was stated by The Salamanca Statement in 1994, stating that education must satisfy the needs of all children and the educational institutions for ordinary children should also accept all kinds of children and adolescents with special needs in their respective areas (UNESCO 1994). In recent decades, developing inclusive educational practices has become a worldwide movement (Khochen-Bagshaw 2020, Mcilvaine 2020), including China. Recently, Chinese government pays more attention on inclusive education for children with disabilities and issued a series of policies. Special Education Promotion Plan (2014–2016) enacted by Ministry of Education *et al.* (MOE) in 2014 proposed to comprehensively promote inclusive education (Central People's Government 2017). Thereupon, MOE (2020a) issued a specific policy in inclusive education named Opinions on Strengthening the Work of Students with Disabilities Learning in Regular Elementary Schools. It demands education administrative departments at the county level shall ensure that students with disabilities can learn in regular schools and give priority to children and adolescents with disabilities' enrollment in general schools. Due to the policy of promoting inclusive education, the scale of enrolled students with disabilities learning in regular schools is grand. In 2019, there are 394 thousand students with disabilities studying in general schools, with a proportion about 49.2% of all students with disabilities in China (MOE 2020b).

However, in studies where teachers had active experience of inclusion, contradictory findings were reported. A study by Villa et al. (1996) yielded results which favoured the inclusion of children [illegible] ordinary school. The researchers noted that teacher commitment

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Shikharpurkala, Jaunpur

he professional expertise needed to implement inclusive programmes. This finding was reflected in the Sebastian and Mathot- Buckner's (1998) case study of a senior high and a middle school in Washington School District, Utah, where students with severe learning difficulties had been integrated. In this study, 20 educators were interviewed at the beginning and end of the school year to determine attitudes about inclusion. The educators felt that inclusion was working well and, although more support was needed, it was perceived as a challenge. Similar findings were reported by LeRoy and Simpson (1996) who studied the impact of inclusion over a three-year period in the state of Michigan. Their study showed that as teachers' experience with children with SEN increased, their confidence to teach these children also increased. The evidence seems to indicate that teachers' negative or neutral attitudes at the beginning of an innovation such as inclusive education may change over time as a function of experience and the expertise that develops through the process of implementation. This conclusion was also reported in a recent UK survey of teachers' attitudes in one LEA, where teachers who had been implementing inclusive programmes for some years held more positive attitudes than the rest of the sample, who had had little or no such experience (Avramidis, Bayliss and Burden, 2000). However, there have been no studies which show the move towards more positive attitudes to inclusion, leading to widespread acceptance of full inclusion.

REVIEW OF LITERATURE

Even though the large scale of inclusive education in China, the preparation of inclusive education is still on construction. It is not until 2019, the Department of Teachers' Affairs in MOE requesting the subject of special education subject should be gradually added to the teacher qualification examinations for primary and secondary schools from 2020 (MOE 2020c). Before that, most general teachers did learn knowledge and skills of special education in their pre-teacher training programs. The Opinions on Strengthening the Work of Students with Disabilities Learning in Regular Elementary Schools (2020) try to improve the profession of teachers as well. It states schools all over the country should select outstanding teachers with certain special education qualities, more benevolence and sense of responsibility to serve as the head teachers and teachers of the classes for children with disabilities. This shows the preparation of general teachers to implement inclusive education is still in the process of gradual development.

Successful inclusive education can not only provide equal access in education to all children but also, more importantly, provide appropriate education to students to achieve positive outcomes (Erten and Savage 2012, Messiou 2017). However, the quality of inclusive education is questioned by scholars (Deng and Zhao 2019, Wei *et al.* 2017, Lei *et al.* 2017), primary school teachers (He 2019) and parents (Chen *et al.* 2019), which is affected by many factors, including classification of students with special needs, role assignment between special education staff, support personnel, and mainstream teachers, and attitudes among other stakeholders (Du and Fen 2019, Alquraini 2012, Bhatnagar and Das 2014, Bornman and Donohue 2013). Among them, the key factors of implementing inclusive education are the principles of teachers towards inclusive education and teachers' attitudes towards students with disabilities (Bender *et al.* 1995, De Boer *et al.* 2011, Hellmich *et al.* 2019, Pang 2017). Thaver and Lim (2014) considered the prosperity of inclusion of students with disabilities largely rest on the attitudes of mainstream teachers, for instance, when they hold disapproving attitudes, they less frequently implement inclusive educational strategies (e.g. Bender *et al.* 1995, Singh *et al.* 2020, He 2019). Furthermore, apathetic or even passive attitudes among mainstream teachers have highly destructive effects on students with disabilities, such as isolation, psychosocial stress, and a deepened sense of vulnerability caused by their disabilities (Hogan *et al.* 2000, Holzbauer 2004, Tregaskis 2000). For example, due to disabilities, it is difficult for affected students to get equally high academic scores as mainstream students. This further exacerbates teachers' neglect of the potential of students with disabilities. It follows that teachers' attitudes play an essential role in the development of students with disabilities and inclusive education.

Co-ordinator
IQAC
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Sikhar Berkala, Jaunpur

2393-8048, July-December 2020, Submitted in December 2020, iajesm2014@gmail.com

The self-efficacy towards inclusive education is a specific expression of the sense of efficacy in inclusive education. It is a self-perception of achieving expected educational and teaching objectives and finishing inclusive education practical work successfully (Park *et al.* 2016). Bandura argued (1977) that self-efficacy is defined as 'beliefs in one's capabilities to organize and execute the courses of action required to produce given attainments. Base on this idea, some scholars argued that sense of self-efficacy relies on four sources: mastery experiences, vicarious experiences, social persuasion, and somatic and emotional states (Fernandez *et al.* 2016, Morris *et al.* 2017). Generally, collaboration, managing behavior, and inclusive instruction are regarded as the dimensions of self-efficacy towards inclusive education (Savolainen *et al.* 2012). Teachers may present various in different abilities of inclusive education needed. Alnahdi (2020) investigated teachers' self-efficacy to teach in inclusive classrooms in Saudi Arabia, and found teachers' efficacy scored low in abilities such as involving families in school activities, raising awareness regarding laws and policies related to the inclusion of students with disabilities, and dealing with physically aggressive students, while felt better to get children to follow classroom rules, make parents feel comfortable about coming to school, and provide alternate explanations for students.

Teachers' self-efficacy, collective efficacy, and the experiences already acquired in teaching children with special needs intimately interact with attitudes towards inclusion (Urton *et al.* 2014). There would be more positive views of educating children with special needs in regular classroom when teachers got higher self-efficacy (Savolainen *et al.* 2012). High self-efficacy of teachers is related to effective and positive teaching behaviours, which are very important for inclusive education (Schwab *et al.* 2017). Specifically, if teachers obtain a higher sense of efficiency, they would provide less referral behaviors, more positive coping styles to deal with students' problematic behaviors, and diversified instructional approaches for special educational needs (SEN) (Wertheim and Leyser 2002).The predictive functions of self-efficacy towards inclusion between teachers' attitudes towards inclusion were illustrated further by scholars in America, Europe, Africa and Asia (e.g. Savolainen *et al.* 2012, Savolainen *et al.* 2020, Emam and Mohamed 2011, Malinen *et al.* 2012, Thaver and Lim 2014).

Savolainen *et al.* (2020) considered that an abundance of studies have assessed teachers' attitude and self-efficacy beliefs related to inclusive education in the past decades. However, most studies about the above variables have only been carried out in a single relationship between each variable. A deeper relationship among each variable should be emphasized. It is normally an investigation of mediating effects that is pointed out by clinical psychologists and developmental psychologists (MacKinnon and Fairchild 2009, MacKinnon *et al.* 2007). Protheroe (2008) pointed out teacher's efficacy to promote learning can depend on past experiences or school culture and for those with high self-efficacy combined with higher level to cooperate and deal with challenge tasks predicating teachers more positive attitude to inclusion (Weisel and Dror 2006). Therefore the possible mediation role of teachers' perceptions of school climate and the role of teachers' self-efficacy levels could also be further investigated.

Before starting the current study, there were several preliminary studies about the correlation between teachers' efficacy, school climate and teachers' attitude toward inclusion provided circumstantial evidences for the mediating path: school climate toward inclusion → teachers' sense of efficacy toward inclusion → teachers' attitude towards inclusion. Dating from 1998, Sodak *et al.* suggested that collaboration with other teachers mediated the relation of teachers' efficacy beliefs on their feelings of receptivity toward inclusion. Hosford and O'Sullivan (2015) considered that teachers' ratings of the severity and confidence in managing commonly experienced behaviors in inclusive classrooms were influenced by teachers' efficacy and perception of school climate. The investigation of teachers in regular preschools produced by Sun ([illegible]) figured out that school climate not only had a direct effect but also an indirect effect on attitude towards inclusion through teacher self-efficacy (the mediating variable). Wilson *et al.* (2020) found self-efficacy acted mediating role between [illegible]

Principal
Jaunpur

instructional strategies efficacy significantly mediated the relationship between school climate perceptions and reported behaviour.

Society as a whole wish for physically and emotionally healthy individuals for progressing in various socio-economic and educational realms. In developing countries such as Pakistan, 50 percent of the population comprises children and thus the welfare of this population is considerably significant for the well-being and prosperity of society (Hameed and Manzoor, 2019). Behavioral disorders, particularly emotional disorders, are common problems that cause many troubles for children and their families across the globe and particularly in developing countries. It is, therefore, crucial to take some measures to cater children with emotional and behavioral disorders (Anna and Angharad, 2021). There are a multitude of behavioral problems including short attention spans, low self-confidence, lack of social adjustment, along with communication difficulties within the social circle. Most complaints and behavioral instabilities are the outcomes of overlooking the delicate period of childhood and a dearth of precise regulation during the developmental stages (Anuruddhika, 2018). The inception of many behavioral difficulties is during the kindergarten age and they affect the further stages of development. If these children are not catered to, then there is a great possibility of severe behavioral disorders and social maladjustments. One way to handle this undeniable problem is to include them in a regular non-inclusive classroom setup. Inclusive education is the best way to solve this issue as inclusion discourages exclusion (Gupta et al., 2017).

Inclusive education is based on the notion of societal impartiality; where all learners are permitted the same right of access to every learning opportunity, regardless of disability. As Cassady (2011) states, educators all over the world are now raising their voices for disabled children to be integrated into regular non-inclusive classroom settings, but simply raising one's voice does not assure that the policy is accepted by classroom teachers. Research studies have shown that the attitude of teachers is the biggest hurdle to the effective execution of inclusive classroom practices (Carrington et al., 2019). The drive behind this research study is that there is a need to study teachers' attitudes toward inclusive education as the assertiveness of teachers toward the idea of an inclusive classroom can be vital for catering to and accepting diversity. Kazmi et al. (2021) also argue that instructors' self-efficacy is important to enhancing student learning and creating a positive learning environment. Bandura (1977) defined self-efficacy as "one's capabilities to prepare and execute the actions necessary to manage possible conditions." In this regard, the role of self-efficacy is also studied as it can help to promote inclusion.

REFERENCES:

Abbas, F., Zafar, A., and Naz, T. (2016). Footstep towards inclusive education. J. Educ. Pract. 7, 48–52.

Al-khresheh, M., Mohamed, A. M., and Asif, M. (2022). Teachers' perspectives towards online professional development programs during the period of COVID-19 pandemic in the Saudi EFL context. FWU J. Soc. Sci. 16, 1–17. doi: 10.51709/19951272/Summer2022/1

Anna, L., and Angharad, E. B. (2021). The social and human rights models of disability: Towards a complementarity thesis. Int. J. Hum. Rights 25, 348–379. doi: 10.1080/13642987.2020.1783533

Anuruddhika, B. (2018). Teachers' instructional behaviors towards inclusion of children with visual impairment in the teaching learning process. Eur. J. Spec. Educ. Res. 3, 164–182. doi: 10.46827/ejse.v0i0.1648

Avramidis, E., Bayliss, P., and Burden, R. (2000). A survey into mainstream teachers' attitudes towards the inclusion of children with special educational needs in the ordinary schools in one local education authority. Educ. Psychol. 20, 191–211. doi: 10.1080/713663717

Ayub, U., Shahzad, S., and Ali, M. S. (2019). University teachers' attitude towards inclusion, efficacy and intentions to teach in inclusive classrooms in higher education. Glob. Soc. Sci. Rev. IV, 365–372. doi: 10.31703/gssr.2019(IV-I).47

Bandura, A. (1977). Self-efficacy: Toward a unifying theory of behavioral change. Psychol. Rev. 84, 191–215. doi: 10.1037/0033-295X.84.2.191

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

शारदा

2020

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 1 जनवरी–फरवरी 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

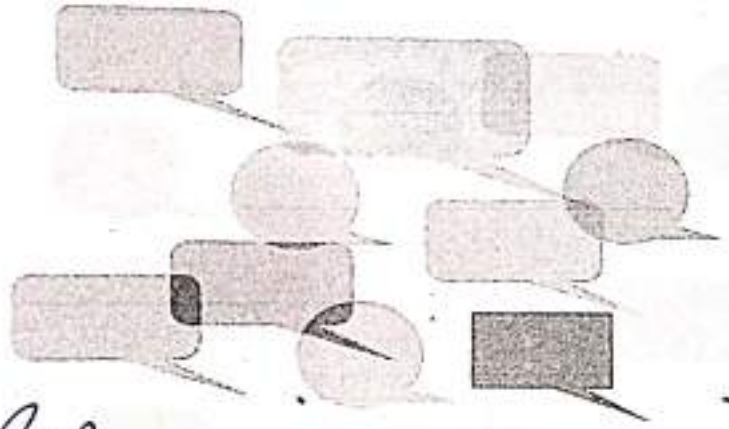

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Th... ...urkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
...alur, Saikhanpur, ...
Jaunpur

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

रीडर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

[Co-ordinator IQAC]
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer [Maha]vidy[alaya]
[Th]alai, [Bh]ikharipur

दृष्टिकोण प्रकाशन

WZ-724, पालम गांव, नई दिल्ली-110045

Scanned with OKEN Scanner

विषय-सूची

...स्तर के ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों के व्यावसायिक संतुष्टता का तुलनात्मक अध्ययन–[illegible]; डॉ० [illegible] कुमार सिंह 555
माध्यमिक स्तर पर क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन–शारदा प्रसाद सिंह; डॉ० [illegible] कुमार सिंह 561
...भारत की जनजातियों में जल, जंगल एवं जमीन की समस्यायें एवं समाधान–[illegible] 565
आधुनिक उपन्यास: स्वरूप और उपादान–डॉ० [illegible] 571
...पुस्तकालय सेवाएं एवं ई-[illegible] अनुप्रयोग: उत्तर प्रदेश के संदर्भ में एक अध्ययन–[illegible] संजय भारती; प्रमिल [illegible] 574
भारतीय पत्रकारिता पर औपनिवेशिक संस्कृति का प्रभाव–[illegible] लाल पाल 578
डॉ० जयप्रकाश कर्दम की कहानियों में नारी जीवन–श्रीमती पंकज यादव 583
वृद्ध कल्याण: चुनौतियां एवं समाधान–डॉ० शैलेन्द्र सिंह 584
दलित जीवन को उजागर करती आत्मकथा झोपड़ी से राजभवन–डॉ० ज्योति गौतम 588
भारत की आर्थिक समीक्षा में मानव विकास का अध्ययन–इन्दु आनंदी 592
मध्यकालीन समाज में स्त्री और मीराबाई–डॉ० दीप कुमार मित्तल 595
अवध में महिला प्राथमिक शिक्षा की स्थिति–गणेश कुमार 599
महिला सम्बंधित अधिनियम एवं उच्च शिक्षा की महिला अध्येताओं की संचेतना–वन्दना शर्मा; प्रो० वन्दना गोस्वामी; डॉ० अजय [illegible] 604
साठोत्तरी हिन्दी कविता की प्रकृति–डॉ० श्रीनिवास सिंह यादव 606
भारत में महिलाओं की स्थिति और विकास का एक अध्ययन–डॉ० अनिल झा 613
आधुनिक भारतीय राजनीति में वंशवाद–दीपक कुमार राय 615
शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन–डॉ० बृजेश कुमार पाण्डेय 619
चन्द्रकिरण सौनरेक्सा के कहानी संग्रह 'आधा कमरा' की समीक्षा: एक दृष्टि–विनोद कुमार सिंह 623
शव ध्यान: योगोपनिषदों के आलोक में–नम्रता चौहान; डॉ० शाम गणपत तिखे 626
पंचकोशीय स्वप्रबन्धन: एक यौगिक दृष्टि–अखिलेश कुमार विश्वकर्मा; डॉ० शाम गणपत तिखे; डॉ० उपेन्द्र बाबू खत्री 631
जैन दर्शन में ध्यान का स्वरूप–धनंजय कुमार जैन; डॉ० उपेन्द्र बाबू खत्री 636
भारत में पर्यावरण और जलवायु से जुड़े खतरे–डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 640
संस्कृत भाषा की उत्पत्ति एवं प्रवृत्ति एवं पाणिनि का योगदान–डॉ० योगिता मकवाना 642
शहरीकरण के प्रभाव और प्रबंधन–रामावतार आर्य 645
सामाजिक मानव मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में आज की हिन्दी कविता–प्रद्योत कुमार सिंह 648
छत्तीसगढ़ में पंचायती राज व्यवस्था-समस्या और समाधान–डॉ० आयाश अहमद 653
पंचायती राज व्यवस्था व महिला नेतृत्व–डॉ० राम नरेश टण्डन 656
झारखण्ड में नक्सलवाद: समस्या एवं समाधान–डॉ० भूपेन्द्र कुमार 659
ग्राम स्वराज एवं ग्रामीण विकास पर महात्मा गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता–डॉ० विजय कुमार साहू 663
आयुर्वेद के अनुसार रजःस्रावकाल में आहार: एक अध्ययन–नेहा सैनी; डॉ० तिखे शाम गणपत 666
मध्यकालीन भारतीय समाज और गोरखनाथ–डॉ० सर्वेश चन्द्र शुक्ल 670
पंचायती राज व्यवस्था एवं महिला सशक्तिकरण की अवधारणा–डॉ० प्रमोद यादव; आशीष नाथ सिंह 672
"छत्तीसगढ़ में प्रशासनिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के संबंधों का एक व्यवहारिक अध्ययन" (राज्य मंत्रालय के विशेष संदर्भ में) –डॉ० (श्रीमती) अलका मेश्राम; डॉ० डी० एन० सूर्यवंशी; दीपा 677
औद्योगिकीकरण का ग्रामीण समुदाय पर प्रभाव–डॉ० जवाहर लाल तिवारी; दिनेश कुमार 681
रायपुर जिले के विकास में नवा रायपुर अटल नगर विकास प्राधिकरण की भूमिका का एक राजनैतिक विश्लेषण –डॉ० (श्रीमती) रीना मजूमदार; डॉ० प्रमोद यादव; फैसल कुरैशी 686
ग्रामीण विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में जिला प्रशासन की भूमिका–डॉ० प्रमोद यादव; कमल नारायण 690
महिला आरक्षण से महिला सशक्तिकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का एक राजनीतिक विश्लेषण (रायपुर जिले के ग्राम पंचायतों के विशेष संदर्भ में)–डॉ० डी० एन० सूर्यवंशी; खेमप्रभा धृतलहरे 694
आर्थिक एवं सामाजिक विकास में आने वाली समस्याओं के कारण एवं निवारण में जिला प्रशासन की भूमिका –डॉ० (श्रीमती) अलका [illegible]; डॉ० डी० एन० सूर्यवंशी; रामकृष्ण साहू 698

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Scanned with OKEN Scanner

मिक स्तर पर क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन

शारदा प्रसाद सिंह

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर

डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह

शोध निर्देशक एवं प्राचार्य, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर

सं

प्रस्तुत अध्ययन में सामान्य रुप से माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा है जिसमें कक्षा 06 से 12 तक की शिक्षा व्यवस्था होती है नयी शिक्षा नीति 2020 ने 198 के 10+2+3 संरचना को अब 5+4+3+3 संरचना दिया है। इसमें पूर्व माध्यमिक से उच्च माध्यमिक तक को 3+3 में रखा गया है। इस प्रकार हमा व्यवस्था बालवाड़ी, पूर्वप्राथमिक, प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक व्यवस्था में बँट जाती है जिसका उद्देश्य है कि बच्चा अप काल, बाल्यकाल, पूर्व किशोरावस्था तथा किशोरावस्था तक अपनी मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषा तथा एक अन्य किसी भाषा में पारंगत हो जाय और उनक खुल जाये। माध्यमिक शिक्षा किशोरावस्था से जुड़ती है और शिक्षा व्यवस्था की मेरुरज्जू होती है।इन तीनों बोर्डों की भूमिका छात्रों के सर्वांगी ने महत्वपूर्ण है। हम जानते है कि सी0 बी0 एस0 सी0 व आई0 सी0 एस0 ई0 दो मुख्य बोर्ड प्रणाली हैं जो भारत में करोड़ों छात्रों को एक गुणात्मक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इन विषय में अभिभावकों के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। कुछ शिक्षकों, अभिभावकों व छात्रों के अनुसा एस0 सी0 उत्तम बोर्ड है व कुछ के अनुसार आई0 सी0 एस0 ई0 बोर्ड । इस विषय में अभिभावक के मन में अनेक प्रश्न हैं। कुछ के अनुसा का बोर्ड उत्तम है। अतः इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये शोधकर्त्ता चाहता है कि दोनों बोर्डों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिये में परिवर्तन एक सतत् प्रक्रिया है अतः सी0 बी0 एस0 सी0 व आई0 सी0 एस0 ई0 बोर्ड के द्वारा प्रत्येक वर्ष कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य कि है यह परिवर्तन किताबों से, कोर्स से तथा पाठ्यक्रम से सम्बन्धित होते है शिक्षण प्रक्रिया तीन ध्रुवी है इसके तीनों ध्रुव 1. शिक्षक 2. विद्यार्थी 3 है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक एक महत्वपूर्ण तत्व है उसके बिना कोई शिक्षण नहीं हो सकता। पर्याप्त ज्ञान नही प्रदान किया जा सकत विद्यार्थियों का उचित विकास करना सम्भव नहीं है। इस सन्दर्भ में ही पुरातन काल में भारतीय चिंतको ने शिक्षक को अत्यन्त आदर का स्थान दिया

मुख्य शब्द:- शिक्षण अभिक्षमता, स्वनिर्मित मापनी, अभिवृद्धि मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, व मूल्य इत्यादि।

प्रस्तावना- सन् 1947 ई0 में जब भारत स्वतंत्र हुआ तो शिक्षा के इस महत्वपूर्ण स्तर के लिये उद्देश्यों का पुर्ननिर्धारण करने की आवश्यकता हुयी क्योंकि भारत में नये समाज का निर्माण करना था तथा नई परिस्थितियों के अनुकूल बालकों का विकास करना था। माध्यमिक शिक्षा के सुधार हेतु आवश्यक व देने के लिये माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग) का गठन हुआ आयोग ने अपने प्रतिवेदन में माध्यमिक शिक्षा के लिये बड़े स्पष्ट तथ पूर्ण उद्देश्य निर्धारित किये। आयोग ने निम्नांकित उद्देश्यों का निर्धारण किया।भारत विश्व का सबसे बड़ा जनतांत्रिक देश है और जनतांत्रिक शासन प्रणाली ही कोमल होती है इसके असफल होने की अनेक सम्भावनायें रहती है। जनतंत्रात्मक शासन व्यवस्था की सफलता सफल नागरिको पर निर्भर करती जनतंत्र देश के लिये सत्यवादी स्वतंत्र तथा निष्पक्ष विचार वाले अनुशासित सहयोगी तथा उदार राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत नागरिकों की आवश्यकता पड़ती इन सभी बातों को ध्यान में रखकर आयोग में सिफारिश की कि माध्यमिक शिक्षा के छात्रों में इस प्रकार के आवश्यक गुणों का विकास करना चाहिये। क के महत्व पर बल देते हुये भगवान दास कहते है शिक्षा बीज और जड़ है, सभ्यता फूल और फल है। यदि कृषक विवकेपूर्ण है और अच्छे बीज बोता तो समुदाय उत्तम दाने प्राप्त करता है और सम्पन्न होता है। यदि ऐसा नहीं, यदि वह झाड़ झंकार बोता है तो जहरीले बेर मिलते है और बिमारी व मृत्यु की होती है। हमारे कृषक शिक्षक हैं।आयोग की दृष्टि में यह माध्यमिक शिक्षा का ही कार्य है कि बालकों में उचित तथा आदर्श नेतृत्व का विकास । माध्यमिक शिक्षा को ऐसे नागरिक उत्पन्न करना है जो जनसाधारण का नेतृत्व जनतांत्रिक विधि से कर सके, उन्हें उचित मार्ग प्रदर्शित कर सके, जो हर में स्वयं बुद्धि तथा विवके से कार्य करें और जनसाधारण में सहयोग, सहकारिता तथा सामुदायिकता की भावना का विकास कर सकें। इन गुणों के विकास लिये आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार के क्रियात्मक विषय तथा अन्य ऐसे विषयों का समावेश करने का परामर्श दिया जो लकों में उपर्युक्त सभी गुणों का विकास कर सकें।जबकि जॉन डी0वी0 के अनुसार "शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं बल्कि यह जीवन है। शिक्षा

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thali, Bhikaripurkala, Jaunpur

Scanned with OKEN Scanner

अनुभवों के सतत् पुर्ननिर्माण के माध्यम से जीने की प्रक्रिया है।'' यह व्यक्तियों में उन सभी क्षमताओं का विकास करता है जो उनको अपने वातावरण पर नियंत्रण एवं सम्भावनाओं की पूर्ति हेतु सक्षम बनाता है। जैन दर्शन कहता है कि शिक्षा वह है जो मोक्ष प्राप्ति कराती है। बौद्ध दर्शन कहता है कि शिक्षा वह है जो निर्वाण दिलाती है। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि मनुष्य की आत्मा में ज्ञान एक अक्षय भंडार है उसका उद्घाटन करना ही शिक्षा है। टैगोर कहते हैं कि उच्चतम शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचना ही नहीं देती वरन् हमारे जीवन के समस्त पहलुओं को सम तथा सुडौल बनाती है। ... कहते हैं कि शिक्षा वह वस्तु या प्रक्रिया है जो मनुष्य को आत्मनिर्भर व निस्वार्थी बनाती है। रूसो कहता है कि शिक्षा बच्चे तथा मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा का सर्वोत्तम सर्वांगीण विकास है। फ्रोबेल कहता है शिक्षा एक प्रक्रिया है जो बालक के अन्तःशक्तियों को प्रकट करती है। महात्मा गांधी कहते हैं कि शिक्षा का अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों को सर्वांगीण प्रकटीकरण से है। टी॰पी॰ नन कहते हैं शिक्षा बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास है जिसके द्वारा वह यथा शक्ति मानव जीवन को मौलिक योगदान कर सकता है। पेस्टालाजी कहते हैं शिक्षा मनुष्य की आंतरिक शक्तियों स्वाभाविक सर्वांगपूर्ण तथा प्रगतिशील विकास है। अरस्तू कहते हैं कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निर्माण करती है शिक्षा है। हरबर्ट कहते हैं कि अच्छे नैतिक चरित्र का विकास ही शिक्षा है। ड्रो कहते है कि शिक्षा नियंत्रित वातावरण में मानव विकास की प्रक्रिया है। यूनिवर्सल डिक्शनरी ऑफ इंग्लिस लैंग्वेज में शिक्षा का अर्थ दिया गया है कि' पालन, प्रशिक्षण देना विनय विकास मस्तिष्क का प्रशिक्षण चरित्र तथा शक्तियों ही शिक्षा है। ... अर्थ में छोटे बच्चों को प्रचलित निर्देश देना ही शिक्षा है। किसी राज्य में प्रचलित निर्देश प्रणाली शिक्षा कहलाती है।

अध्ययन का औचित्य:- समाज का शिक्षा पर प्रभाव और शिक्षा का समाज पर प्रभाव नकारात्मक नहीं जा सकता है क्योंकि समाज शिक्षा को ... करता है समाज के स्वरुप का प्रभाव शिक्षा की प्रकृति पर पड़ता है जैसा समाज का स्वरुप होगा वह शिक्षा को वैसे ही व्यवस्थित करता है। यदि लोकतांत्रिक देश है तो शिक्षा की प्रकृति उद्देश्य उसके संगठन एवं वातावरण में लोकतांत्रिक आदर्श प्रकृति होती है। तानाशाही हो समाज की शिक्षा में अनु... व आज्ञाकारिता आदि पर बल दिया जाता है। समाजवादी देश की शिक्षा में समाजवादी तत्व व स्वरुप दिखायी देते हैं।

समाज की स्थिति व स्वरुप जैसे-जैसे बदलता जाता है वैसे-वैसे शिक्षा का रुप भी बदलता जाता है। भारत में आदि काल से धार्मिक शिक्षा दी ... थी इसके पश्चात् समय के साथ आधुनिक युग आया और देश ने राजतन्त्र से प्रजातन्त्र में प्रवेश किया और शिक्षा में लोकतांत्रिक आदर्श एवं मूल्यों को ... किया गया सामाजिक असमानता, कुरीतियों एवं आर्थिक असमानता को दूर वर्ग विभेद के लिये शिक्षा व्यवस्था से सबके लिये शिक्षा को मुख्य ... गया और सभी को शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त कराया गया।

किसी भी समाज की राजनैतिक दशा का शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि राजनीति को मजबूत आधार शिक्षा प्रदान करती है। अंग्रेज जब भारत ... तो उन्होंने अपने शासन को मजबूत देने के लिये शिक्षा व्यवस्था को अपने अनुसार ढालने का प्रयत्न किये जिसके लिये निस्यंदन का सिद्धान्त का अ... करके आवश्यकतानुसार शिक्षा देने का प्रयास किये कम्पनी के संचालकों का विश्वास था कि प्रगति उस समय हो सकती है, जब उच्च वर्ग के ... को शिक्षा दी जाये जिसके पास अवकाश है। वैदिक युग में राजतंत्र था तो शिक्षा वर्ग विशेष के लिये थी, परन्तु प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में सभी वर्ग, लिंग, जाति, धर्म, रंग के लोगों को समान शिक्षा का अवसर दिया गया है। जिस समाज की आम तौर दशा अच्छी होती है वहाँ की शिक्षा व्यवस्था पर उसका प्रभाव पड़ता है। शिक्षा का प्रसार इसलिये अमीर देशों जैसे विकसित देशों में जल्दी हुआ। भारत जैसे देशों में आज भी शिक्षा के लिये जो ... चाहिये नहीं हो पा रहे हैं। आर्थिक रुप से सम्पन्न समाज अच्छे विद्यालय खोलने में सक्षम होता है जिसके फलस्वरुप व्यवसायिक, प्राविधिक, ... वैज्ञानिक आदि पक्षों का अधिक से अधिक विकास हेतु संसाधन उपलब्ध रहता है। आर्थिक रुप से विपन्न देशों में समाज की शिक्षा भी विपन्नता ... किये रहती है।

साहित्यावलोकन:- सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण से अपने अध्ययन हेतु जाँच-पड़ताल होती है इसके अन्तर्गत हम इस बात का अध्ययन करते हैं कि ... द्वारा चुने गये क्षेत्र में कितना काम हो चुका है एवं किस प्रकार का काम हुआ है, अभी शोध का नया ट्रेंड क्या है आदि का। किसी भी प्रकार के ... साहित्य पुनरावलोकन से इसके ज्ञान के क्षेत्र में अन्तराल का पता लगता है और परिभाषित क्षेत्र का भी पता लगता है। साहित्य पुनरावलोकन से हमें ... की स्थिति का पता चलता है और अपने अध्ययन की सीमा निर्धारित करते हैं। कम से कम पीछे 10 वर्षों के अध्ययन को पुस्तकों, शोध प्रबन्धों, पत्र-पत्रिकाओं का ऑफलाइन तथा आनलाइन अवलोकन करते हैं।

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से तात्पर्य उस अध्ययन से है जो शोध समस्या के चयन के पहले अथवा बाद में उस समस्या पर पूर्व में किये गये कार्यों, विचारों, सिद्धान्तों, कार्यविधियों, तकनीकी, शोध के दौरान होने वाली समस्यायों आदि के बारे में जानने के लिये किया जाता है। सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण दो प्रकार से किया गया है। समस्या चयन से पहले को प्रारम्भिक तथा शोध प्रक्रिया में आंकड़ा संकलन से पहले व्यापक सर्वेक्षण किया गया था।

संदेही इब्राहिम (1970): ''पिछले 50 वर्षों से शिक्षक की शिक्षण दक्षता पर अध्ययन हो रहे है जिसमें उसके व्यक्तित्व, विशेषतायें, शिक्षण ... शिष्य विकास, कक्षा अर्न्तक्रिया, नेतृत्व क्षमता, शाब्दिक व्यवहार, शारीरिक भाषा, हावभाव इत्यादि यह प्रकाश डाला गया। विषय और समावेशन पर ... जोर दिया गया शिक्षण प्रभावशीलता पर अध्ययन हुये सभी सकारात्मक दिशा में थे।''

कोलिन्सन (1999): ''यह एक मेटारिसर्च है जो पीछे 100 वर्षों के अध्ययनों में शिक्षक की परिभाषा का अवलोकन हुआ जिससे यह पाया गया ... गुणवत्ता का हास होता है जब योग्यता में एक क्रम से विकास तकनीकि हुआ और शिक्षक तकनीकि योग्यता को बढ़ा दी जाय और रिफॉर्म ... व्यवस्था की जानी चाहिये जिससे शिक्षक की नयी परिभाषा बने।

डार्लिंग हैमेंड एल0 (2000): ''यह अध्ययन शिक्षक की गुणवत्ता से जुड़ा हुआ है और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। शिक्षक को ... के साथ जवाबदेह बनता है तो उसकी प्रतिबद्धता बनी रहती है जिससे शिक्षक की गुणवत्ता छात्र उपलब्धि को प्रभावित करती है क्योंकि सीखने व ... की विधियों को तलाश कर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाता है।

Co-ordinator
IQAC
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bakharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bakharipur, Kal.
Jaunpur

Scanned with OKEN Scanner

[illegible] गुलशन (2001): ''प्रतिस्पर्धी वैश्वीकृत युग में उच्च शिक्षा संस्थानों को सही प्रदर्शन और विकास सुनिश्चित करने के लिए [illegible] केंद्रित करने की आवश्यकता है एक सही योग्यता विकास के लिये जोड़ दे सकती है और इस प्रतिस्पर्धी युग में [illegible] सकती है शिक्षण समुदाय को न केवल उत्पादक के कारक के रूप में माना जाता है बल्कि एक [illegible] महत्वपूर्ण है सही योग्यता समूह और उच्च शिक्षण संस्थानों के लिये प्रतिस्पर्धात्मक लाभ पैदा करने का स्रोत है [illegible] सही योग्यता के विकास और मूल्यांकन के लिये सही नीतियों और रणनीतियों की पहचान और विकास पर [illegible] और अनुसरण की जाने वाली नीति पर निर्भर करता है। एक [illegible] उपकरण के रूप में [illegible] वातावरण, प्रेरक तरीके आदि। इस लेख का उद्देश्य सरकारी सहायता प्राप्त व स्ववित्तपोषित संस्थानों में [illegible] शिक्षण योग्यता के घटकों को उजागर करना है। इस उद्देश्य के लिये राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र भारत में सरकारी सहायता प्राप्त और स्ववित्तपोषित [illegible] कालेजों में पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच अलग अलग [illegible] सर्वेक्षण किया गया था। [illegible] महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष शिक्षकों में औसत योग्यता रेटिंग अधिक है। सरकारी सहायता प्राप्त कालेजों में पुरुष शिक्षक स्ववित्तपोषितों की तुलना में अधिक है। पुरुष व महिला शिक्षक भी अलग अलग है।''

अध्ययन का उद्देश्यः- प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा अध्ययन के उद्देश्य निर्धारित किया गया था कि, ''माध्यमिक स्तर पर क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता तुलनात्मक अध्ययन करना।''

शोध अध्ययन की परिकल्पनाः- उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना निर्मित की गई थी कि ''माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।''

शोध विधिः- प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का अध्ययन है। जिसमें वर्तमान से सम्बन्धित घटनाओं का विश्लेषणात्मक विवरण होता है [illegible] सर्वेक्षण विधि के द्वारा आंकड़ों का संकलन करते हुए निरीक्षण किया जाता है। जिसमें आंकड़ों की सहायता से वर्तमान घटनाओं पर प्रकाश डाला जाता है।

समष्टिः- किसी अध्ययन की यह सम्पूर्ण ईकाई समष्टि कहलाती है। जिस पर शोध कार्य आधारित होता है। प्रस्तुत अध्ययन जनपद जौनपुर के [illegible] माध्यमिक स्तर पर अध्यापन करने वाले शिक्षक ही समष्टि के रुप में परिभाषित किये गये थे।

न्यायदर्शः- शोधकर्ता द्वारा समय धन के अभाव के कारण आगमनात्मक प्रविधि अपनाते हुए समष्टि से एक छोटा समूह अध्ययन हेतु चयनित किया [illegible] है। जिसे न्यायदर्श कहते है। न्यायदर्श पूरी समष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत अध्ययन में जौनपुर जनपद के यादृच्छिक न्यायदर्श प्रविधि द्वारा कुल [illegible] अध्यापकों का चयन किया गया था जिनके वितरण का आधार क्षेत्र, लिंग, विषय तथा वित्तपोषण था।

तालिकाः न्यायदर्श में चयनित माध्यमिक विद्यालय का वितरण

क्र0सं0	माध्यमिक विद्यालय	पुरुष अध्यापक	महिला अध्यापक	कुल
1.	राजा हरपाल सिंह इण्टर कालेज सिंगरामऊ, जौनपुर	36	04	40
2.	संग्राम बालिका इण्टर कालेज बदलापुर, जौनपुर	--	38	38
3.	श्री गणेश राय इण्टर कालेज डोभी, जौनपुर	38	03	41
4.	पब्लिक कन्या इण्टर कालेज केराकत, जौनपुर	--	24	24
5.	तिलकधारी इण्टर कालेज, जौनपुर	40	03	43
6.	मुक्तेश्वर बालिका इण्टर कालेज, जौनपुर	--	36	36
7.	तिलकधारी बालिका इण्टर कालेज, जौनपुर	--	18	18
8.	हरिहर सिंह पब्लिक इण्टर कालेज, जौनपुर	12	13	25
9.	नेहरु बालोद्यान इण्टर कालेज, जौनपुर	10	14	24
10.	गोबर्द्धन इण्टर कालेज, मुफ्तीगंज, जौनपुर	15	---	15
1.	सिरसी इण्टर कालेज, बरईपार, जौनपुर	18	04	22
2.	जनार्दन इण्टर कालेज, खपड़हा, जौनपुर	15	02	17
3.	राजा श्री कृष्णदत्त इण्टर कालेज, जौनपुर	15	08	23
4.	मो0 हसन इण्टर कालेज, जौनपुर	10	12	22
5.	सल्तनत बहादुर इण्टर कालेज, बदलापुर, जौनपुर	12	00	12
		221	179	400

ग

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के सकलन हेतु दो शोध उपकरण मानकीकृत किये गये थे।

शोध उपकरणः- प्रस्तुत अध्ययन में [illegible] शिक्षण अभिक्षमता मापनी का निर्माण शोधकर्ता ने स्वयं किया है जिसके लिये [illegible] कथन बनाये [illegible]

शिक्षण अभिक्षमता मापनीः- [illegible] पर [illegible] है। मानकीकरण हेतु 370 लोगों पर प्रशासित करके उन पर [illegible] के [illegible] लोगों के [illegible] पूर्ण सहमत, अनिश्चित तथा अ[सहमत] [illegible]

IQAC

Raghuveer [illegible]

Scanned with OKEN Scanner

प्रत्येक कथन का टी विश्लेषण किया जो .05 स्तर पर सार्थक [illegible] किया गया इसमें कुल 50 कथन [illegible] की विश्वसनीयता [illegible] से 0.84 प्राप्त हुआ और [illegible] शिक्षण अभिक्षमता [illegible] के रूप में [illegible] (4, 3, 2, 1, 0) [illegible] के लिये (0, 1, 2, 3, 4) तथा धनात्मक कथन (1, 4, 5, 7, 9, 12, 13, 14, 15, 20, 22, 25, 28, 30, 31, 32, 33, [illegible] 50 - 25) तथा ऋणात्मक कथन (2, 3, 6, 8, 10, 11, 16, 17, 18, 19, 21, 23, 24, 26, 27, 29, 34, 35, 36, 37, [illegible] 48 - 25) हैं। न्यूनतम अंक 0 और अधिकतम अंक 100 आ सकता है।

उद्देश्य से सम्बन्धित विश्लेषण तथा व्याख्या: शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य निर्धारित किया गया था कि "माध्यमिक स्तर पर [illegible] शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता तुलनात्मक अध्ययन करना।" इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना बनायी गयी थी कि "माध्यमिक स्तर पर [illegible] महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।" इस शून्य परिकल्पना के परीक्षण हेतु निम्नलिखित विश्लेषण [illegible]

तालिका: पुरुष तथा महिला शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता सम्बन्धी सीआरमान एवं विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	सी०आर०मूल्य
पुरुष शिक्षक	257	68.75	15.24	1.83	3.63
महिला शिक्षक	143	62.13	19.36		

df (398) at .01 =k 2.60

उपरोक्त विश्लेषण तालिका से स्पष्ट है कि शिक्षण अभिक्षमता पर पुरुष शिक्षकों के मध्यमान 68.75 तथा मानक विचलन 15.24 [illegible] के मध्यमान 62.13 तथा मानक विचलन 19.36 है। मानक विचलनों की सहायता से अभीष्ट मानक त्रुटि 1.83 प्राप्त हुयी। [illegible] 3.63 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्र संख्या 398 के सार्थकता स्तर .01 पर सारणी मान 2.60 से अधिक है जिसके आधार पर बनायी शून्य परिकल्पना "[illegible] स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।" निरस्त की जाती है। जिससे स्पष्ट होता है कि पुरुष शिक्षक [illegible] अभिक्षमता महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक होती है। इस परिणाम की समर्थन शर्मा (2016) का अध्ययन करता है।

प्रस्तुत परिणाम के सम्भवतः कारण है कि पुरुष शिक्षक बहिर्मुखी स्वभाव के होते हैं और समाज में विचरते रहते हैं इन्हें किसी [illegible] अच्छे से आता है।

शोध निष्कर्ष- विश्लेषणोपरान्त प्रस्तुत अध्ययन का शोध निष्कर्ष प्राप्त किया गया। पुरुष शिक्षकों में शिक्षण अभिक्षमता महिला शिक्षकों की [illegible] होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामशकल पाण्डेय- 'शिक्षा का इतिहास' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
2. एस० पी० गुप्ता- 'भारतीय शिक्षा का ताना-बाना' शारदा पुस्तक प्रकाशन इलाहाबाद।
3. एस० पी० गुप्ता- 'भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्यायें' शारदा पुस्तक प्रकाशन इलाहाबाद।
4. के० एन० पाण्डेय- 'शिक्षा पर विभिन्नवाद' शोधपत्र कान्फ्रेंस राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर।
5. बिंघम (1937): 'शिक्षण अभिक्षमता' उद्धृत एस०पी० गुप्ता (2005) आधुनिक मापन तथा मूल्यांकन, पेज 145-147 शारदा पुस्तक प्रकाशन [illegible]
6. जी० सी० भट्टाचार्य: "अध्यापक शिक्षा" वाराणसी, वसुन्धरा प्रकाशन, 2008 पृ० सं०-47।
7. सदेही इब्राहिम (1970): "टीचर इफेक्टिवनेस आर क्लासरूम इफीसियेंसी ए न्यू डायरेक्शन इन द इवैल्युएशन ऑफ टीचिंग" जर्नल ऑफ [illegible] जर्नल्स।
8. कोलिन्सन (1999): "शिक्षक परिभाषा की पुनर्परिभाषा" अभ्यास के सिद्धान्त 38 (1), 4-11।
9. डार्लिंग हैमंड एल० (2000): "शिक्षक की गुणवत्ता और छात्र उपलब्धि" शिक्षा नीति विश्लेषण अभिलेखागार 8।
10. मिल, यू०पी० (2001): "एस० सी० आर० में सरकारी सहायता प्राप्त व स्ववित्तपोषी कालेजों के बीच शिक्षण योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन" [illegible] एम्०एड० ICTAL।
11. टेमियोन एल० (2002): "शिक्षकों के निर्देश पर व्यावसायिक विकास के प्रभाव" शिक्षा मूल्यांकन और नीति विश्लेषण 24 (2), 1-112।
12. थामस, डी० (2006): "शिक्षक कार्यबल व छात्र उपलब्धि में सम्बन्ध" शिक्षा वित्त व नीति 1 (2), 176-216।
13. कलाट फेंसर (2006): "शिक्षक छात्र मिलन" जर्नल ऑफ ह्यूमनरिसोर्स 41 (4) 778-820।
14. सीटेल टॉम (2007): पिछले दशक में शिक्षण प्रभावशीलता अनुसंधान मेटा विश्लेषण परिणामों को [illegible] जर्नल http://doi.org/10-3102/003465407310317A

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

Scanned with OKEN Scanner

शारदा

2021

ISSN 0975-110X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 2 मार्च-अप्रैल 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं साहित्य की मासिक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

प्रो. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

Coordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thelai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Bhikharipur

विज्ञान और प्रौद्योगिकी–डॉ० हिमांशु शेखर 4332
अध्ययनरत् विद्यार्थियों में मानवाधिकार की शिक्षा और जागरूकता का अध्ययन–डॉ० संतोष कुमार 4337
वाले कन्या पर साहित्य की समीक्षा–डॉ० रचना राठौर; श्रीमती अंजू चौबे 4347
में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम पर स्मृतियों के प्रभाव की प्रासंगिकता–डॉ० आनन्द चन्द्र त्रिपाठी 4353
में ग्रामीण दलित विमर्श–अनिता 4357
कहानियों में दलित विमर्श–रेनु 4360
रचित यजुर्वेद भाष्य में पितृयज्ञ का स्वरूप–राहुल 4363
विकास में व्याकरण की भूमिका–आदर्श प्रकाश राय 4366
शिक्षा एवं आवश्यकता–पंकज गुप्ता; डॉ० कुमार राजीव रंजन 4370
महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण: विशेषकर बिहार के संदर्भ में–राहुल कुमार 4373
के प्रति बदलते दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन (कोल्हापुर जिले के विशेष संदर्भ में)
–डॉ० अमरनाथ शर्मा; डॉ० सुषमा शर्मा; हरीश कुमार चन्द्राकर 4376
-कश्मीर में अनुच्छेद 370 की समाप्ति एवं उसके पश्चात संवैधानिक स्थिति–डॉ० भगत सिंह 4380
साहित्य की समझ–डॉ० अरुण कुमार पाण्डेय 4386
वादी काव्य में मार्क्सवादी सामाजिक चेतना का भाव बोध–डॉ० चन्दना 4392
के आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग की भूमिका - एक भौगोलिक विश्लेषण–डॉ० आभा शुक्ला 4397
ऐतिहासिक धरोहर: कटारमल सूर्य मन्दिर–रेखा कुमारी 4404
के भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र में वायु प्रदूषण का भौगोलिक अध्ययन–पवन बैरवा; डॉ० अनिता माथुर 4408
कहानी में नारीचेतना–परेश जानकीबेन गगाराम 4413
का व्यापार एवं वाणिज्य: एक ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० [illegible] सिंह; अलका कुमारी 4415
भारतीय ज्ञान की अनुसंधान पद्धति–रेखा 4419
की रचनाओं में सामाजिक चेतना–छाया साव; डॉ० रेशमा अंसारी 4423
हिंदी साहित्य में नारी विमर्श–डॉ० रिना डोगरा 4425
जौनपुर जिले में जल संसाधन एवं उनकी समस्याएँ–डॉ० हरेंद्र यादव 4428
माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी परिवेश के विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि का अध्ययन–प्रज्वलित कुमार यादव 4433
वादी नारीवाद: वर्ण, लिंग तथा विभाजन–डॉ० [illegible]; डॉ० कल्पना; डॉ० दीपा त्यागी 4440
विभिन्नता के संदर्भ में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन–डॉ० मुकेश कुमार सिंह; सुमन सिंह 4443
विमर्श : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में–माहेश्वरी; डॉ० चन्द्र कुमार जैन 4448
में गरीबी एक समस्या: और उसकी चुनौतियाँ–राकेश कुमार 4450
महिला श्रमिकों की समस्याओं का क्षेत्रीय अध्ययन ([illegible] जिले के विशेष संदर्भ में)–डॉ० पूनम शर्मा; डॉ० आशीष शर्मा 4455
की उत्पत्ति एवं विकास की प्रासंगिकता: एक अध्ययन–डॉ० कुमार आदित्य 4458
में लैंगिक समानता: एक अध्ययन–डॉ० सुरेन्द्र कुमार 4461
जौनपुर जिले के माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना–दीपक कुमार चौहान 4467
माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन–डॉ० शारदा प्रसाद सिंह 4472
मिर्जापुर जनपद में ग्रामीण विकास का वर्तमान दशा–डॉ० [illegible] 4476
ऑनलाइन शिक्षा का प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन
–डॉ० नीलम सिंह परिहार; डॉ० श्याम सिंह गौर 4481
शिक्षक प्रशिक्षकों की पेशेवर प्रतिबद्धता–[illegible] तिवारी; जय श्री शुक्ला 4485
कोविड-19 का वैश्विक राजनीति पर प्रभाव–प्रहलाद कुमार मीना 4489

4273 4277 4280 4283 4286 4290 4296 4299 4305
नीचर शिक्षा 4307
4311 4313 4316 4324 4328

मार्च-अप्रैल, 2021

Coordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kerakat, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kat.
Jaunpur

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन

डॉ० शारदा प्रशान्त सिंह

विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग, रघुवीर महाविद्यालय थलोई भिखारीपुर कला जौनपुर उ०प्र०

सारांश- प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक तभी होगा जब माध्यमिक शिक्षा में शिक्षणरत् शिक्षक अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति पूर्ण प्रतिबद्ध होंगे और तभी हमारी नयी शिक्षा नीति 2020भी सार्थक होगी। इसके लिये हमें दृढ़ निश्चय लेना कि हमारी शोधपरम्परायें, वैदिक संकल्पना तथा वैदिक शिक्षा हमें एक सरल व्यक्ति बनाती थी न कि सफल दुर्भाग्य से पश्चिमीकरण का आधुनिकता को गलत ढंग से परिभाषित किया गया जिससे व्यक्ति आज संकट बनकर रह गया है। हमारी अविनीता आयोग व शिक्षा नीतियां समय-समय पर भारतीय मूल्यों को पोषित करने वाले बिन्दुओं पर चर्चा किया है परन्तु 100 प्रतिशत जमीन पर नहीं आयी उसके पीछे पश्चिमीकरण की आंधी तथा बेरोजगारी भागदौड़ ने वर्तमान में आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती तथा बलात्कार जैसी घटनाओं में वृद्धि हो आई उसी से बचने व रोकने के लिये हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी ने एक शिक्षा व्यक्ति की ओर एक दृढ़ संकल्प लेते हुये डॉ० कस्तूरी रंजन की अध्यक्षता में नयी शिक्षा नीति 2020 को पास किया और लक्ष्य रखा कि बचपन मातृभाषा व मानमूल्यों के आधार पर संस्कारित किया जाय अपने बौद्धिक तथा बौद्ध परम्पराओं को पोषित करें जिसके साथ अपने पुराने कौशल बढ़ईगिरी, लोहारगिरी इत्यादि को आगे बढ़ाये साथ ही आधुनिकता की तरफ कम्प्यूटर तथा तकनीकि आर्टिफिशियल का ज्ञान दिया जाय। वैश्विकता को ध्यान में रखते हुये भारत के बच्चों को विश्व के शीर्ष तक पहुँचाना ही हमारी दृढ़ शक्ति वाली शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य है। प्रस्तुत अध्ययन शिक्षार्थि, विद्यार्थियों तथा व्यावसायिकों के लिये मील पत्थर साबित होगा और हमारे युवा शिक्षकों के लिये प्रेरणा स्रोत तथा पथ प्रदर्शित करता रहेगा ऐसा शोधकर्ता को विश्वास है।

मुख्यशब्द-माध्यमिक विद्यालय, शिक्षण अभिक्षमता, मध्यमान, मानक विचलन, सी०आर० परीक्षण इत्यादि।

प्रस्तावना-शिक्षा किसी भी व्यक्ति व समाज के लिये विकास की धुरी है और यह किसी भी राष्ट्र की प्राणवायु है। बिना इसके सभी बातें अधूरी साबित होती हैं। शिक्षा का सम्बन्ध सिर्फ साक्षरता से ही नहीं है बल्कि चेतना और उत्तरदायित्वों की भावना को जागृति करने वाला औजार भी है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके द्वारा हासिल किये गये शैक्षिक स्तर पर निर्भर करती है। शिक्षा के माध्यम से ही भारत के गांवों को सामाजिक परिवर्तन और ग्रामविकास की विभिन्न योजनाओं से जोड़ा जा सकता है। शिक्षा और मूल्य का गहरा सम्बन्ध है। मूल्यहीन शिक्षा वास्तव में शिक्षा ही नहीं है। मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर बच्चों में अच्छे संस्कार भरे जाते हैं उनकी सुप्त चेतना को जगाया जा सकता है जिससे कि वे अपने विकास के साथ-साथ अपने समाज और देश के विकास में योगदान कर सकते हैं। शिक्षा का महत्व तभी है जब उन्हें आत्मसात् करने के लिये उच्च शिक्षण अभिक्षमता वाले शिक्षक उपलब्ध हों क्योंकि शिक्षा प्रदान करने के वे ही जिम्मेदार हैं। शिक्षक समस्या समाधान कौशल, महत्वपूर्ण सोच के तरीकों और आवश्यक विषयों की बुनियादी अवधारणाओं को पढ़ाकर भविष्य के लिये छात्रों को तैयार करते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व-

समाज का शिक्षा पर प्रभाव और शिक्षा का समाज पर प्रभाव नकारात्मक नहीं जा सकता है क्योंकि समाज शिक्षा की व्यवस्था करता है समाज के स्वरूप का प्रभाव शिक्षा की प्रकृति पर पड़ता है जैसा समाज का स्वरूप होगा वह शिक्षा को वैसे ही व्यवस्थित करता है। भारत एक लोकतांत्रिक देश है तो शिक्षा की प्रकृति उद्देश्य उसके संगठन एवं वातावरण में लोकतांत्रिक आदर्श प्रकृति होती है। तानाशाही हो समाज की शिक्षा में अनुशासन व आज्ञाकारिता आदि पर बल दिया जाता है। समाजवादी देश की शिक्षा में समाजवादी तत्व व स्वरूप दिखायी देते हैं।

समाज की स्थिति व स्वरूप जैसे-जैसे बदलता जाता है वैसे-वैसे शिक्षा का रूप भी बदलता जाता है। भारत में आदि काल से धार्मिक शिक्षा दी जाती थी इसके पश्चात् समय के साथ आधुनिक युग आया और देश ने राजतन्त्र से प्रजातन्त्र में प्रवेश किया और शिक्षा में लोकतांत्रिक आदर्श एवं मूल्यों को समावेश किया गया सामाजिक असमानता, कुरीतियों एवं आर्थिक असमानता को दूर वर्ग विशेष के लिये शिक्षा व्यवस्था से सबके लिये शिक्षा को मुख्य लक्ष्य माना गया और सभी को शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त कराया गया।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन-

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध-प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Jaunpur

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रकरण का चयन करने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली-भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यावहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रकरण की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधिक साहित्य की समीक्षा करनी होती है, यहाँ साहित्य समीक्षा का अर्थ दिया गया है।

साहिलअहमद खान व खान फरहतुमनिशा[1] (2016):

''यह अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का रामपुर जिले के 440 अध्यापकों पर सर्वे किया गया जिसमें 240 पुरुष व 200 महिला शिक्षक थी माध्यमिक के 240 में 130 पुरुष तथा 110 महिला थी जबकि उच्च माध्यमिक के 200 में 110 पुरुष व 90 महिला थी। शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता की माप जे0 पी0 और आर0पी0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित उपकरण से की गयी तथा समायोजन की माप एस0 के0 मंगल के उपकरण से हुयी। परिणाम व्यक्त करते हैं कि उच्च माध्यमिक के लिये सहसम्बन्ध बहुत कम था जबकि माध्यमिक स्तर पर शिक्षण अभिक्षमता व समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध औसत था।''

मुवालियर अब्दुल्ला[1] (2016):

''शिक्षा विभाग सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ कश्मीर के शिक्षा विभाग द्वारा अध्ययन किया गया। शिक्षण अभिक्षमता शिक्षक के उन गुणों, लक्षणों और कौशलों को सन्दर्भित करता है जो एक व्यक्ति के पास अपेक्षित रहता है या आत्म प्रयास के दौरान प्राप्त होता है शिक्षण की प्रवृत्ति पुनः उत्पन्न होती है। अतः शिक्षण अभिरुचि एक विशिष्ट योग्यता, क्षमता, रुचि, संतुष्टि और शिक्षण व्यवसाय में उपयुक्तता है। अध्यापन व्यवसाय में अभिवृत्ति का अर्थ व्यक्ति की भावनाओं व्यवहारों तथा व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता से है यदि शिक्षक प्रतिबद्ध है और रचनात्मक दृष्टिकोण रखता है तो निश्चित ही उसका प्रदर्शन प्रभावकारी होगा। रिचर्डसन (2003) के शब्दों में शिक्षा एक राष्ट्र निर्माण आन्दोलन है शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षकों की क्षमता और दक्षता पर निर्भर करती है यदि शिक्षक अच्छी तरह से प्रशिक्षित प्रेरित और पेशे के प्रति प्रतिबद्ध है तो सीखने में वृद्धि होगी। शिक्षण एक ऐसा पेशा है जिसे एक ऐसे व्यवसाय के रूप में वर्णित किया जा सकता है जो अत्यधिक विशिष्ट बौद्धिक सेवायें प्रदान करता है जो उच्च स्तर की रचनात्मक सोच की प्रवृत्ति रखते है और अनुसंधान में एक विस्तृत श्रृंखला का योगदान करती है। शिक्षण एक कला है जो एक व्यक्ति को एक प्रभावी पेशे के लिये तैयार करती है, ताकि अपने अधीनस्थों को सर्वाधिक नेतृत्व शैली प्रदान कर सके। मनोवृत्ति उत्तेजनाओं के प्रति विशेष तरीके से प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति है।''

अध्ययन के उद्देश्य- प्रस्तावित शोध में निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन को विस्तारित किया गया-

1. माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना-उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना निर्मित की गयी।

1. माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि- प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

जनसंख्या-जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाइयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ इकाइयों का चयन करके न्यादर्श बनाया जाता है । प्रस्तुत शोध में जौनपुरजनपद केमाध्यमिक विद्यालयोंके शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र केक्रमशः 265शिक्षक तथा 135 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना गया है ।

न्यादर्श (Sampling)- जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछेक इकाइयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्शन(sampling) कहते हैं, तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्यादर्श(Sample) कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में संभाव्यता न्यादर्शन के आधार पर आकड़ों को लिया गया है।

शोध उपकरण-शिक्षण अभिक्षमता मापनी:-

शिक्षण अभिक्षमता मापनी का निर्माण शोधकर्ता ने स्वयं किया है जिसके लिये कुल 68 कथन बनाया था। यह तीन बिन्दु मापनी सहमत, अनिश्चित तथा असहमत पर बना है। मानकीकरण हेतु 370 लोगों पर प्रशासित करके ऊपर के 29% तथा नीचे के 27% लोगों के परीक्षण से प्रत्येक कथन का टी0 विश्लेषण किया जो .05 स्तर पर सार्थक रहा उसे चयनित किया गया इसमें कुल 50 कथन अन्तिम प्रारूप में चयनित हुये। परीक्षण की विश्वसनीयता गुणांक स्प्लिट हाफ मेथड से 0.84 प्राप्त हुआ और जे0पी0 सिंह के शिक्षण अभिक्षमता मापनी से वैधता गुणांक 0.92 प्राप्त हुआ। मानक के रूप में टी0 परीक्षण को माना गया मापन हेतु सकारात्मक कथनों के लिये क्रम संख्या (2, 1, 0) (सहमत, अनिश्चित तथा असहमत) पर और नकारात्मक को लिये (0, 1, 2) था। परीक्षण के सकारात्मक कथन (1, 4, 5, 7, 9, 12, 13, 14, 15, 20, 22, 25, 28, 30, 31, 32, 33, 39, 40, 41, 42, 49, 50 = 23) तथा नकारात्मक कथन (2, 3, 6, 8, 10, 11, 16, 17, 18, 19, 21, 23, 24, 26, 27, 29, 34, 35, 36, 37, 38, 43, 44, 45, 46, 47, 48 = 27) है। न्यूनतम अंक 0 और अधिकतम अंक 100 आ सकता है।

निष्कर्ष-

पुरुष शिक्षक तथा महिला शिक्षिकाओं के शिक्षण अभिक्षमता सम्बन्धी सी0आर0 मूल्य का विश्लेषण।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya (4473)
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

तालिका-1

df (398) at .01 = 2.60

उपरोक्त विश्लेषण तालिका 4.1 से स्पष्ट है कि शिक्षण अभिक्षमता पर पुरुष शिक्षकों के मध्यमान 68.75 तथा मानक विचलन 15.24 जबकि महिला शिक्षिकाओं के मध्यमान 62.13 तथा मानक विचलन 19.36 है। मानक विचलनों की सहायता से अभिकलित मानक त्रुटि 1.83 प्राप्त हुयी। अभिकलित सी0आर0 मूल्य 3.63 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्र संख्या 398 के सार्थकता स्तर .01 पर सारणी मान 2.60 से अधिक है जिसके आधार पर बनायी शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर पुरुष तथा महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।" निरस्त हो जाती है। जिससे स्पष्ट होता है कि पुरुष शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता महिला शिक्षिकाओं की तुलना में अधिक होती है। इस परिणाम का समर्थन शर्मा (2016) का अध्ययन करता है।

प्रस्तुत परिणाम के सम्भवतः कारण है कि पुरुष शिक्षक बहिर्मुखी स्वभाव के होते है और समाज में विचरते रहते है उन्हें किसी तथ्य को स्पष्ट करना अच्छा से आता है।

परिकल्पना-2 ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों के शिक्षण अभिक्षमता सम्बन्धी सी0आर0 मूल्य मूल्य का विश्लेषण।

तालिका-2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	सी0आर0मूल्य
ग्रामीण शिक्षक	135	68.72	19.36	2.05	.283
शहरी शिक्षक	265	68.14	18.89		

df (398) at .01 = 2.60

उपरोक्त विश्लेषण तालिका 4.2 से स्पष्ट है कि शिक्षण अभिक्षमता पर ग्रामीण शिक्षकों के मध्यमान 68.72 तथा मानक विचलन 19.36 जबकि शहरी शिक्षकों के मध्यमान 68.14 तथा मानक विचलन 18.89 है। मानक विचलनों की सहायता से अभिकलित मानक त्रुटि 2.05 प्राप्त हुयी। अभिकलित सी0आर0 मूल्य .0283 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्र संख्या 398 के सार्थकता स्तर .01 पर सारणी मान 2.60 से कम है जिसके आधार पर बनायी शून्य परिकल्पना "माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।" स्वीकृत हो जाती है। जिससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण शिक्षकों व शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में समान होते है। इस परिणाम का समर्थन सिंह व कौर (2018) का अध्ययन करता है।

प्रस्तुत परिणाम के सम्भवतः कारण है कि शिक्षण अभिक्षमता व्यक्तिगत विशेषता होती है न कि क्षेत्रगत विशेषता है।

शोध की शैक्षिक उपयोगिता-शिक्षा के क्षेत्र में जो अनुसंधान किये जाते हैं उनका शैक्षिक जगत से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। शोध तभी सार्थक माना जाता जबकि उसमें प्राप्त निष्कर्ष सार्थक हों तथा समस्या के समाधान में योगदान दे एवं भावी अनुसंधानकर्ताओं का मार्गदर्शन कर सकें। शिक्षा के क्षेत्र में किए गए शोधों के परिणामों व निष्कर्षों का वर्तमान समय में गतिमान शोधों पर व्यापक प्रभाव पड़ता है तथा पूर्व के परिणाम व निष्कर्ष वर्तमान में शोधों को एक नई दिशा प्रदान करते हैं।

किसी भी शोधकर्ता के लिए यह सम्भव नहीं होता है कि वह समस्या से सम्बन्धित सभी सीमाओं अथवा सभी क्षेत्रों को अपने अध्ययन में समाहित कर सके। समय, धन तथा साधनों की परिसीमाओं के कारण शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध का गहन अध्ययन किया है। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष व परिणाम भावी शोधकर्ताओं के लिए निश्चित रूप से मददगार सिद्ध होंगे। निःसंदेह प्रस्तुत शोध के परिणामों के द्वारा माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता से सम्बन्धित बहुत महत्वपूर्ण व आवश्यक जानकारियाँ प्राप्त हुई हैं जो भावी अनुसंधानकर्ताओं के लिए शोध में सहायक होंगी परन्तु कुछ ऐसे भी प्रश्न हैं जो कि अब भी अनुत्तरित हैं जिनके समाधान के लिए अनुसंधान प्रयासों की आवश्यकता है।

Co-ordinator
IQAC
Raghuveer Mahavidyalaya
Principal
Raghuveer Mahavidyalaya

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, आर०ए० (2008): भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, आर०लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. भटनागर, डॉ० सुरेश (2008): अधिगम एवं शिक्षण, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. अग्रवाल, डॉ० मीना (2008): बाल विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. कपूर, डॉ० मीनू एवं राजपूत, डॉ० आशा (2010): बाल विकास आगरा पब्लिकेशन, आगरा।
5. जायसवाल, सीताराम (2012): व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. श्रीवास्तव, डी०एन० एवं पाठक, पी०डी० (2012): बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान, आगरा पब्लिकेशन, आगरा।
7. श्रीवास्तव, महेन्द्र नाथ एवं कुमार सतीश (2014): बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
8. श्रीवास्तव, डॉ० डी०एन० (2020): अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
9. गुप्ता, प्रो० एस०पी० एवं गुप्ता, डॉ० अलका, (2013): सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
10. राय, पारस नाथ (2008): अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
11. सिंह, अरूण कुमार (2017): मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Jaunpur

आमघ्१७ 2021
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN 2393-8048, July-December 2021, Submitted in October 2021, iajesm2014@gmail.com

Attitude of Teachers towards Inclusive Education In Relation To Their Perceived Self-Efficacy to Teach In Inclusive Classroom

Abhishek Mishra, Research Scholar, Department of Education, SunRise University, Alwar, Rajasthan (India)
Dr. Atul Kumar Dubey, Assistant Professor, Department of Education, SunRise University, Alwar, Rajasthan (India)
Email: [illegible]

ABSTRACT

The term inclusion in education invites all children irrespective of their differential needs together and promotes to accomplish their educational needs in same teaching-learning environment by the same teachers, which requires to reform and restructures the general schools policies in the way so that school with diversities would become most powerful learning environment for the children in various ways. However, inclusive environment is a new challenging work environment for the general school teachers; which is not an easy task to be achieved especially in developing countries where the numbers of children are still struggling for the needs of hardship. Moreover, general school teachers required to be equipped with new innovative skills and to be more competent with inclusive strategies then only they will be able to take initiative or put their efforts to implement it in an effective way. Primarily, success of inclusive environment depends on the positive attitudinal response of the school teachers. However, study reveals that still teachers at grass root level are not positive and facing difficulties in implementing inclusive education.

Keywords: Inclusive Education, Attitude, Self-Efficacy, Primary School Teachers.

INTRODUCTION:

The Inclusive education is that all the students attend and are welcomed by their neighbourhood schools in regular classrooms and age-appropriate and also supported to learn the activities with other students. Likewise, to contribute and participate in all aspects of the life of the school. Inclusive education is concerning to develop and design our schools, classrooms, programs and activities so that all students learn and participate collectively. We all know that our neighbourhood schools are the heart of our communities. India is having the second largest education system in the world, with 200 million children of age group between 6 and 14, around 25 million of whom are out of school (World Bank, 2004). However, comportment in mind that actually 35% of children are registered at birth (UNICEF, 2004), others estimate around 35-80 million children are out-of-school. So, here, role of the teacher is very important in such inclusive settings. Teacher should be capable enough to maintain the quality teaching learning processes in the inclusive classroom. Forlin (2001), claims that, serving children with learning disabilities in a regular classroom requires a major shift in roles and responsibilities of educators, involvement and also special support services. Teachers with a high wisdom of inclusive teaching efficacy tend to create healthy classroom environment and focus on diverse educational needs of the students. According to Weisel & Dror (2006), self-efficacy was the only most critical factor which effected attitudes in Israeli teachers. One of the prominent features of inclusive setting is the attitude of the teacher towards the students in inclusive setting classrooms. Avramidis and Norwich (2002), show that teacher's attitudes towards inclusive settings are very important variables in the execution of successful inclusive education practices. A number of studies suggest a positive association between teachers' attitudes and self-efficacy for inclusive practices (Malinen,Väisänen, & Savolainen, 2012; Meijer & Foster, 1988; Savolainen et al., 2012; Weisel & Dror, 2006). A recent review of 26 studies has been showed that the majority of teachers hold neutral or negative attitudes towards the inclusion of pupils with disabilities in regular primary education (Boer, Pijl & Minnaert, 2011)

Recently the global trend of educational inclusion and the provision of education for all has seen children from different social backgrounds being increasingly integrated into general education systems worldwide (UNESCO, 2009). Inclusive education is considered as somewhat of a reform act that aims to eliminate all barriers to the integration of every child into the general education system, regardless of their differences and social backgrounds. The inclusion concept reflects an understanding that accepts, values, and reflects variety and

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala
Jaunpur

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2021, Submitted in October 2021, iajesm2014@gmail.com

(Ainscow, 2005). Despite the long history of inclusive education practices in developed countries, only in the last 25 years have integration practices caught the attention of researchers and parents in Turkey. The regulations and implementations regarding inclusive education in Turkey were first practiced in 1983, though many practicable difficulties were encountered (Sucuoglu, 2004). Since Special Education Regulation 573 came into effect in Turkey and several other countries, inclusive education practices have gained momentum (Turkish Ministry of National Education (MoNE), 1997). Even though there has been a shift from the use of the term —integrationl to use of the term —inclusionl globally, in Turkey, the term —mainstreaming educationl has been used in its place. Turkey is a large country with a population of 80 million people; individuals under the age of 18 constitute 40% of the total population. According to data from 2017, the number of school-age individuals in Turkey is nearly 18 million (MoNE, 2017). According to the MoNE's 2017 data, only 25% of school-age disabled students pursue their education. The number of inclusive students attending primary and secondary school is about 300,000 (MoNE, 2017). Despite all the legal regulations, it is obvious that, based on observations made by researchers in research studies, it is obvious that inclusion has not been widely accepted in Turkey, and that it has not provided the anticipated benefits. The reason behind this may be attributed to the fact that the success of inclusive education is based on many different factors. It may be claimed that, of these, the most important is that of teachers. Since it has been realized that the most basic factor that affects success regarding the inclusion of students with special needs is a positive attitude from teachers (Avramidis & Norwich, 2002; Parasuram, 2006). Existing research has revealed that the attitudes and expectations of teachers have a direct effect on students' learning and development (McLeskey & Waldron, 2006; Forlin, Cedillo, & Romero-Contreras, 2010). Additionally, researchers have reported that the disabled teachers' positive attitudes and beliefs towards students in the inclusion environments is related to considerably improved inclusion practices and better student output (Berry, 2010, Bleeker & Boakes, 2010, Darling-Hammond, 2006; Rakap, & Kaczmarek, 2010; Rakap, Parlak-Rakap, & Aydin, 2016). It is believed that the teachers who have a positive attitude towards inclusion are able to use educational strategies in general education classes more effectively and they feel sufficiently competent in terms of meeting the requirements of students with special needs and adapting the curriculum and materials accordingly (Campbell, Gilmore, & Cuskelly, 2003). On the contrary, it has been observed that the teachers who have a negative attitude towards inclusion have lower expectations and decrease the learning opportunities for children (Idol, 2006; Shade & Stewart, 2001). Many studies have been conducted to investigate the attitudes of teachers towards inclusion. Some of these studies revealed that certain teachers had a positive attitude towards the inclusion of children with special needs (Avramidis, Byliss, & Burden, 2000; Avramidis & Norwich; 2002; Kargin, 2004; Park & Chitiyo, 2011; Sari, 2007; Sucuoglu, 2004; Secer, 2010). Conversely, other researchers have revealed that form teachers have a negative attitude towards inclusion (Avramidis & Kaylva, 2007; Diken & Sucuoglu, 1999; Gozun & Yikmis, 2004; Rakap & Kaczmarek, 2010; Sahbaz & Kalay, 2010). A few studies have concluded that teachers have neither a negative nor a positive attitude towards inclusive education (Engstrand & Roll-Pettersson, 2012; Leyser & Tappendorf, 2001 Ross-Hill, 2009; ; Sari, Celikoz, & Secer, 2009; Sucuoglu, Bakkaloglu, Iscan, Demir, & Akalin, 2013). In their review of the literature, Avramidis and Norwich (2002) mentioned that teacher attitudes towards integration/inclusion were affected by various factors. These factors included: (a) teacher-related factors, such as age, gender, teaching experience, the level of learning regarding receiving special education training; (b) student-related factors, such as the child's inability type and nature; and (c) environmental factors, such as the availability of support staff and educational materials. One of the factors that affect the success of teachers in the inclusion practices is the teachers' self-efficacy perceptions (Sharma, Loreman, & Forlin, 2012). According to Bandura (1977), self-efficacy belief can be defined as an individuals' judgment regarding their success in using certain abilities. The concept has an important place in social learning theory; it describes an

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

actions, and their success therein (Bandura, 1984). Teachers' self-efficacy beliefs have an important influence on their principled practice regarding successful inclusive practices (Paneque & Barbetta, 2006; Sharma, et al., 2012). In inclusionary classes, successful education depends on teachers' beliefs towards the responsibilities and disabilities of children with special needs (Jordan, Schwartz, & McGhie-Richmond, 2009). Additionally, it is stated that teachers with higher levels of self-efficacy use more effective teaching strategies and are more insistent regarding those students who show less interest in academic activities (Gibson & Dembo, 1984; Tschannen-Moran & Woolfolk-Hoy, 2001). On the contrary, teachers with lower self-efficacy levels spend more time on non-academic tasks and inhibit the students' learning by using ineffective teaching strategies (Savolainen, Engelbrecht, Nel, & Malinen, 2012; Sharma, et al., 2012). Previous research in the field has revealed that a positive relationship exists between self-efficacy and attitude towards inclusion applications. Wiesel and Dror (2006) stated that Israeli primary school teachers with higher self-efficacy levels had a more positive attitude towards inclusion applications. Soodak, Podel, and Lehman (1998) found a significant relationship between the American general-education teachers' self-efficacy and their attitude towards inclusion. In addition to these studies, Savolainen et al. (2012) reported a significant positive relationship between Finnish and South African teachers' self-efficacy regarding cooperation, and their attitude towards the inclusion of the disabled children. Similarly, Malinen, Savolainen, and Xu (2012) found a positive correlation between the Chinese teachers' attitude towards inclusion and their self-efficacy. Similarly, Sokal and Sharma (2014) revealed that there was a positive significant relationship between Canadian teachers' attitudes and their self-efficacy. In summary, it can be observed that teachers' self-efficacy regarding inclusion is the strongest factor when trying to determine their attitudes towards inclusionary education. Hence, revealing the relationship between teachers' self-efficacy and their attitudes towards inclusion will help researchers and teachers alike to make inferences regarding future studies that may help to develop positive attitudes towards inclusion.

Teachers Attitudes and Self-Efficacy towards inclusive Education

Inclusion is not only a process to placed kids with disabilities physically in the classrooms; it requires creating a flexible learning environment so that individual needs of all children could be met and which could be possible only with the positive attitudes of service providers towards it. Ample of study are there which indicates that teachers are not in favor of inclusion of children with disabilities specially for children with behavioral disorder, and profound intellectual disabilities and showed negative to moderate attitudes towards inclusion (Sharma & Desai, 2007; Chhabra, Shrivastava & Shrivastava, 2010; Das &Kattumuri, (n.d.); Das & Desai, 2013; Das & Bhatnagar, 2013; Hofman & Kilimo, 2014). Koster, Pijl, Nakken& Van Houten 2010 acknowledged that if the teachers perceive inclusive education negatively, it will create a gap between teachers and students especially those with disabilities (Hofman & Kilimo, 2014). Classroom environment has an effective role in the positive academic and social achievement of all children especially for children with challenging learning needs. Creating such teaching learning environment depends heavily on the positive attitude of teachers towards inclusive teaching practices. Das and Kattumuri (n.d.) reported that regular teachers are anxious and have a high level of concern to include children with behavioral and severe disabilities in their class and also reported that non-disabled children do not cooperate and make a laugh on children with disabilities too. Children with disabilities also worried and felt uncomfortable in general classroom environment. Whereas Hunt and Goetz 1997 indicated in their study that student with severe disabilities also includable in ordinary school and that they may achieve positive academic and learning outcomes contrary to the unfolded fears and concern held by many stakeholders (Rajani, 2012). Negative attitudes of teachers towards teaching challenging students in their class may affect their sense of self-esteem and self-concept and could be a significant barrier to the effective implementation of inclusive practices (Bhatnagar & Das, 2013). Hence, it is important to analyze the attitudes of teachers towards working in an inclusive classroom environment. An attitude is multidimensional

situation, event or an object. It is a potential factor which drives a person how to react in a certain situation. Allport in 1935, exhibited that an attitude is a neural and mental state of readiness, organized through experiences and exerting a directive or dynamic influence on individual response towards an object or situation to which it is related (Jain, 2014). Another factor which is equally important to implement inclusive education is self-efficacy, which could be understand as the ability of a person to persist with a task and affects every area of human endeavor. Few studies considered it as a strong predictor to teacher's attitudes towards inclusion (Hofman & Kilimo, 2014).

REFERENCES:

1. Avramidis, E., & Norwich, B. (2002). Teachers' attitudes towards integration/inclusion: A review of the literature. European Journal of Special Needs Education, 17, 129-47. http://dx.doi.org/10.1080/08856250210129056

2. Boer, de A, Pijl, S. J., & Minnaert, A. (2011). Regular primary school teachers' attitudes towards inclusive education: A review of the literature. International Journal of Inclusive Education, 15, 331-353. http://dx.doi.org/10.1080/13603110903030089

3. Chatterjee, K. O. U. S. I. K., & Dasgupta, S. A. B. U. J. (2016). Information seeking behavior of agricultural researcher while using internet: a case study of bidhan chandra krishi viswa vidyalaya central library, west bengal, india. International Journal of Library & Educational Science, 2(4), 11-20.

4. Eya, N. M., Attah, F. O., Ijeoma, H. N., & Ugwuanyi, C. S. (2020). SocioPsychological Factors as Correlates of Students' performance in Chemistry: Implication for Science and Engineering Education. International Journal of Mechanical and Production Engineering Research and Development (IJMPERD), 10, 239-248.

5. Forlin, C. (2001). Inclusion: identifying potential stressors for regular class teachers. Educational Research, 43, 235-245. http://dx.doi.org/10.1080/00131880110081017

6. Forlin, C., Earle, C., Loreman, T. & Sharma, U. (2011). The Sentiments, Attitudes, and Concerns about Inclusive Education Revised (SACIE-R) Scale for Measuring Pre-Service Teachers' Perceptions about Inclusion. Exceptionality education international, 21 (3), 50-65.

7. Malinen, O. P., Väisänen, P., & Savolainen, H. (2012). Teacher education in Finland: a review of a national effort for preparingteachers for the future. Curriculum Journal, 23(4), 567–584

Co-ordinator
I.Q.A.C.

Principal
Raghuveer

2021

Year : 7, Volume : 15
Approved by UGC
July - Dec. - 2021
ISSN : 2349-3844
Journal No - 64586

Shodh Martand

SHODH MARTAND

A PEER REVIEWED & REFEREED INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES

Editor
Dr. Vinay Kumar Tripathi

Published by :
Raghuveer Mahavidyalaya
Raghuveer Nagar, Thaloi, Machhalishahar
Jaunpur U.P. (India) - 222143

www.raghuveermahavidyalaya.org http://www.facebook.com/shodh.martand http://twitter.com/shodhmartand

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

ISSN- 2349-3

SHODH – MARTAND

A PEER REVIEWED & REFEREED INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIE

Year -7 | July-December 2021 | Volume –15

Contents

❖ सम्पादकीय

समसामयिक लेख

- वैश्विक स्तर पर कोरोना महामारी का शिक्षा पर प्रभाव
  डॉ० विनय कुमार त्रिपाठी — 01–03

शोध–पत्र :–

- अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के बालकों की विभिन्न विषयों में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन
  डॉ० अरुण कुमार मिश्र व रंजना मिश्रा — 04–12
- टेलीविजन न्यूज चैनल्स एवं सोशल मीडिया के अंतर्वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन
  प्रो० राम मोहन पाठक व पंकज कुमार यादव — 13–22
- 'स्मृति की रेखाएँ' संस्मरण का तात्त्विक अनुशीलन
  शिखा तिवारी — 23–34
- अध्यापक शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श का प्रशिक्षण : समय की मांग
  डॉ० जीतनारायण यादव — 35–39
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में अभिनव प्रयोग है अकादमिक बैंक आफ क्रेडिट
  डा. शैलेश मिश्र — 40–45
- गीतरामायणम् में लोकगीतों का परम्परागत प्रयोग : एक अध्ययन
  इंदुजा दुबे — 46–55
- साहित्य, संस्कृति और समाजः एक विश्लेषण
  अभिषेक मणि तिवारी — 56–60
- तबले के नामकरण में विभिन्न मतों का विमर्श
  डॉ० नरेन्द्र देव पाठक — 61–66

Co-ordinator
IQAC
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

- महात्मा
- महाभारत
- स्त्री शिक्ष
- A Critic
- Religiou
  A.N. Dw
- Social R
  in a Siev
- The Femi
  Dark Hol

पुस्तक समीक्षा:–

- प्रभात

अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के बालकों की विभिन्न विषयों में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 अरुण कुमार मिश्र

शोध निर्देशक
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज

रंजना मिश्रा

शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),प्रयागराज

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की विभिन्न विषयों में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्यन की समस्या की प्रकृति के अनुसार अनुसंधान के लिए **"सर्वेक्षण विधि"** का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनपद जौनपुर के स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित माध्यमिक विद्यालय ही शोध जनसंख्या का निर्माण किया गया है। प्रस्तुत शोध में सरल यादृच्छिक विधि से प्रतिदर्श का चयन किया जायेगा जिसमें 10 स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय एवं 10 अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के 600 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया जिसमें से अनुदानित के 112 छात्र–छात्राओं के अशिक्षित अभिभावक पाये गये जबकि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में 103 अशिक्षित अभिभावक पाये गये जो अभिभावक हाईस्कूल से कम योग्यता रखते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि मापने के लिए डॉ0 एल0एन0 दुबे द्वारा निर्मित **"हिन्दी उपलब्धि परीक्षण"**, डॉ0 अली इमाम एवं डॉ0 ताहिरा खातून द्वारा निर्मित **"गणित उपलब्धि परीक्षण"**, विज्ञान विषय में उपलब्धि मापने के लिए स्वनिर्मित **"विज्ञान उपलब्धि परीक्षण"** तथा सामाजिक विज्ञान विषय में उपलब्धि मापने के लिए स्वनिर्मित **"सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण"** का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि– अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalal, Bhikharipurkala, Jaunpur

Raghuveer Mahavidyalaya
Thalal, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों से उच्च है। अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की गणित, विज्ञान, सामाजिक विषय में उपलब्धि एवं सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्द्धि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों के बराबर है।

मुख्य शब्द– अनुदानित, स्ववित्तपोषित, माध्यमिक विद्यालय, अभिभावक, शैक्षिक उपलब्द्धि

भूमिका–

अनौपचारिक अभिकरण मे परिवार का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है जहाँ पर बालक माता–पिता से शिक्षा प्राप्त करता है क्योंकि माता–पिता परिवार की धूरी है उन्ही के इर्द गिर्द समपूर्ण परिवार संगठित रहता है प्रेम स्नेह एवं सौहार्द परिवार के आधार है बालक परिवार मे जन्म लेता है वही पर वह उठना बैठना खाना पीना दौडना चलना सभी कुछ सीखता है भाई बहनो से बाते करना माता पिता अतिथि आदि का आदर करना वह सभी गुण परिवार से सीखता है परिवार मे उसे लेक्चर नही दिया जाता। वहा पर सिद्धान्तों का साक्षात दर्शन होता है अतः बालक के मानसिक पटल पर सीखी गई बाते स्थायी होती है महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी कहते है कि मैने बचपन से ही जो कुछ सीखा था वही मेरी शिक्षा है महात्मा गांधी ने अपनी माता से धार्मिक आचरण की सही शिक्षा प्राप्त की थी जगदीश चन्द बसु को अपने महान वैज्ञानिक अन्वेक्षण की सूझ बचपन मे अपनी माता की उक्ति से मिली थी जीजाबाई ने ही शिवाजी मे वीरता की भावना भर दी थी। इसलिए सभी महापुरूषो ने माता पिता का ऋण स्वीकार किया माता को भारतीय साहित्य मे आदि गुरू कहा गया है। पेस्टालाजी फ्रोबेल तथा मान्टेसरी ने घर को शिक्षा का सर्वोत्तम स्थल माना है। पेस्टालाजी के अनुसार घर बच्चे की पहली पाठशाला है फ्रोबेल के मतानुसार माताए और अध्यापिकाएं है । मान्टेसरी ने विद्यालय को बचपन का घर कह कर पुकारा है। बालक का स्कूल माता की गोद से प्रारम्भ हो जाता है और परिवार मे ही रहकर शिक्षा ग्रहण करता है। जन्म लेने के बाद बालक का सर्व प्रथम अपने माता–पिता से सम्पर्क होता है।

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या माध्यमिक स्तर के विधार्थियो के अशिक्षित अभिभावकों के शैक्षिक उपलब्धि पडने वाले प्रभाव का अध्ययन से संबन्धित है। अभिभावक विद्यार्थियों के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर अत्यधिक प्रभाव डालता है परिवार के प्रेम और सहानुभूति के वातावरण में दी जाने वाली शिक्षा ही स्वाभाविक और स्थायी होती है माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी का सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक, धार्मिक, चारित्रिक, शारीरिक एवं सांस्कृतिक विकास बहुत तीव्र गति से होता है। विद्यार्थी समाज में जो कुछ भी अच्छा बुरा देखता व सुनता है उसे बहुत आसानी से सीख लेता है।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kal.
Jaunpur

पूर्व अध्ययनों से ज्ञात होता है कि अभिभावकों की शैक्षणिक क्षमता का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। **सिंह, परमिन्दर (2016)** के परिणाम छात्रों के घर के परिवेश की विभिन्न श्रेणियों और उनकी गणित विषय में उपलब्धि में महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध है। **वर्मा, पूनम जगदीश (2017)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में किशोरियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिभावक संलग्नता के मध्य उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध है **शुक्ला, रजनीश कुमार (2019) के परिणाम** गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों का उन विद्यालयों के प्रति अभिवृत्ति के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

अनौपचारिक अभिकरण मे परिवार का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि माता–पिता परिवार की धूरी हैं। अभिभावक विद्यार्थियों के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर अत्यधिक प्रभाव डालता है परिवार के प्रेम और सहानुभूति के वातावरण में दी जाने वाली शिक्षा ही स्वाभाविक और स्थायी होती है। यही कारण है कि अभिभावकों के संलग्नता का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उपर्युक्त अध्ययनों के आधार पर कहा जा सकता है कि अभिभावकों के संलग्नता का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया। अतः शोधकर्त्री द्वारा यह देखने का प्रयास किया गया कि क्या **अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की विभिन्न विषयों में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन** किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य–

1. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना–

H_{01} अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya

Raghuveer Mahavidyalaya

H_{02} अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{03} अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{04} अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{05} अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध–प्रविधि–

प्रस्तुत अध्यन की समस्या की प्रकृति के अनुसार अनुसंधान के लिए **"सर्वेक्षण विधि"** का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनपद जौनपुर के स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित माध्यमिक विद्यालय ही शोध जनसंख्या का निर्माण किया गया है। प्रस्तुत शोध में सरल यादृच्छिक विधि से प्रतिदर्श का चयन किया जायेगा जिसमें 10 स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय एवं 10 अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के 600 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया जिसमें से अनुदानित के 112 छात्र–छात्राओं के अशिक्षित अभिभावक पाये गये जबकि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में 103 अशिक्षित अभिभावक पाये गये जो अभिभावक हाईस्कूल से कम योग्यता रखते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि मापने के लिए डॉ० एल०एन० दुबे द्वारा निर्मित **"हिन्दी उपलब्धि परीक्षण"**, डॉ० अली इमाम एवं डॉ० ताहिरा खातून द्वारा निर्मित **"गणित उपलब्धि परीक्षण"**, विज्ञान विषय में उपलब्धि मापने के लिए स्वनिर्मित **"विज्ञान उपलब्धि परीक्षण"** तथा सामाजिक विज्ञान विषय में उपलब्धि मापने के लिए स्वनिर्मित **"सामाजिक विज्ञान उपलब्धि परीक्षण"** का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. **अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि की तुलना–**

H_{01} अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Co-ordinator
I.QAC
Raghuveer Mahavidyalaya

Raghuveer Mahavidyalaya
Jaunpur

तालिका 1

हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि

क्रमांक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	'टी'–अनुपात
1.	अनुदानित	112	63.51	12.94	6.66	1.94	3.43*
2.	स्ववित्तपोषित	103	56.85	15.34			

*.05 स्तर पर सार्थक

यह परिकल्पित किया गया है कि 'अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय **की उपलब्धि** में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। **तालिका 4.56** में अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय की उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 63.51 एवं 56.85 है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय की उपलब्धि में 'टी'–अनुपात= 3.43 है जो मुक्तांश (=213) तथा 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित मान क्रान्तिक (=1.97) से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत। परिणामतः अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय की उपलब्धि में अन्तर है। अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि का मध्यमान स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि के मध्यमान से अधिक है।

2. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि की तुलना–

H_{02} अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2

गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि

क्रमांक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	'टी'–अनुपात
1.	अनुदानित	112	58.41	12.36	0.22	1.59	0.14
2.	स्ववित्तपोषित	103	58.63	10.88			

*.05 स्तर पर असार्थक

यह परिकल्पित किया गया है कि 'अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की गणित विषय **की उपलब्धि** में कोई सार्थक अन्तर नहीं

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur Kala
Jaunpur

होता है।' **तालिका 4.57** में अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की गणित विषय की उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 68.41 एवं 68.63 है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों की गणित विषय की उपलब्धि में 'टी'–अनुपात= 0.14 है जो मुक्तांश (=213) तथा 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित मान क्रान्तिक (=1.97) से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत। परिणामतः अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की गणित विषय की उपलब्धि में अन्तर नहीं है। अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की गणित विषय में उपलब्धि का मध्यमान स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की गणित विषय में उपलब्धि के मध्यमान के बराबर है।

3. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि की तुलना–

H_{03} अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 3

विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि

क्रमांक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	'टी'–अनुपात
1.	अनुदानित	112	61.22	11.58	0.77	1.77	0.44
2.	स्ववित्तपोषित	103	60.45	14.18			

*.05 स्तर पर असार्थक

यह परिकल्पित किया गया है कि 'अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय **की उपलब्धि** में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।' **तालिका 4.58** में अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 61.22 एवं 60.45 है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की उपलब्धि में 'टी'–अनुपात= 0.44 है जो मुक्तांश (=213) तथा 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित मान क्रान्तिक (=1.97) से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत। परिणामतः अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की उपलब्धि में अन्तर नहीं है। अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में उपलब्धि का मध्यमान स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में उपलब्धि के मध्यमान के बराबर है।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai ... Jaunpur

Shodh Martand, ISSN : 2349-3844, Vol-15

July-Dec 2021

4. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि की तुलना–

H_{04} अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 4

सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि

क्रमांक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	'टी'–अनुपात
1.	अनुदानित	112	60.03	13.81	1.92	1.89	1.02
2.	स्ववित्तपोषित	103	61.95	13.88			

*.05 स्तर पर असार्थक

यह परिकल्पित किया गया है कि 'अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान **विषय की उपलब्धि** में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।' **तालिका 4.59** में अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय की उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 60.03 एवं 61.95 है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय की उपलब्धि में 'टी'–अनुपात= 1.02 है जो मुक्तांश (=213) तथा 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित मान क्रान्तिक (=1.97) से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत। परिणामतः अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय की उपलब्धि में अन्तर नहीं है। अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में उपलब्धि का मध्यमान स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय में उपलब्धि के मध्यमान के बराबर है।

5. अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि की तुलना–

H_{05} अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 5

शैक्षिक उपलब्धि

क्रमांक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	'टी'–अनुपात

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghunath Mahavidyalaya

1.	अनुदानित	112	243.17	23.98	5.29	3.43	1.54
2.	स्ववित्तपोषित	103	237.88	26.16			

*.05 स्तर पर असार्थक

यह परिकल्पित किया गया है कि 'अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।' **तालिका 4.60** में अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 243.17 एवं 237.88 है। दोनों समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में 'टी'–अनुपात= 1.54 है जो मुक्तांश (=213) तथा 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित मान क्रान्तिक (=1.97) से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत। परिणामतः अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं है। अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान के बराबर है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में उपलब्धि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों से उच्च है।
- अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की गणित, विज्ञान, सामाजिक विषय में उपलब्धि एवं सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों के बराबर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची :–

- अमाजू एवं ओकोरो (2015). सोशल स्टेट्स ऑफ पैरेन्ट एण्ड स्टूडेन्ट्स ऐकेडमिक परफॉरमेन्स इन आबा एजुकेशन जोन, अबिया स्टेट, *एडवांसड इन रिसर्च*, 3(2), 189–197
- ओमन, निम्मी मारिया (2015). होम इनवायरमेण्ट एण्ड एकेडेमिक एचिवमेण्ट ऑफ स्टूडेन्ट्स एट हायर सेकेण्डरी लेवल, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ करेण्ट रिसर्च*, 7(07), पृ0 18745–18747
- ओगुनशोला, फेमी एवं अदेवाले (2012). द इफेक्ट ऑफ पैरेन्टल सोशियो–इकोनॉमिक स्टेट्स ऑन एकेडमिक परफार्मेन्स ऑफ स्टूडेन्ट्स इन सैलेक्ट स्कूल्स इन इदु लगा ऑफ कवारा स्टेट नाइजीरिया, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक रिसर्च इन बिजनेश एण्ड सोशल साइंस*, वॉल्यूम–2, नं0 7, पृ0 230–239
- इला, आर0ई0; ओडोक, ए0ओ0 एवं इला, जी0ई0 (2015). इनफ्लुएन्स ऑफ फैमिली साइज एण्ड फैमिली टाइप ऑन एकेडेमिक परफार्मेन्स ऑफ स्टूडेन्ट्स इन गवर्नमेन्ट इन कैलाबर

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

रजना 2022

ISSN-0974-522X
R.N.I.-UPHIN /2008/30056
ISRA Journal Impact Factor-4.781
UGC Approved journal SL No. - 47966

श्रीप्रभु pratibha

Research Journal of Humanities

Intellectual effort on social values

A peer reviewed (Refereed) journal

त्रिवेणी सेवा समिति, इलाहाबाद
आप्नोति स्वाराज्यम्

Year-14, Volume-02, Part-55
April- June, 2022

Editor– Prabuddha Mishra
Co-editor– Pratibha Tiwari

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

शोध प्रतीक्षाPart-55,April-June-2022 pg-40-47
R.N.I-UPHIN/2008/30056, ISSN-0974-522X, JIF-4.781, UGC47966

माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन

अरुण कुमार मिश्र एवं रंजना मिश्रा

सारांश : माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन किया गया है। समस्या के समाधान के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रयागराज शहर में संचालित दो राजकीय विद्यालयों (यू.पी.बोर्ड) का चयन किया गया। समस्या का अध्ययन करने के लिए विद्यालयों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि से किया गया। छात्रों एवं छात्राओं के आंकड़ों के संकलन हेतु परीक्षण डॉ0 आर0डी0 सिंह एवं डॉ0 माधुरी सिंह द्वारा निर्मित हिन्दी परीक्षण (एच.ए.टी.) का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय विधि प्रयुक्त किया गया है। निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ है- माध्यमिक स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक है। माध्यमिक स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक है। माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि की तुलना में सार्थक अन्तर नही है।

मुख्य शब्द- माध्यमिक स्तर, छात्र-छात्राएँ, हिन्दी विषय, उपलब्धि, अन्तर।

प्रस्तावना-

वर्तमान समाज क्षण, प्रतिक्षण उत्थान के क्रान्तिकारी पथ पर अग्रसर है। जहाँ विज्ञान, मनोविज्ञान, सूचना प्रसारण एवं प्रौद्योगिकी का विकास समाज को बराबर प्रभवित कर रहा है। वही भारतीय संस्कृति भी विश्व समुदाय को प्रभावित करने में पीछे नहीं है। प्रकृति एवं पर्यावरण में बढ़ती हुयी असंतुलन, प्रदूषण, चाहे वह भौतिक, संस्कृतिक, नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक हो या अन्य सभी असंतुलनों के संरक्षण हेतु विश्व समुदाय भारत की वैदिक धरोहरों को बड़ी तेजी से अपने में आत्मसात कर लेने की प्रवृत्ति की ओर उन्मुख है।

बालक का सर्वांगीण विकास करने के लिए बालक की योग्यता, रूचि, मनोवृत्तियाँ आदि को आधार बनाया जाता है। बाल्यकाल में छात्र-छात्राओं पर सर्वाधिक प्रभाव हिन्दी भाषा का पड़ता है। अतः हिन्दी भाषा में उपलब्धि का अध्ययन आवश्यक है। जैसे हिन्दी भाषा नदी के जल के समान सदा चलती एवं बहती रहती है, जिस प्रकार से नदी के धरातल के अनुसार अपने स्वरूप को ग्रहण करता है, ठीक उसी प्रकार से हिन्दी भाषा भी देश, काल एवं सामाजिक परिस्थितियों के

अनुरूप अपना स्वरूप का विकास करती है। और हिन्दी भाषा के अपने आन्तरिक गुण या स्वभाव की भाषा की आवश्यकता होगी।

व्यापक राष्ट्रहित, राष्ट्रीय एकता तथा जन-सम्पर्क को दृष्टिगत रखते हुए स्वाधीन भारत के संविधान में हिन्दी को राष्ट्र भाषा स्वीकार किया गया है। यह देश की सांस्कृतिक एकता लोक, चेतना एवं सामाजिक सम्पर्क की भाषा है। शिक्षा में पारदर्शिता एवं वैज्ञानिक की होड़ में मूल्यांकन प्रक्रिया में परीक्षणों का विशेष महत्व है। स्वचालित पत्र क्रान्ति के समाज में अभिसिप्त सुनिश्चित परिवर्तन को साकार बनाने में हिन्दी भाषा सहायक होती है इसके लिए मापन आवश्यक है।

हिन्दी भाषा की कुल जनसंख्या के आधे से अधिक लोगों की भाषा है। यह भारत की जनभाषा, सम्पर्क भाषा, राष्ट्रभाषा और राज भाषा है। और देश की एकता और अखण्डता और उसके त्वरित विकास के लिए हमारे देश में हिन्दी भाषा का सर्वाधिक महत्व है। भारत के संविधान में हिन्दी को राष्ट्र-भाषा का स्थान दिया गया है। क्योंकि राष्ट्रीय एकता और भावात्मक एकता का प्रश्न प्रमुख था अंग्रेजों और अंग्रेजी का विरोध सभी ने किया और हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में सभी ने स्वीकार किया। हिन्दी में वे सभी गुण है जो एक राष्ट्र भाषा में होनी चाहिए हिन्दी सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाली भाषा है। सभी प्रदेशों के निवासी इसे सरलता से बोधगम्य कर लेते है। हिन्दी का राष्ट्र-भाषा होना अधिक व्यावहारिक तथा गौरव की बात है। इसलिए हिन्दी का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है।

बच्चें स्वतन्त्र रूप से जो भी विचार करते है अपनी भाषा में करते है, इससे उनके व्यक्तित्व का विकास होता है। भाषा के माध्यम से ही वे सामाजिक व्यवहार और सामाजिक अन्तः प्रक्रिया करते है और इस प्रकार उनका सामाजिक विकास होता है। बच्चे प्रारम्भ में मातृभाषा-भाषी व्यक्तियों के ही सम्पर्क में आते हैं और उनसे भाषा में ही विचार विनिमय करते हैं। वे उन्हीं का अनुकरण करते है और उन्हीं के सामाजिक गुणों को ग्रहण करते है। हिन्दी का पाठ्य पुस्तकों में संकलित लेख, कहानी, नाटक और कविताओं के माध्यम से भी बच्चें को सामाजिकता की शिक्षा मिलती है। जो सामाजिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

बालक सबसे पहले अपनी मातृभाषा सीखता है और फिर उसके माध्यम से विचार-विनियम कर अपने समाज के व्यक्तियों के आचार-विचार को ग्रहण करता है। धीरे-धीरे वह लोकरीति सीखता है। बस यही से उसका सांस्कृतिक विकास शुरू हो जाता है। अपनी भाषा की शिक्षा के साथ-साथ बालक अपनी मातृभाषा के साहित्य

Coordinator
Principal
Jaunpur

का भी अपने समाज के इतिहास के दर्शन, सभ्यता एवं संस्कृति के दर्शन होते है और वह अपनी संस्कृति की मूल मान्यताओं विश्वासों और मूल्यों से परिचित होता हैं। वास्तविक यह है कि सांस्कृतिक महत्व के दो मूल आधार है- एक लोक जीवन और दूसरा लोक साहित्य।

आज वैज्ञानिक विकास तथा तकनीकी विकास ने विश्व के राष्ट्रों को एक दूसरे के अधिक समीप ला दिया है और कोई भी राष्ट्र अकेला रह कर जीवित नही रह सकता है। एक राष्ट्र की गतिविधियाँ अन्य राष्ट्रों को प्रभावित करती है। इसलिये विश्व के राष्ट्रों में सम्पर्क तथा विचारों का आदान-प्रदान करना आवश्यक हो गया है। इसके लिये एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है जिससे विश्व के राष्ट्र आपस में विचारों व नीतियों का आदान-प्रदान कर सके। जिस भाषा के माध्यम से एक देश दूसरे देश से अपने विचारों का आदान-प्रदान करने में सक्षम हो उसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा कहते है। विश्व के राष्ट्र आपस में सम्पर्क तथा विचारों का आदान-प्रदान करते है उसे विश्व की भाषा कहते है। 'संयुक्त राष्ट्र संघ' जो अन्तर्राष्ट्रीय संघ है उसमें विश्व के अधिकांश राष्ट्र मानवीय समस्याओं पर विचार-विमर्श करते है और समाधान ढुढ़ते है जिससे विश्व में शान्ति रह सके इसके लिए विश्व भाषा का प्रयोग किया जाता है।

शोध के उद्देश्य- प्रस्तुत अध्ययन कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है-

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों का हिन्दी विषय में उपलब्धि परीक्षण का अध्ययन।
2. माध्यमिक स्तर के छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना-

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों का हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक होगी।
2. माध्यमिक स्तर के छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक होगी।
3. माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही होगा।

अध्ययन की विधि- समस्या के समाधान के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या और न्यादर्श- प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रयागराज शहर में संचालित दो राजकीय विद्यालयों (यू.पी.बोर्ड) का चयन किया गया।

Coordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai Bhikharipur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai Bhikharipur Kau

समस्या का अध्ययन करने के लिए विद्यालयों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि से किया गया।

उपकरण का वर्णन- छात्रों एवं छात्राओं के आंकड़ों के संकलन हेतु परीक्षण डॉ0 आर0डी0 सिंह एवं डॉ0 माधुरी सिंह द्वारा निर्मित हिन्दी परीक्षण (एच.ए.टी.) का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधि- आँकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय विधि प्रयुक्त किया गया है-

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या- 1

छात्रों का मध्यमान व मानक विचलन

CI	f	Cf	d	fd		fd²
80-84	2	50	+5	10	+54	50
75-79	3	48	+4	12		48
70-74	6	45	+3	18		54
65-69	6	39	+2	12		24
60-64	2	33	+1	2		2
55-59	10	31	0	0		0
50-54	9	21	-1	9	-39	9
45-49	8	12	-2	-16		32
40-44	2	4	-3	-6		18
35-39	2	2	-4	-8		32
i=5	**N=50**				**□ fd=15**	**□ fd²=269**

मध्यमान = 58.5 मानक विचलन = 9.069

सारणी सं0 2

छात्राओं का मध्यमान व मानक विचलन

CI	f	Cf	d	fd		fd²
80-84	3	50	+3	9	+28	27
75-79	3	47	+2	6		12
70-74	13	44	+1	13		23
65-69	9	31	0	0	-66	0
60-64	6	22	-1	-6		6
55-59	3	16	-2	-6		12
50-54	5	13	-3	-15		45
45-49	3	8	-4	-12		48
40-44	3	5	-5	-15		75
35-39	2	2	-6	-12		[illegible]
i=5	**N=50**				**□ fd=15**	**□ fd²=310**

मध्यमान = 63.2 मानक विचलन = 2-1

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Shikharganj, Jaunpur

उद्देश्य- माध्यमिक स्तर के छात्रों का हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन।

परिकल्पना-1

माध्यमिक स्तर के छात्रों का हिन्दी विषय में उपलब्धि सरकारात्मक होगी।

इस परिकल्पना के निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए 'हिन्दी विषय में उपलब्धि परीक्षण' द्वारा प्रयागराज शहर के काली प्रसाद इण्टर कालेज के हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन किया गया। छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान निकाला गया है। प्राप्त परिणाम का निष्कर्ष इस प्रकार है।

छात्रों के उपलब्धि का अध्ययन-

सारणी संख्या-3

क्र. सं.	चयनित छात्रों की संख्या	मध्यमान	छात्रों की संख्या	प्रतिशत	सकारात्मक/ नकारात्मक
1.	50	58.5	26	52%	सकारात्मक
			24	48%	नकारात्मक

सारणी संख्या 3 में दिये गये परिणाम से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान 58.5 है। 52 प्रतिशत छात्रों ने मध्यमान से ऊपर अंक प्राप्त किये है तथा 48 प्रतिशत छात्रों ने मध्यमान से नीचे अंक प्राप्त किये है मानक के अनुसार मध्यमान से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की उपलब्धि सकारात्मक है तथा मध्यमान से नीचे अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की उपलब्धि नकारात्मक है। इससे पता चलता है कि सकारात्मक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत अधिक है अतः हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक है।

उद्देश्य- माध्यमिक स्तर के छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन।

परिकल्पना-2

माध्यमिक स्तर के छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि सरकारात्मक होगी।

इस परिकल्पना के निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए 'हिन्दी विषय में उपलब्धि परीक्षण' द्वारा प्रयागराज शहर के राजकीय बालिका इण्टर कालेज के हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन किया गया। छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान निकाला गया है। प्राप्त परिणाम का निष्कर्ष इस प्रकार है।

Co-ordinator I.Q.A.C. Raghuveer Mahavidyalaya

Principal Raghuveer Mahavidyalaya ... Jaunpur

छात्राओं के उपलब्धि का अध्ययन-

सारणी संख्या-4

क्र.सं.	चयनित छात्राओं	मध्यमान	छात्राओं	प्रतिशत	सकारात्मक/

	की संख्या		की संख्या		नकारात्मक
1.	50	63.2	31	62%	सकारात्मक
			19	38%	नकारात्मक

सारणी संख्या 4 में दिये गये परिणाम से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान 63.2 है। 62 प्रतिशत छात्राओं ने मध्यमान से ऊपर अंक प्राप्त किये है तथा 38 प्रतिशत छात्राओं ने मध्यमान से नीचे अंक प्राप्त किये है मानक के अनुसार मध्यमान से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले छात्राओं की उपलब्धि सकारात्मक है तथा मध्यमान से नीचे अंक प्राप्त करने वाले छात्राओं की उपलब्धि नकारात्मक है। इससे पता चलता है कि सकारात्मक अंक प्राप्त करने वाले छात्राओं का प्रतिशत अधिक है। अतः हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक है।

उद्देश्य- माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना-3

माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही होगा।

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए प्रयागराज शहर के राजकीय विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं से संकलित प्रदत्तों पर टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन का निष्कर्ष निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित है।

सारिणी संख्या 5

प्रतिदर्श	n	M	S.D.	D	σ_D	df	t	सारणीमान	सार्थकता स्तर
छात्र	50	58-5	9-069	2-786	2-11	98	1-32	$t_{.05}$=1.98	सार्थक अन्तर अस्वीकृत है।
छात्राएं	50	63-2	11-855					$t_{.01}$=2.36	

इस अध्ययन में df 98 पर सारणी 4.3 में टी का मान 0.05 जो सारणी के .05 व .01 सारणी के मान से कम है। अतः छात्रों एवं छात्राओं की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही होगा सारणी 3 तथा सारणी 4 के मध्यमान की तुलना करने पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि सारणी 4 का मध्यमान सारणी 4 के औसत से कम

Coordinator
I.Q.A.C.
Principal
Raghuveer ...
...Bhikharipur, Kat...
...nour

है। इसलिए यह स्वीकार किया गया कि हिन्दी विषय में छात्रों की उपलब्धि छात्राओं की उपलब्धि से कम है अतः यह परिकल्पना स्वीकार की गई की हिन्दी विषय के छात्र-छात्राओं के उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही होगा।

अध्ययन के निष्कर्ष-

निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ है-

- माध्यमिक स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक है।
- माध्यमिक स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक है।
- माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि की तुलना में सार्थक अन्तर नही है।

आगामी अध्ययन के सुझाव-

प्रस्तुत अध्ययन में छात्रों एवं छात्राओं के समुहों का चयन केवल छात्रों एवं छात्राओं के हिन्दी विषय में उपलब्धि को जानने के लिए ही किया गया है लेकिन हो सकता है कि यह उपलब्धि कई कारणों से प्रभावित हुई है जैसे माता-पिता का अभाव, सुविधायुक्त व सुविधारहित वातावरण आदि जिनको इस अध्ययन में सम्मिलित नही किया गया है। अतः आगामी अध्ययनों में इस बात की आवश्यकता है कि इस प्रकार के अन्य कारणों को भी ध्यान में रखा जये।

- हिन्दी विषय में उपलब्धि के अध्ययन के लिए आगामी अध्ययनों में छात्रों एवं छात्राओं के समूह के चयन के लिए और भी बड़े न्यादर्श को लिया जा सकता है।
- इसी प्रकार का अध्ययन माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
- यह अध्ययन केवल शहरी क्षेत्र की छात्रों एवं छात्राओं पर ही किया गया है ऐसा अध्ययन ग्रामीण छात्रों एवं छात्राओं पर भी किया जा सकता है।
- यह अध्ययन केवल हिन्दी विषय पर ही किया गया है इसे और अन्य विषय पर भी किया जा सकता है।

सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. बुच, एम0बी0, थर्ड सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन, वाल्यूम-1, नई दिल्ली : एन0सी0ई0आर0टी0, 1983, पृ0सं0 648.
2. बुच, एम0बी0, फोर्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन, वाल्यूम-2, नई दिल्ली : एन0सी0ई0आर0टी0, 1983, पृ0सं0 1274-1302
3. एस0सी0ई0, रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग, फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 1988, वाल्यूम-2.
4. सिंह सत्वीर, अरोरा ओ0पी0 और त्रेहनमंजू, फिफ्थ सर्वे आफ एजुकेशनल रिसर्च, 1990, वाल्यूम-2
5. सिंह, आर0डी0, एस0पी0 वर्मा, एस0के0, फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 1991, वाल्यूम-2
6. पटनायक, एस0पी0 एवं मोनाहन, ए0के0, सिक्सथ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 1993, वाल्यूम-1
7. हाथी, उरमिल एच0, सिक्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च (1992-2000), 1994, वाल्यूम-1

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Bhikharipurkala, Jaunpur

8. सिंह, बसन्त बहादुर, सिक्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च (1992-2000), 1994, वाल्यूम-1
9. गुप्त, रामबाबू, भारतीय शिक्षा का इतिहास, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, संस्करण-प्रथम, 1995, पृष्ठ सं0 15-23
10. गुप्ता, एस0पी0, शिक्षा का ताना-बाना, नई दिल्ली : शारदा पुस्तक भवन, संस्करण-द्वितीय, 1998, पृष्ठ संख्या- 253-260
11. जैन, डॉ0 बी.एम., रिसर्च मैथ्डोलॉजी: रिसर्च पब्लिकेशन्स, 2000, जयपुर
12. बुच, एम0बी0, सिक्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन, वाल्यूम-2, नई दिल्ली : एन0सी0ई0आर0टी0, 2000, पृ0सं0 1274-1302
13. गुप्ता एस0पी0, गुप्ता अलका, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान : शारदा प्रकाशन, 11 यूनिवर्सिटी रोड, प्रयागराज, 2003, पृष्ठ सं0 432
14. कपिल, एच0के0, अनुसंधान विधियाँ (व्यवहारिक विज्ञान में), आगरा एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, 2001, पृष्ठ सं0 37-39
15. चतुर्वेदी शिखा, "हिन्दी शिक्षण" आर0लाल बुक डिपो प्रकाशन, मेरठ, 2003, पेज नं0 3
16. गारेट, हेनरी, शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकीय के प्रयोग, नई दिल्ली : कल्याणी पब्लिकेशन, 2003, पृ0सं0 62
17. गुप्ता, एस0पी0, सांख्यिकीय विधियाँ, प्रयागराज शारदा पुस्तक भवन, 2003, पृ0सं0 203-233
18. लाल, रमन बिहारी, भारतीय शिक्षा का इतिहास मेरठ,रस्तोगी पब्लिकेशन्स, 2004, पृ0सं0 135-146
19. लाल रमन बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन्स, संस्करण सोलहवां, 2005, पृष्ठ सं0 1-25
20. भटनागर, आर0पी0 एवं भटनागर मीनाक्षी, शिक्षा अनुसंधान, मेरठ5 इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2005, पृ0सं0 116-141
21. माथुर एस0एस0, शिक्षा मनोविज्ञान, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, 2205, पृ0सं0 573-584
22. पाण्डेय, रामशकल, भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्यायें आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृ0 संख्या, 2006, 80, 99
23. सक्सेना, एन0आर0, फंडामेंडल ऑफ एजुकेशल रिसर्च, मेरठ, विनय रखेजा, 2006, पृ0सं0 358-369

डॉ0 अरुण कुमार मिश्र
शोध निर्देशक, असिस्टेन्ट प्रोफेसर
रंजना मिश्रा
शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षाशास्त्र विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bilkharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalay
Thalai, Bilkharipur, Kal
Jaunpur

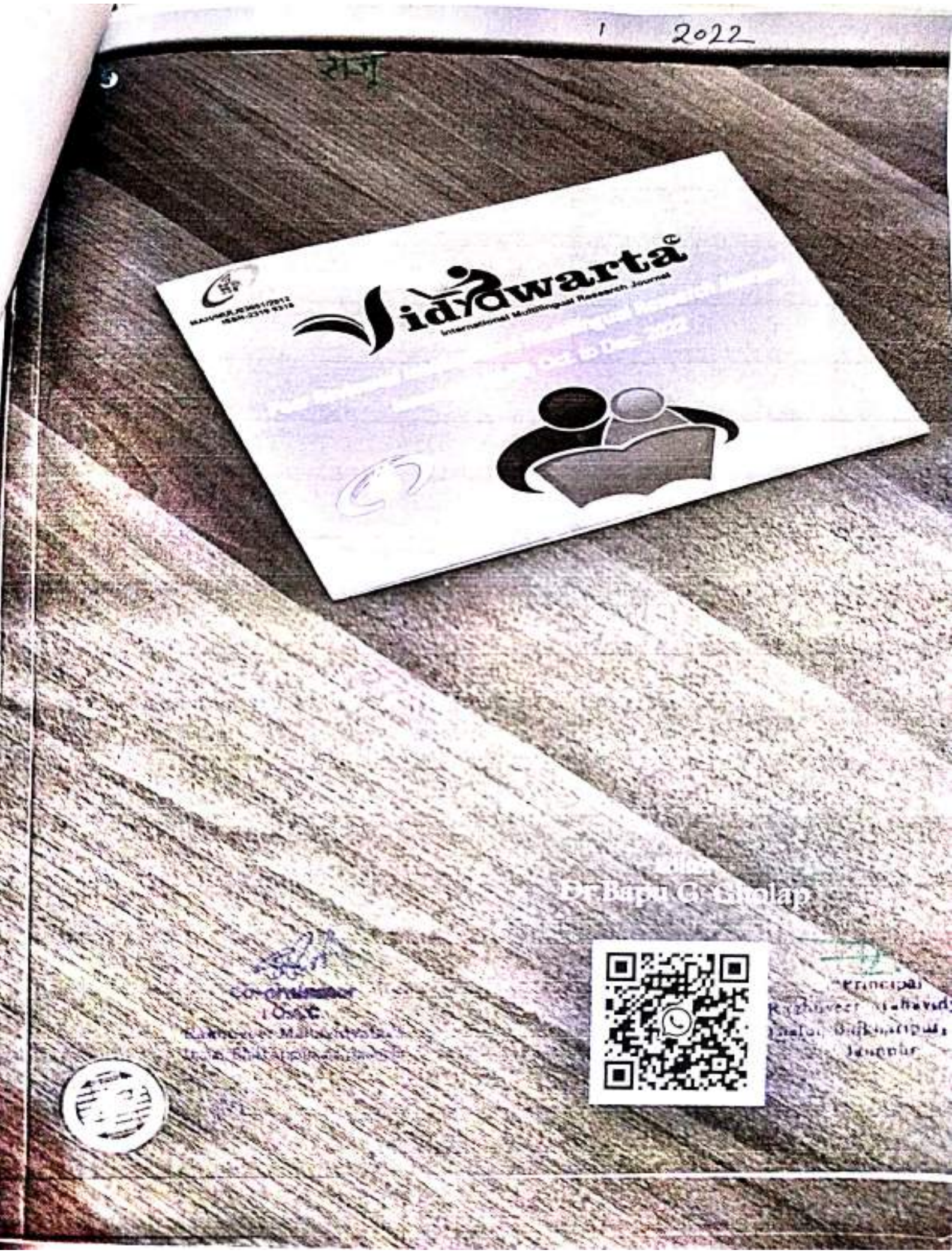
Vidyawarta
International Multilingual Research Journal

14) मराठी आणि इंग्रजी माध्यमांच्या माध्यमिक शाळांमध्ये राबविल्या जाणाऱ्या नाविन्यपूर्ण अभ्यासपूरक...
प्रा. डॉ.गोकुल शामराव डामरे, शेगांव ||78

15) मुस्लिम मराठी आत्मचरित्रे : चिकित्सक अभ्यास
शहनाज मुनीर शेख, शिरूर ||81

16) भारताच्या अंतर्गत सुरक्षेवर सांप्रदायिकतेचा प्रभाव
प्रा. डॉ. एन शेंडे पाटील, नवलनगर ता. जि. धुळे ||82

17) बुद्ध तत्वज्ञानातील अनित्यवाद
विद्याधर कुंडलीक खंदारे, औरंगाबाद ||89

18) 'काळे पाणी' या आत्मचरित्रात्मक कादंबरीची आशयअभिव्यक्ती वैशिष्ट्ये
डॉ. गामा मुकुंदराव सेलोकर, वडोदा, जि. नागपूर ||92

19) मारवाड़ में प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ : एक अध्ययन
इन्दुबाला, जयपुर ||97

20) भारत में महिलाओं को लैंगिक अपराधों के विरुद्ध संरक्षण
नरेश नागौरी, जोधपुर राजस्थान ||101

21) स्वतंत्र भारत में अनुसूचित जातियाँ : वर्तमान एवं भविष्य
—डॉ. निर्मल चक्रधर, बैहर, जिला—बालाघाट (म.प्र.) ||108

22) मधुदीप की कहानियों में निम्न वर्ग की आर्थिक दुर्बलताओं का चित्रण
डॉ. पंकज विरमाल, सुरभि डिण्डोरे, इन्दौर (म.प्र.) ||112

23) पं. सुधाकर शुक्ल के साहित्य में प्रकृति—चित्रण की प्रासंगिकता
संध्या शर्मा, दतिया (म.प्र.) ||115

24) शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक...
संजू देवी शुक्ला, डॉ. (श्रीमती) अमिता तिवारी, ग्वालियर (म.प्र.) ||119

25) संयुक्त व एकाकी परिवारों की लिंग—भेद सम्बन्धी अभिवृत्ति का....
मधुबाला पाठक, डॉ. (श्रीमती) अमिता तिवारी, ग्वालियर (म.प्र.) ||122

26) मानव जीवन एवं संगीत
डॉ. स्वाति गौर, डॉ. पवन कुमार शर्मा, दमोह (म.प्र.) ||125

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kal

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318
Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal
Oct. To Dec. 2022
Issue-44, Vol-09
0119

24

शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

संजू देवी शुक्ला
शोधार्थी, गृहविज्ञान
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ. (श्रीमती) अमिता तिवारी,
सह–प्राध्यापक,
शासकीय कमलराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

****

प्रस्तुत शोध पत्र में ''शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य ''शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना है।

आधुनिक युग में महिलाऐं पारिवारिक उत्तरदायित्व के साथ–साथ अपने व्यावसायिक दायित्वों का भी वहन कर रही है। प्रारम्भ से ही महिलाओं का प्रमुख दायित्व जिम्मेदारियों का निर्वाह करना है तथा बाल्यावस्था से युवावस्था तक उन्हें इसी अभिवृत्ति के विकास के लिये प्रेरित किया जाता है। परन्तु बदलते परिवेश में महिला शिक्षा, औद्योगीकरण एव एकाकी परिवार, महिला स्वतन्त्रता एवं समानता के उद्घोष के कारण महिलाएं भी अर्थोपार्जन के लिए निकल पड़ी है। आज हमारे देश में अनेक महिलाऐं उच्च पदों पर आसीन अपने कार्य का निष्पादन सफलतापूर्वक कर रही है।

कार्यकारी महिलाएँ :

कपूर (१९७०) के अनुसार ''जो महिलाएँ शिक्षण समाप्त करके गृहस्थी के कार्यों के साथ–साथ कोई व्यवसाय ग्रहण कर लेती है कार्यकारी महिलाएँ कहलाती है।''

समस्या के संबंध में अध्ययन के आधार पर सारांश निकलता है कि वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया बहुत तेजी से संचालन हो रही है। इस प्रक्रिया से समाज में सभी दिशाओं में परिवर्तन हो रहे है। इन परिवर्तनों से समाज की विभिन्न इकाईयों पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़े है। समाज की महत्त्वपूर्ण एवं आधार भूत इकाई परिवार है। परिवार की धुरी नारी है युग चाहे कोई भी रहा हो समाज का विकास नारी के विकास पर ही आधारित रहा है।

नारी विहीन समाज की कल्पना करना असम्भव है नारी न केवल परिवार की धुरी होती है अपितु पूरी पीढ़ी की निर्माता होती है। शिक्षा के प्रसार तथा आर्थिक दबाव के कारण महिला रोजगार की तरफ बढ़ी है। आज उनकी संख्या इतनी हो गई है कि कार्यकारी महिलाओं का स्वयं एक वर्ग बन गया है।

कामकाजी महिलाओं से तात्पर्य उन महिलाओं से है जो बढ़ती हुई आर्थिक आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में पारिवारिक आय की बढ़ोत्तरी में सहयोग देती है। इनमें मजबूर या विवश महिलाऐं ही नहीं बल्कि वे महिलाएं भी सम्मिलित है जो एक उपयोगी सामाजिक जीवन जीना चाहती है और परिवार की आय में वृद्धि चाहती है। राजगोपाल ने अपनी पुस्तक 'इंडियन वूमन इन दी न्यू एज' (१९३६) में लिखा है कि ''महिलाएं धीरे–धीरे यह महसूस करने लगी है कि इंसान के रूप में उनकी भी आकांक्षाएं है तथा उनके जीवन का लक्ष्य मात्र अच्छी माँ बन जाने से पूरा नहीं हो जाता बल्कि वे भी इस समाज की सदस्याएं है।'' रॉस ने अपने अध्ययन में यह और अधिक स्पष्ट करते हुए बतलाया कि –''पत्नी का वैतनिक काम धंधे में लगना अब समाज में अनुचित नहीं माना जाता। निःसंदेह इतनी संख्या में विवाहित मध्यम वर्गीय हिन्दू महिलाओं का बिना विरोध के नौकरी कर सकने का मुख्य कारण यह है कि परिवार के रहन–सहन का स्तर बनाये रखने के लिए पत्नी भी पारिवारिक आर्थिक समस्या को समझने लगी है।''

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalal, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalal, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

शहरी क्षेत्रों में कार्यकारी महिलायें कार्यालय व संस्थाओं में कार्य करती है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र की महिलायें ग्रामों में ही रहकर खेतों, मजदूरी आदि कार्य करती है।

कार्य संतुष्टि

डॉ. ज्योति प्रसाद के अनुसार "कार्य संतुष्टि का तात्पर्य किसी भी कार्य के सम्पन्न होने के बाद की उस दशा से है, जिसमें वह मानसिक संतुलन, प्रसन्नता तथा संतोष प्राप्त करता है। यह दशा से भविष्य में कार्य करने हेतु प्रेरणा प्रदान करती है, क्योंकि यह उसके जीवन का सुखद अनुभव है। यदि इस समय भी वह पुरस्कृत भी होता है तो उसकी संतुष्टि का स्तर और अधिक उन्नत हो जाता है।"

कार्य संतुष्टि एक जटिल संप्रत्यय है, जो बहुत हद तक मनोवृत्ति तथा मनोबल से संबंध और मिलता—जुलता है। किंतु सही अर्थ में कार्य संतुष्टि अपने निश्चित स्वरूप के कारण एक ओर मनोवृत्ति से भिन्न है तो दूसरी ओर मनोबल से। औद्योगिक मनोवैज्ञानिक ने कार्य संतुष्टि को दो अर्थों में परिभाषित करने का प्रयास किया।

कार्य संतुष्टि का सीमित अर्थ व्यवसाय कारक है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है, कि कर्मचारी के व्यवसाय से संबंधित कई विशिष्ट कारण है जिनमें पारिश्रमिक, पर्यवेक्षण, कार्य, परिस्थिति, पदोन्नति के अवसर, नियोक्ता के व्यवहार आदि मुख्य है। इन विशिष्ट कारक के प्रति कर्मचारियों की मनोवृत्ति जिस हद तक अनुकूल होती है उसी हद तक कार्य संतुष्टि भी सम्भावित होती है, किंतु यह परिभाषा कार्य संतुष्टि के जटिल स्वरूप को स्पष्ट करने में पूरी तरह सफल नहीं है, क्योंकि कार्य संतुष्टि का संबंध व्यावसाय कारकों के अतिरिक्त अन्य कारकों से भी है। अतः केवल व्यवसाय कारकों के संदर्भ में ही कार्य संतुष्टि को परिभाषित करना युक्तिसंगत नहीं है।

व्यावसायिक अभिवृत्ति

"कार्य या व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बद्ध आवश्यकताओं सफलता के लिए वांछित दशाओं लाभों तथा हानियों क्षतिपूर्ति तथा विकास के अवसरों का व्यक्ति का ज्ञान ही व्यवसायिक अभिवृत्ति कहलाता है।" व्यक्ति को अपने जीवन में अनेक निर्णय लेने पड़ते है, अनेक विकल्पों में से किसी एक या कुछ एक का अपने लिए उपयुक्तता तथा भविष्य संबंधी सम्भावनाओं के आधार पर चयन करना होता है। व्यक्ति के जीवन का अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्णय होता है। मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि में व्यावसायिक अभिवृत्ति कोई बिन्दु नहीं है, एक विकासात्मक प्रक्रिया है तथा अनुक्रमणीय होती है। एक बार लिएगए निर्णय के प्रभाव को भविष्य के दूसरे प्रकार के निर्णयों या अन्य किसी प्रकार से पूर्णतः लुप्त नहीं किया जा सकता है। व्यावसायिक अभिवृत्ति एक वैकल्पिक प्रक्रिया है जो बहुधा लगभग दस वर्षों के अन्तराल में संपन्न होती है। उत्तर बाल्यावस्था में किसी समय आरम्भ होकर आरम्भिक युवावस्था तक पहुंचकर व्यावसायिक अभिवृत्ति की प्रक्रिया सम्पन्न होती है। इस प्रकार किशोरावस्था की पूरी अवधि व्यावसायिक अभिवृत्ति की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।

प्रस्तुत शोध पत्र में व्यवसायिक अभिवृत्ति के आयाम—व्यवसायिक आकांक्षा स्तर, नौकरी चुनाव में प्रभाव और पैसा, नौकरी पसंद में दूसरों का उपकार, नौकरी प्रदर्शन में नौकरी जागरूता, व्यवसायिक पसंद में अनिश्चयता, व्यावसायिक समझ, स्वतंत्रता की कमी, व्यवसायिक रुचि कारक परिवर्तन आदि कारकों का अध्ययन किया गया है।

शोध के उद्देश्य

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे है—

१. शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि का अध्ययन करना।

२. शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की व्यवसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं :

शोधार्थी ने अपने इस शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाई है—

१. शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की व्यवसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जावेगा।

२. शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जावेगा।

३. शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thana, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thana, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318
Vidyawarta
Peer-Reviewed International Journal
Oct. To Dec. 2021
Issue-44, Vol-09

की कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :

इस शोध समस्या के न्यादर्श के चुनाव हेतु प्रथम चरण में सुजानगंज ब्लॉक की कुल २०० शहरी (५०) एवं ग्रामीण (५०) कार्यकारी महिलाओं को सम्मिलित किया गया जो विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित है जैसे डॉक्टर, नर्स, शिक्षिका, आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री तथा ऑफिस में कार्य करने वाली महिलाओं का चयनित किया गया।

शोध उपकरण :

तथ्यों का संग्रहण करने हेतु शोधार्थी द्वारा व्यावसायिक अभिवृत्ति के लिए डॉ. मंजु मेहता तथा कार्य संतुष्टि के लिए डॉ. अमर सिंह एवं डॉ. टी.आर शर्मा की मापनी का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण :

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया है—

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी—टेस्ट
- सार्थकता स्तर

निष्कर्ष :

परिकल्पना १ : शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्र. १

व्यावसायिक अभिवृत्ति	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी मान
शहरी कार्यकारी महिलाएं (५०)	[illegible]	[illegible]	९८	[illegible]
ग्रामीण कार्यकारी महिलाएं (५०)	[illegible]	[illegible]		

९८ स्वतंत्राश पर 'टी' का प्रामाणिक मान ०.०१ सार्थकता स्तर पर २.६३ होता है तथा ०.०५ सार्थकता स्तर १.९९ होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान १८.६१ इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

तालिका क्र. २

परिकल्पना २—शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

कार्य संतुष्टि	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी मान
शहरी कार्यकारी महिलाएं (५०)	[illegible]	[illegible]	९८	५.६६
ग्रामीण कार्यकारी महिलाएं (५०)	[illegible]	[illegible]		

९८ स्वतंत्राश पर 'टी' का प्रामाणिक मान ०.०१ सार्थकता स्तर पर २.६३ होता है तथा ०.०५ सार्थकता स्तर १.९९ होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान ५.६६ इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

तालिका क्र. ३

परिकल्पना ३ : शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यावसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

कार्य संतुष्टि एवं व्यावसायिक अभिवृत्ति	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी मान
शहरी कार्यकारी महिलाएं (१००)	[illegible]	[illegible]	१९८	[illegible]
ग्रामीण कार्यकारी महिलाएं (१००)	[illegible]	[illegible]		

१९८ स्वतंत्राश पर 'टी' का प्रामाणिक मान ०.०१ सार्थकता स्तर पर २.६१ होता है तथा ०.०५

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai Bhikharipur, Kala, Jaunpur
Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

सार्थकता स्तर १.९८ होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान १४.०४ इन दोनों से अधिक है अत: सार्थक है। अर्थात् शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

मुख्य निष्कर्ष :

शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया जाता क्योंकि महिलायें संवेदनशील होती है चाहे वह शहरी हो या ग्रामीण हो संतुष्टता एवं असंतुष्टता का भाव उनमें एक जैसा ही रहता है। व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति भी दोनों में एक सी पाई जाती है क्योंकि वे कार्यकारी भले ही हो परन्तु गृहणी भी होती है जिनका प्रथम दायित्व परिवार को साथ लेकर चलना है। इसीलिए शहरी एवं ग्रामीण कार्यकारी महिलाओं की कार्यसंतुष्टि एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति में अन्तर नहीं पाया जाता है।

सुझाव :

१. कार्यकारी महिलाओं को दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ता है परंतु पारिवारिक सहयोग उन्हें कभी–कभी नहीं मिल पाता है जिससे वे हताश हो जाती है। इसलिए उन्हें परिवार द्वारा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

२. कार्यकारी महिलायें घर एवं बाहर कार्य करके थक जाती है तथा तनावग्रस्त भी हो जाती है इस हेतु परिवारजनों को उनका ध्यान रखना चाहिए।

३. कार्यालय में पुरुषों की तुलना में महिलाएं पूरी तरह से सहज नहीं हो पाती है। पुरुषों को उन्हें सहयोग प्रदान करना चाहिए।

संदर्भ :

- बोहरा, आशारानी (१९८९). ''महिलायें और स्वराज्य'', प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- डॉ. राजकुमार (२००५). ''नारी के बदले आयाम'', अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।
- दुबे, श्यामाचरण (१९६३). ''वूमेन एण्ड वूमैन रोल इन इण्डिया, वूमेन इन न्यू एशिया, ब्रदर्स इ. वार्ड पेरिस यूनेस्को।
- दत्ता, नारायण (२००७). ''महिला अधिकार एवं सशक्तीकरण: एक अध्ययन'' महिला विधि भारतीय, जनवरी–जून २००७, अंक ५०–५१, नई दिल्ली
- गुप्ता सुभाषचन्द्र, (२००४). ''कार्यशील महिलाएँ एवं भारतीय समाज'', अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

25

संयुक्त व एकाकी परिवारों की लिंग–भेद सम्बन्धी अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

मधुबाला पाठक
शोधार्थी, गृहविज्ञान
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ. (श्रीमती) अमिता तिवारी,
सह–प्राध्यापक,
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

****

प्रस्तुत शोध पत्र में संयुक्त व एकाकी परिवारों की लिंग–भेद सम्बन्धी अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। वर्तमान में महिलाओं की उपेक्षा करके उनके अधिकारों से विलग करके लम्बे समय तक नहीं रखा जा सकता है, क्योंकि इससे चतुर्दिक हानि होती है। इसलिए अब महिलाओं की समानता की पुरजोर वकालत की जा रही है। अब लिंगीय असमानता को विभेदक रूप में स्वीकार न करके समाहारक रूप में स्वीकार किया जा रहा है लिंग तथा लैंगिकता विषयी मुद्दों का महत्व व्यक्ति के स्वमनोविज्ञान से लेकर सामाजिक सरोकारों से भी जुड़ा हुआ है जिसका निरूपण इस शोध प्रबन्ध में किया गया है।

परिवार तथा समाज में लिंगों के बीच स्थिति शारीरिक एवं जैविक अन्तर सार्वभौमिक है। इन दोनों में ये अन्तर सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक माने गये हैं। समाज द्वारा इन्हीं सब उन्तरों का लाभ उठाकर एवं जोड़–तोड़ की प्रक्रिया अपना कर नारी का शोषण किया जाता है और जिसकी परिणति स्त्रियों में असामनता की भावना, असुरक्षा की भावना एवं शक्ति को पुरुष तक ही केन्द्रित करने की प्रवृत्तियों के रूप में समाज में सर्वत्र दिखाई देती है।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai Bi... Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Malikhanpur, Kerakat
Jaunpur

2022

Year : 8, Volume : 16 Jan. - Dec. - 2022 ISSN : 2349-3844
Approved by UGC Journal No - 64586

Shodh Martand

SHODH MARTAND

A PEER REVIEWED & REFEREED INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES

Editor
Dr. Vinay Kumar Tripathi

Co-ordinator
I.Q.A.C.
aghuve... ...havidyalaya
...alai, ...rkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer ...vidyaly.
..., ...haripur, Kal.
Jaunpur

Published by :
Raghuveer Mahavidyalaya
Raghuveer Nagar, Thaloi, Machhalishahar
Jaunpur U.P. (India) - 222143

www.raghuveermahavidyalaya.org http://www.facebook.com/shodh.martand http://twitter.com/shodhmartand

संत कवि कबीर की सामाजिक चेतना

डॉ० अल्ताफ
(एसोसिएट प्रोफ़ेसर)
शोध निर्देशक
हिन्दी विभाग
शिब्ली नेशनल पी०जी० कॉलेज, आजमगढ़
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

मयंक तिवारी
शोधार्थी (हिन्दी)
शिब्ली नेशनल पी०जी० कॉलेज, आजमगढ़
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर

निर्गुण काव्यधारा के महान कवि कबीर दास का भक्तिकाल में सर्वोच्च स्थान है। भारत भूमि अनेक रत्नों की खान रही है। उन्हीं महान रत्नों में एक थे संत कबीर। कबीर की भाषा सधुक्कड़ी की तथा उसी भाषा में कबीर समाज में व्याप्त अनेक रूढ़ियों का खुलकर विरोध किया है।

तत्कालीन समाज में हिन्दुओं की तीर्थ–यात्रा एवं मुसलमानों की हज यात्रा भी प्रचलित थी। समाज में अनेक दुष्कर्म करके भी लोग तीर्थ या हज करके पापों से पूरी तरह निवृत्त मान बैठते थे। इससे लोग मोक्ष की प्राप्ति का भी अनुभव करते थे। लोगों की मान्यता थी कि किसी भी तीर्थ पर जाकर वहाँ स्नान ध्यान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। संत कवि इस आडम्बर से ऊब चुके थे। कबीर यह देखकर आश्चर्य व्यक्त करते हैं, कि लोगों ने मुक्ति को इतना सस्ता समझ रखा है और पानी में नहाकर और राम–नाम को रटकर ही उसे उड़ा लेना चाहते हैं। ऐसे प्रश्नों की निरर्थकता पर कबीर कह उठते हैं–

तीरथ करि–करि जग मुवा, डूँधै पाँणी न्हाइ।
रामहि राम जपंतड़ाँ, काल घसीट्याँ जाइ।।[1]

संत कवियों का विचार था कि जिस प्रकार ब्रह्म शरीर के भीतर है, वैसे ही तीर्थ भी शरीर के भीतर है। अपने शरीर के अंदर स्थित मनःस्थितियों को पवित्र रखना ही तीर्थ के समान है। रवीन्द्र कुमार सिंह के अनुसार 'भला यह कैसे उपहास की बात थी। वास्तव में, तीर्थाटन तो

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhiktha Sarkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Jaunpur

विषैली लता के समान है जिसका न कोई मूल है और जिसमें न कोई सार है। यदि मन में सच्चाई नहीं है और हृदय में वासना की अग्नि धधक रही है, तो तीर्थाटन से कुछ नहीं होगा।'

संत कवियों ने तीर्थ–यात्रा को जीवन के विरुद्ध माना है। संतों द्वारा धर्म के ठेकेदार के पद पर कब्जा जमाए पुजारियों और पंडों पर कड़ा प्रहार किया गया है। संतों ने घूम–घूमकर तीर्थ यात्रा के विरुद्ध प्रचार किया। रविन्द्र कुमार सिंह का मत है कि– 'कवियों ने तीर्थ–यात्रा के विरुद्ध जो उपदेश दिए हैं, उसके कुछ अन्य कारण भी थे। उस समय यातायात की कठिनाई के साथ–साथ देश में परिव्याप्त दीनता और अराजकता के कारण स्थान–स्थान पर लूट–मार होने लगी थी। मुस्लिम बादशाहों की धर्मान्धता के कारण भी यात्रियों को पीड़ित किया जाता था। इसीलिए संत कवियों ने गृहस्थी में रहकर ही ईश्वर उपासना करने के नियम को बताया। जब ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, केवल तीर्थ–यात्रा तक सीमित नहीं है, तो यहाँ–वहाँ भटकने की आवश्यकता ही क्या है? यदि तीर्थ स्थान के बाद भी मन की अपवित्रता बनी रहे, तो इसका क्या लाभ हुआ? यदि तीर्थ–यात्रा के बाद भी वही सामान्य मृत्यु का ग्रास बनना है तो यह सब व्यर्थ है–

'जोगी जती तपी संन्यासी बहु तीरथ भ्रमना।
लुंजित मुंजित मौनि जटा धरि अंत तऊमरना।।'

जो व्यर्थ तीर्थ–यात्रा को जाते हैं, ऐसे लोगों को संत दादू दयाल कहते हैं कि शरीर के द्वारा किये गये कर्मों को धोने के लिए तुम पवित्र तीर्थ–स्थानों पर जाया करते हो, किन्तु जो कर्म तुम वहां करते हो, उसे कहाँ धोओगे–

'काया कर्म लगाइ करि, तीरथ धोवै आइ।
तीरथ माह कीजिये, सो कैसे करि जाइ।।'

तीर्थाटन में तल्लीन व्यक्ति को कभी स्वर्ग का ज्ञान नहीं हो सकता। यदि देखा जाय तो सच्चा स्नान गुरु की सेवा है। गुरुनानक देव ने तो स्पष्ट रूप से कह दिया है कि कठोर तप, दया आदि करने वाले को तो भले ही थोड़ा पुण्य मिल जाए, परन्तु प्रभु के नाम का एक कण भी उसके लिए अधिक श्रेयस्कर है। नानक कहते हैं–

तीरथ तपु दइआ दतु दानु। जे को पावै तिल का मानु ।।
सुणिआ मनिआ मनि कीता भाउ ।। अंतरगति तीरथि मलि नाउ।।'

मध्ययुगीन समाज में बहुप्रचलित उपासना रूपों में मूर्ति–पूजा का स्थान प्रमुख था। मुल्ला और पंडितों ने ईश्वर को मंदिर–मस्जिद व मूर्तियों तक सीमित कर दिया था। ऐसी स्थिति में संतों ने जनता को इस बाह्याडम्बर से दूर रहने की सलाह दी। संतों का स्पष्ट मत था कि पत्थर की पूजा निरर्थक है। पत्थर को पूजने से भला ईश्वर कैसे मिल सकता? डॉ. केशनीप्रसाद चौरसिया के मतानुसार– "संतकालीन समाज की धार्मिक भावनाएँ रूढ़ और परम्परागत रहीं।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalal, Bhikharipatka, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalal, Bhikharipur, Jaunpur

सामान्य जनता विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों में फंसकर हीन जीवन बिता रही थी। विजातीय धर्म परिवर्तन के बाद भी संस्कार ज्यों के त्यों बने रहे। अंधविश्वास एवं झाड़–फूंक आदि चमत्कारों के प्रति ममता शेष रही। अतः संतों ने मुसलमानों के रोजा, नमाज, हज, ताजिएदारी और हिन्दुओं के श्राद्ध, एकादशी, तीर्थ–व्रत, मन्दिर आदि सबका तीव्र विरोध किया और दोनों धर्मों की इस बाह्याडम्बर जनित अन्ध श्रद्धा के लिए तीव्र भर्त्सना की।' मूर्ति पूजा जैसे विरोध को लेकर कबीर भ्रम विधीसण की अंगर में कहते हैं–

'पाँहिन फूंका पूजिए, जे जनम न देई जाब।
आंधा नर आसामुखी, यौं ही खोवै आब।।'

कबीर बड़े बेबाक तरीके से पूजा पद्धति का खंडन करते हैं। पत्थर का देव स्थान है। और उसमें पत्थर की ही प्रतिमा स्थापित की गयी है। पूजने वाला भी अन्धा है। ऐसी पूजा पद्धति से तो किसी सिद्धि प्राप्ति की आशा तो कत्तई नहीं रखनी चाहिए। कबीर अपने पद के माध्यम से सम्बोधित करते हुए कहते हैं–

'जो पाथर को कहिते देव। ताकी बिरथा होवै सेव ।।
जो पाथर की पाई–पाई तिस की घाल अजाई जाई।।'

सरल और सच्चा जीवन व्यतीत करने वाले संतों और भक्तों ने सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के विपरीत जो आचरण देखा है उसका बराबर विरोध किया है। संत साहित्य लोक तथा समाज से गहन रूप में संयुक्त रहा है। संतों ने इस बात का बखूबी तरीके से प्रत्यक्ष अनुभव किया था कि किसी भी प्रकार का कर्मकांड हो लोक जीवन को किसी प्रकार की भावात्मक प्रेरणा नहीं देता। बल्कि यह कह सकते हैं कि लोक इन रुढ़ियों और कर्मकांड जैसे अंधविश्वासों को ढोता आ रहा है। डॉ. भगीरथ मिश्र इस बात का जिक्र करते हुए कहते हैं कि 'असत्य पर आधारित रुढ़ियों, पाखंडों और आडम्बरों से प्रथम तो सामाजिक चेतना कुंठित होती है और भीरता आती है, दूसरे आत्मविश्वास का भाव घटता है और तीसरे पारस्परिक भेदभाव बढ़ता है। यदि समाज के अंतर्गत इस प्रकार के आडम्बर आ गये हो, तो उनको दूर करना पहला काम है, क्योंकि उनके दूर किये बिना विभिन्न वर्गों और समुदायों का भेद–भाव नहीं मिट सकता।' ऐसे आडम्बरों और पाखंडो का खंडन संत कवियों ने स्थान–स्थान पर किया है।

> समाज में अनेक दुष्कर्म करके भी लोग तीर्थ या हज करके पापों से पूरी तरह निवृत्त मान बैठते है।
>
> यदि तीर्थ स्थान के बाद भी मन की अपवित्रता बनी रहे, तो इसका क्या लाभ हुआ? यदि तीर्थ–यात्रा के बाद भी वही सामान्य मृत्यु का ग्रास बनना है तो यह सब व्यर्थ है।
>
> संत कवियों का विचार है कि अपने शरीर के अंदर स्थित मनःस्थितियों को पवित्र रखना ही तीर्थ के समान है।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, ...
Jaunpur

धर्म और समाज दोनों में भेद–भाव डालने वाली तथा दिखावेपन की बातों का संत कवियों ने तीव्र विरोध किया है। वे माला लेकर उस जाप का विरोध करते हैं जिसमें मन इधर–उधर फिरता है और उस नमाज की भी निंदा करते हैं जो हृदय के कपट–भाव और जीव हिंसा और हत्या को दूर नहीं कर सकती है। ईश्वर को मन्दिर, मस्जिद या मूर्ति में ही केन्द्रित कर केवल वहीं जाने पर धर्म–भाव को मन में लाना और अन्य स्थानों पर अत्याचार और पाप करना, सत्य व्यवहार से दूर है। अगर हम यथार्थ में देखें तो ये धर्माडम्बर हमें झूठा मार्ग बताते हैं।

मध्ययुगीन समाज में आडम्बर और ढोंगी व्यवस्था को लेकर रवीन्द्र कुमार सिंह कई प्रश्न खड़े करते हैं। उनके कथनानुसार– 'जो मूर्ति–पूजा में अपना समय लगाते हैं, उन्होंने तो अपनी मूल–पूंजी भी नष्ट कर डाली। जब ईश्वर का निवास हृदय के भीतर भी है, तो बाहर जाने का क्या लाभ? अतः मूर्तियों का चरणामृत पीना या उनका पूजन करना, सब व्यर्थ है। जो स्वनिर्मित मूर्ति को संसार का रचयिता, स्रष्टा और नियंता समझ बैठा है, उस जैसा मूर्ख कौन हो सकता है। किन्तु सच बात यह है कि मध्ययुगीन समाज ऐसे ही अन्धकार में डूब चुका था।'' मध्ययुगीन समाज में फैले खोखले लोकाचार और रुढ़ियों पर संतों ने तीव्र व्यंग्य किये हैं। संत दरिया का यहाँ उदाहरण देना समीचीन लगता है। विज्ञान द्वारा यह प्रमाणित है कि जो वस्तु निर्जीव है उसमें जीवन की कल्पना करना व्यर्थ है। इसी बात को लेकर संत दरिया लोगों की मानसिकता बदलने की बात करते हैं। वे समझाते हैं कि जो मूर्ति न कुछ खाती है और न बोलती है, उसकी पूजा करने से कुछ होने जाने वाला नहीं है।

मध्यकालीन समाज में जहाँ एक तरफ निर्गुण मतावलंबियों ने मूर्ति–पूजा का जोरदार खंडन किया है, वहीं दूसरी तरफ कर्मकाण्डियों एवं ढोंगियों के लिए समुचित समाधान की व्यवस्था भी कर दी है। ऐसे लोगों के लिए संतों ने साकारोपासना का मार्ग बतलाया। संतों ने बतलाया की यदि पूजा अनिवार्य ही है, तो उसके बदले साधुओं की पूजा कीजिये, क्योंकि कम–से–कम वे बोलते भी हैं तथा अनुभव करने की क्षमता भी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि समस्त संत कवियों में कबीर एक ऐसे क्रांतिकारी योद्धा हैं जिसने मूर्ति पूजा पर सबसे तीव्र प्रहार किया है। कबीरदास कहते हैं–

'जेती देख आत्मा, वेता सालिगराम।
साधू प्रतपि देव हैं, नहीं पावर सू कौम।।'

कबीर की कहन क्षमता इतनी मारक है की बड़ी ही सहजता से वे न कहते हुए भी सब कुछ कह डालते हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी इस बात को व्याख्यायित करते हैं– 'सच पूछा जाए तो आज तक हिन्दी में ऐसा जबरदस्त व्यंग्य लेखक पैदा ही नहीं हुआ है। उनकी साफ चोट करने वाली भाषा, बिना कहे भी सब कुछ कह देने वाली शैली और अत्यंत सादी किन्तु

Co-ordinator
IQAC
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Shikharpur, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Shikharpur, K

अत्यंत तेज प्रकाशन–भंगी अनन्य साधारण है। हमने देखा है कि बाह्याचार पर आक्रमण करने वाले संतों और योगियों की कमी नहीं है, पर इस कदर सहज और सरस ढंग से चकनाचूर करने वाली भाषा कबीर के पहले बहुत कम दिखाई दी है।'

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची :–

1. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन
2. श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली .
3. डॉ० पारसनाथ तिवारी, कबीरवाणी संग्रह
4. माता प्रसाद, कबीर ग्रन्थावली
5. डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का उद्‌भव

इन्टरनेट एवं वेबसाइट

1. Shodhganga@inflibnet
2. www.wikipedia.org
3. https://www.google.com

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer [illegible]
[illegible]
Jaunpur

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

2023

शैक्षणिक तनाव के कारण तथा इसका बच्चो पर प्रभाव

[1]डॉ. अतुल कुमार दुबे और [2]मनोज कुमार
[1]सहायक प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान (भारत)
[2]शिक्षा शास्त्र विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान (भारत)

सार: शैक्षिक तनाव से हमारा आशय विभिन्न शैक्षिक परिस्थितियों से है जिनमें विद्यालय जाना, कक्षा में बैठना, गृहकार्य करना, परीक्षा की तैयारी करना तथा परीक्षा के परिणाम को लेकर तनाव करने से है। शैक्षणिक तनाव को एक छात्र की मनोवैज्ञानिक स्थिति के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो स्कूल के वातावरण में निरंतर सामाजिक और आत्म-लगाए गए दबाव के परिणामस्वरूप होता है जो छात्र के सिखने, पढ़ने, सोचने और समझने की छमता पर असर पड़ता है और ये भी अनुमान लगाया गया है कि 10-30% छात्र अपने शैक्षिक करियर के दौरान कुछ हद तक शैक्षिक तनाव का अनुभव करते हैं। छात्रों के बीच समायोजन , तनाव और उपलब्धि के साथ भावनात्मक बुद्धिमता के संबंध का अध्ययन इस शोध में भावनात्मक बुद्धिमता स्वतंत्र चर है जहाँ तनाव , समायोजन और उपलब्धि आश्रित चर हैं जो भावनात्मक बुद्धिमता पर निर्भर करते हैं। भावनात्मक बुद्धिमता का संबंध वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के तनाव , समायोजन और शैक्षणिक उपलब्धि के साथ देखा गया। यह देखा गया कि भावनात्मक बुद्धिमता का आश्रित चरों से कोई संबंध है या नहीं। भावनात्मक बुद्धिमता मूल रूप से व्यक्तित्व के दो प्रमुख पहलुओं यानी भावनाओं और संज्ञानात्मक आयामों से संबंधित है। यह शोध उन छात्रों की पहचान करने में मदद करता है जिनकी भावनात्मक बुद्धिमता कम है और जिसके कारण वे स्कूल के वातावरण में कुसमायोजित , कम तनावग्रस्त और कम उपलब्धि प्राप्त करने वाले बन जाते हैं , उनके भावनात्मक बुद्धिमान व्यवहार का अध्ययन किया जा सकता है ताकि वे खुद को स्कूल और सामाजिक वातावरण में समायोजित कर सकें।

कुंजी शब्द: तनाव समायोजन , छात्र उपलब्धि , भावनात्मक संबंध

प्रस्तावना: हम एक नई सदी की शुरुआत में हैं और बुद्धि और सफलता उस तरह के विचार नहीं हैं जैसे वे पहले थे। बुद्धि के नए सिद्धांत पेश किए गए हैं और धीरे-धीरे पारंपरिक सिद्धांत की जगह ले रहे हैं। (1) न केवल उनकी तर्क क्षमता , बल्कि उनकी रचनात्मकता , भावना और पारस्परिक कौशल भी पूरे छात्र चिंता का केंद्र बन गए हैं। मल्टीपल इंटेलिजेंस थ्योरी को हॉवर्ड गार्डनर (1983) और इमोशनल इंटेलिजेंस थ्योरी मेयर एंड सोल्वे (1990) और फिर गोलेमैन (1995) द्वारा पेश किया गया है। केवल बुद्धि ही सफलता का एकमात्र उपाय नहीं है , भावनात्मक बुद्धिमता ; सामाजिक बुद्धि और भाग्य भी व्यक्ति की सफलता और समायोजन में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं।

शैक्षणिक तनाव के कारण

Co-ordinator
IQAC
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur Kala
Jaunpur

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
ISSN No. 2394-0573 | Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

1. परीक्षा अवधि परीक्षाओं के इस दौर की मांग, जिसका व्यक्तिगत स्तर पर और छात्र के पाठ्यक्रम में इतना अर्थ है इस श्रम की तीव्रता को भी बढ़ा सकता है। **तनाव।** यह परिणामों द्वारा चिह्नित समय है। तनाव न केवल अस्थायी संदर्भ से संबंधित हो सकता है, बल्कि यह भी कि व्यक्ति इस अवधि में कैसे रहता है।

2. एक या अधिक विषयों में कठिनाइयाँ ऐसा हो सकता है कि एक छात्र को एक या एक से अधिक अध्ययन विषयों की सामग्री को समझने में काफी कठिनाई का अनुभव हो। इस मामले में, छात्र को एक कठिनाई का अनुभव होता है जिसे समय के साथ बनाए रखा जाता है, जो अंत में स्वयं को प्रभावित कर सकता है **आत्मविश्वास.** इस मामले में, छात्र को इस विषय के लिए समर्पित अध्ययन, ध्यान और प्रयास का स्तर कई गुना बढ़ जाता है।

3. टीम वर्क में कठिनाइयाँ अकादमिक अनुभव न केवल व्यक्तिगत काम में समेकित होता है, बल्कि उन परियोजनाओं के मामले में दूसरों के सहयोग से भी होता है जो एक टीम के रूप में किए जाते हैं। जब मुश्किलें आती हैं संचार, इस परिदृश्य में सहचर्य की कमी है या नायक की ओर से भागीदारी की कमी है, जो टीम के कुछ सदस्यों को काम का एक अधिभार सौंप सकता है, यह परिस्थिति उन लोगों में भी तनाव पैदा कर सकती है जो इसके साथ असहज महसूस करते हैं यह अनुभव जो आपकी उम्मीदों को तोड़ता है। कठिनाइयाँ व्यक्तिगत स्तर पर विभिन्न उदाहरणों तक भी विस्तारित हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, पाठ्यचर्या के एजेंडे में जो स्थापित है उसका पालन करने में कठिनाई क्योंकि यह तथ्य एक परिणाम उत्पन्न करता है।

4. आराम का अभाव विद्यार्थी के जीवन में अध्ययन एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि अध्ययन उस नायक के संपूर्ण वर्तमान का प्रतिनिधित्व करता है। आराम का समय भी उतना ही मूल्यवान है। जब यह संतुलन टूट जाता है और अध्ययन खाली समय भी घेर लेता है, तो छात्र को इस कारण तनाव के लक्षणों का अनुभव हो सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि तनाव एक ऐसी जीवनशैली से जुड़ा हो जो खुद का ध्यान नहीं रखती **स्वयं की देखभाल** नींद, व्यायाम और पोषण।

5. सार्वजनिक बोलने का डर बहुत से लोग इस डर के प्रति संवेदनशील महसूस कर सकते हैं जो न केवल पेशेवर जीवन में बल्कि अकादमिक जीवन में भी प्रकट हो सकता है। यह एक ऐसा अनुभव है जो उस अनुभव के अभ्यास से सीखा जाता है जो वास्तविकता के साथ मुठभेड़ पैदा करता है। पूरे शैक्षणिक चरण में, छात्र को अपने प्रशिक्षण के लिए विभिन्न अवसर खोजने का अवसर मिलेगा **कौशल** सार्वजनिक रूप से बोलने के लिए।

6. व्यक्तिगत परिवर्तन उन लोगों के निजी जीवन में घटनाएँ हो सकती हैं जो यह देखते हैं कि यह तथ्य उनके प्रेरणा के स्तर उनकी एकाग्रता और अध्ययन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को कैसे प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, एक घटना जिसमें व्यक्ति को एक शोक प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। एक दुःख को न केवल किसी प्रियजन की मृत्यु पर दुःख के साथ जोड़ा जा सकता है, बल्कि प्यार की कमी, एकतरफा प्यार या प्यार की कमी के साथ भी जोड़ा जा सकता है। **टूटने** एक महत्वपूर्ण लालसा।

इसलिए, शैक्षणिक स्तर पर तनाव के विभिन्न कारण होते हैं। उपाय खोजने में कारण की पहचान करना महत्वपूर्ण है। इसलिए, सामान्य जानकारी से परे, निजीकरण से उत्तर खोजना सुविधाजनक है।

Co-ordinator
IQAC.
Raghuveer Mahavidyalaya

237 Principal
Raghuveer Mahavidyalaya

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijeete.com/
ISSN No. 2394-0573 | Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

भावात्मक बुद्धि

भावात्मक बुद्धि का निर्माण करने पर आजीवन प्रभाव पड़ता है। कई माता-पिता और शिक्षक, युवा स्कूली बच्चों में संघर्ष के बढ़ते स्तर से चिंतित - कम आत्मसम्मान से लेकर शुरुआती दवा और शराब के उपयोग से लेकर अवसाद तक, छात्रों को भावनात्मक ज्ञान के लिए आवश्यक कौशल सिखाने में जल्दबाजी कर रहे हैं। और निगमों में, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भावनात्मक इंटेलिजेंस को शामिल करने से बेहतर सहयोग करने और अधिक प्रेरित करने में मदद मिली है, जिससे उत्पादकता और मुनाफे में वृद्धि हुई है, शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला है कि जो लोग अपनी भावनाओं को अच्छी तरह से प्रबंधित करते हैं और दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से व्यवहार करते हैं, वे सामग्री जीवन जीने की अधिक संभावना रखते हैं। साथ ही, खुश लोग जानकारी को बनाए रखने और असंतुष्ट लोगों की तुलना में अधिक प्रभावी ढंग से करने के लिए उपयुक्त हैं।

अभिभावक का बच्चों पर दबाव और तनाव

बच्चों के स्वस्थ विकास और वृद्धि के लिए एक सुरक्षित और सुखी परिवार के माहौल की आवश्यकता होती है। भारत में, बच्चों पर शिक्षा और शिक्षकों द्वारा डाला गया दबाव पारंपरिक तनाव का एक प्रमुख कारण है। पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए माता-पिता द्वारा बच्चों पर डाला गया असामान्य दबाव अधिकांशतः अधिक रहा है। अन्य देशों के विपरीत, भारतीय छात्र के संकट में साथियों द्वारा दबाव नहीं डाला जाता है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि परिवार से आने वाले शिक्षकों में विशिष्टता की जरूरत है, क्योंकि बच्चों से किया गया खराब व्यवहार उनके मनोबल को कमजोर कर देता है और यह उनके विफल होने का एक प्रमुख कारण बनता है। अधिक कमाई वाले कारोबार के रूप में खेल और मनोरंजन के उदय के साथ, अधिकांश भारतीय लोगों का पारंपरिक कैरियर के रूप में इन क्षेत्रों में ध्यान आकर्षित हुआ है। हालांकि, अधिकांश भारतीय माता-पिता, बच्चों के लिए शिक्षक की आवश्यकता को दूर करने में असमर्थ हैं। भारत के सबसे प्रसिद्ध क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने, कई माता-पिता को यह बताकर सोचने पर मजबूर कर दिया कि उनके माता-पिता ने उनके शिक्षकों को अभ्यास के दौरान होने वाली गलतियों पर पिटाई करने की अनुमति दी थी। और अब, किसी भी खेल या मनोरंजक गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रतिस्पर्धा आवश्यक है, माता-पिता अपने बच्चों को ऑल राउंडर्स बनने के लिए प्रेरित करते हैं, इसमें बच्चों की कहानी अक्सर सफल कहानी के बजाय

बच्चों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव

भारत में 15 से 29 साल की उम्र के किशोरों और युवा वयस्कों के बीच आत्महत्या की दर सबसे अधिक है। परीक्षा में विफलता देश में होने वाली आत्महत्याओं के शीर्ष 10 कारणों में से एक है जबकि पारिवारिक समस्या शीर्ष तीन में है। शुरू में, खराब मानसून वाले क्षेत्रों के किसानों को सबसे कमजोर समूह माना जाता था, हाल ही में 2012 और 2014 के बीच किये गये अध्ययन से पता चला है कि शहरी इलाकों में अमीर और शिक्षित परिवारों के युवा वयस्कों में आत्महत्या करने की प्रवृत्ति अधिक है। 2014 में जारी एक समाचार रिपोर्ट के अनुसार, 2013 में परीक्षाओं में असफल होने के बाद 2,471 छात्रों ने अपनी जान गवां दी थी, 2012 में, यह संख्या 2,246 पर आंकी गई थी। विशेषज्ञों का कहना है कि इनमें से ज्यादातर आत्महत्याओं का कारण पढ़ाई के लिए बच्चों पर माता-पिता का दबाव और अच्छे रिजल्ट की उम्मीद है जो छात्रों के कौशल या हितों के अनुरूप नहीं है। महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश,

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश ने इस क्षेत्र में सबसे खराब प्रदर्शन दर्ज कराया है। कई मामलों में बच्चों के मन में आत्महत्या करने की भावना नहीं होती है, माता-पिता द्वारा इस प्रकार का अनुचित दबाव डाला जाता है, इसमें बच्चों के खराब पालन पोषण और देखभाल के आरोप शामिल हैं जो कई प्रकार के मनोवैज्ञानिक समस्याओं का कारण बनते हैं। यह समस्या युवा और वयस्कता के विभिन्न चरणों में प्रकट होती है।

शिक्षक बनाम खेल बनाम कला

आधुनिक भारत में शिक्षा प्रणाली और माता-पिता की सबसे बड़ी विफलताओं में दो कारण हैं, यह बच्चे की सीखने की अक्षमताओं की पहचान करने में असमर्थता और जीवन के अंत में शैक्षणिक विफलता पर विचार करने में असमर्थ हैं। जबकि छात्रों और बच्चों पर बढ़ते दबाव के लिए सरकारा द्वारा चलाई गयी नीति को भी दोषी ठहराया जाता है इसमें 8 वीं कक्षा तक किसी बच्चे को फेल नहीं किया जाता है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि दबाव का एक बड़ा हिस्सा माता-पिता की तरफ से आता है। महाराष्ट्र और तमिलनाडु इसका उदाहरण हैं जहाँ बच्चों पर उनके माता-पिता द्वारा हाई स्कूल में विज्ञान और गणित लेने के लिए बाध्य किया जाता है, ताकि वह आगे चलकर डॉक्टर या इंजीनियर बन सकें। बच्चों के वाणिज्य या कला में रुचि के विकल्प को नकार दिया जाता है।

बच्चों की वृद्धि के लिए खेल और शारीरिक गतिविधियां जरूरी हैं, यह उनके तनाव को कम करने में काफी सहायता प्रदान करती हैं। बच्चों में खेल संबंधी गतिविधियां उत्पन्न करने की आवश्यकता है लेकिन माता-पिता द्वारा डाला गया अनुचित दबाव बच्चों में खेल के प्रति घृणा उत्पन्न करता है। प्रतिस्पर्धात्मक अभिभावकों द्वारा बच्चों की लगातार तुलना और शर्मिंदा करने की प्रवृत्ति ने इस स्थिति को और भी बदतर कर दिया है।

बच्चों की रचनात्मकता को उत्तेजित करने के लिए नृत्य, संगीत, कला और अन्य गतिविधियां उत्कृष्ट विकल्प हैं। इसमें वह अनुशासन, ध्यान केन्द्रित करने और टीम वर्क जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों को सीखते हैं, इससे उनको किताबी दुनिया से बाहर आकर अपनी क्षमताओं को पहचानने में मदद मिलती है। अच्छा प्रदर्शन करने के लिए बच्चों पर अभिभावकों द्वारा डाले गये दबाव ने इन सुखद गतिविधियों को प्रतिस्पर्धी घटनाओं में बदल दिया है। इसने बच्चों को भारी तनाव में डाल दिया है।

तनाव के लक्षण

उदासीनता तनावपूर्ण बच्चे के सबसे बड़े लक्षणों में से एक है।अध्ययन, खेलने का समय, टेलीविजन और मनोरंजन या बाहरी गतिविधियों में दिलचस्पी का अभाव आदि इस बात के स्पष्ट संकेत हैं कि कुछ सही नहीं है। जब आप इन कारणों की जाँच करें तो असाधारण थकान, भूख की कमी, नींद के अशान्त तरीके आदि पर भी ध्यान दें।

बच्चों के बार-बार बीमार होने पर भी ध्यान दें यह तनाव का एक आम लक्षण है। अक्सर सिरदर्द, पेट में दर्द और जी मिचलाना आदि आने के कुछ मायनों में एक बच्चा सामान्यतः किसी विशेष गतिविधि के संबंध में भय या चिंता से निपट सकता है।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

जब बच्चों की मानसिक स्थिति की बात आती है तो नकारात्मकता और नकारात्मक व्यवहार उनकी गतिविधियों से स्पष्ट होता है। नकारात्मक व्यवहार में अस्थिर मनोदशा, आक्रामकता, सामाजिक अलगाव या साथियों से बातचीत न करना और घबराहट आदि शामिल हैं।

किशोरों के मामले में अभिभावकों द्वारा डाले गये अत्यधिक दबाव से तनाव में विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जब छात्र अभिभावक के अनुचित दबाव से निपटने में असमर्थ हो जाते हैं तब वह धूमपान, नशीली दवाओं का सेवन और विद्यालयों में बेकार घूमने आदि जैसी अनदेखी गतिविधियों का अभ्यास करने लगते हैं।

जिन गतिविधियों में बच्चे आमतौर पर भाग लेना अधिक पसंद करते हैं, वह कार्य करने के लिए रोकर जिद कर सकते हैं। बच्चों पर शिक्षकों या अभिभावकों द्वारा डाला गया अत्यधिक दबाव उनके उस क्षेत्र में भी प्रदर्शन को खराब कर देता है जिसमें वह स्वाभाविक रूप से निपुण

अभिभावकों की सकारात्मकता

आत्मनिरीक्षण – आत्मनिरीक्षण माता-पिता का एक महत्वपूर्ण तत्व है। लंबे दिन के बाद अपने माता-पिता को अपने बच्चो से बातचीत करनी चाहिए। क्या आपने पारस्परिक प्रभावों पर ध्यान दिया है या आपके बच्चे को असहमति का अधिकार है? क्या आपके व्यवहार में उसको समझाने और प्रेरणा देने की बजाय मजबूर किया जा रहा है?

प्रोत्साहित करें – माता-पिता द्वारा बच्चे को प्रोत्साहित करना, उसकी सफलता का एक मूल मंत्र हो सकता है। आप अपने बच्चे के जीवन में एक प्रमुख खिलाड़ी हैं उसको आत्मविश्वास, कड़ी मेहनत और उत्कृष्टता सिखाना आप पर निर्भर करता है। यह भी आपकी ही जिम्मेदारी है कि आपका बच्चा आपकी हर बात को दिल से स्वीकार करे। विफलता नए अवसरों की तलाश करने और शोक का एक अवसर नहीं है।

बातचीत करें – आपके बच्चे के साथ बिताए जाने वाले कुछ सबसे अच्छे पल वह होते हैं जब आप खेल रहे हों और मस्ती या मनोरंजन की गतिविधियों में खुशी से भाग ले रहे हो। इन पलों को गहरी मित्रता और दोस्ती बनाने के अवसर के रूप में इस्तेमाल करें। आपके द्वारा दी गयी कोई भी वह सलाह जो उसको आज्ञा या दबाव न लगे, बच्चे के व्यक्तित्व को मजबूत करने में बहुत सहायता करेगी।

सहायता प्राप्त करें – आपको और आपके बच्चे के लिए लगातार सहायता मांगना वर्जित नहीं है। वास्तव में परिवार परामर्श के लिए जीवन का एक जरूरी हिस्सा है, जिससे हम आगे बढ़ रहे हैं। मनोवैज्ञानिकों और परामर्शदाताओं को नकारात्मक व्यवहार संबंधी गतिविधियों की पहचान करने और उन्हें अलग करने में आपकी सहायता करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

संदर्भ:

1. कौर , जगजीत और सिंह , कुलविंदर (2008), भावनात्मक खुफिया: एक वैचारिक विश्लेषण , साइको-सांस्कृतिक आयामों की प्राची जर्नल , 24 (2): 144-147 I मेरठ।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Shikharpur, Kat. Jau.

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Shikharpur, Kat.
Jaunpur

2. महाजन नीता और शर्मा श्वेता (2008), किशोरावस्था में तनाव और तूफान , इंडियन जर्नल ऑफ़ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन , 39 (2): p.204-207, पटना।
3. अरुणमोझी , ए . और राजेंद्रन , के . (2008), स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के भावनात्मक खुफिया , सामुदायिक मार्गदर्शन और अनुसंधान के जर्नल। खंड 25 नंबर 1, आईएसएसएन - 0970-1346, पृष्ठ संख्या : 57-61.
4. शंकर प्रभु और जेबराज राचेल (2008), "किशोर अनाथ बच्चों की अहंकार-शक्ति उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के निर्धारक के रूप में" , एस.आर.एम. विश्वविद्यालय , चेन्नई . 2 (5): 44-49
5. आलम , एमडी महमूद , (2009), "रचनात्मकता और उपलब्धि प्रेरणा के संबंध में शैक्षणिक उपलब्धि: एक सहसंबंधी अध्ययन" , हैदराबाद।
6. चोपड़ा , वनिता (2009), बेहतर शिक्षक और छात्र के प्रदर्शन के लिए शैक्षिक निहितार्थ , MERI जर्नल ऑफ एजुकेशन। खंड 4, क्रमांक 1, पृष्ठ. 51-58, विकास पुरी , नई दिल्ली।
7. सलूजा , आरती और नंदा , इंदर देव सिंह (2009), भावनात्मक खुफिया दिन की जरूरत है , खंड 8. सं . 10, नीलकमल प्रकाशन , हैदराबाद , पृष्ठ 23-23 ।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai Bhikharipurkala Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai Bhikharipur, Kal
Jaunpur

2023

RNI : CHHBIL/2021/80305
ISSN : 2583-0775 (P)
2583-9160 (E)

moghvarta

IMPACT 2022 4.824 SJIF FACTOR

AMOGHVARTA

A Double-blind, Peer-reviewed, Quarterly, Multidisciplinary and Bilingual Research Journal

December 2022 to February 2023
r - 02, Volume - 02, Issue - 03

Co-ordinator
I.Q.A.C.

Principal

Aditi Publication
Raipur, Chhattisgarh

RNI: 2021/80395
ISSN: 2583-0775 (P), 2583-3189 (E) | AMOGHVARTA | DECEMBER 2022 TO FEBRUARY 2023
YEAR-02, VOLUME-02, ISSUE-03

कार्यकारी महिलाओं के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन (शिक्षक एवं चिकित्सकों के विशेष संदर्भ में)

ORIGINAL ARTICLE

Authors
रंजू देवी,
शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
एवं
डॉ. (श्रीमती) अमिता तिवारी,
सह–प्राध्यापक,
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में कार्यकारी महिलाओं के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन (शिक्षक एवं चिकित्सकों के विशेष संदर्भ में) किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य शिक्षक एवं चिकित्सक कार्यकारी महिलाओं के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन करना है। शोध पत्र में कार्यकारी महिलाओं के शिक्षक एवं चिकित्सक व्यवसाय पर अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के लिए 20 शिक्षिका एवं 20 चिकित्सक कार्यकारी महिलाओं को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है तथा तथ्यों का संग्रहण करने हेतु व्यावसायिक अभिवृत्ति के लिए डॉ. मंजू मेहता तथा समायोजन के लिए समायोजन के लिए डॉ. प्रमोद कुमार की मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि कार्यकारी महिलाओं (शिक्षक एवं चिकित्सक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द

कार्यकारी महिलाएं, समायोजन, व्यावसायिक अभिवृत्ति।

प्रस्तावना

जीविकोपार्जन किसी व्यवसाय का चयन या प्रवेश करने, उसमें समायोजित होने तथा प्रगति करने की प्रक्रिया है। यह जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। जीविकोपार्जन सम्बन्धी समस्याएं केवल अनुपयुक्त व्यवसाय चयन का निर्णय, कार्य निष्पादनता, दबावग्रस्तता व समायोजन से ही सम्बन्धित नहीं होती वरन जीवन के अन्य पक्षों से सम्बन्धित भूमिकाओं से भी सम्बन्धित होती है।

महिलाऐं हमारे देश की जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा हैं और उनकी भागीदारी को विकास के लिये महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रारम्भ से लेकर आज तक स्त्रियों की दशा में परिवर्तन होते रहे हैं, व्यवहारिक तौर पर भारत में स्त्रियों की स्थिति में भारी उतार–चढ़ाव आते रहे हैं।

आधुनिक युग में महिलाएँ पारिवारिक उत्तरदायित्व के साथ–साथ अपने व्यावसायिक दायित्वों का भी

कर रही है। प्रारम्भ से ही महिलाओं का प्रमुख दायित्व जिम्मेदारियों का निर्वाह करना है तथा बाल्यावस्था से युवावस्था तक उन्हें इसी अभिवृत्ति के विकास के लिये प्रेरित किया जाता है। परन्तु बदलते परिवेश में महिला शिक्षा, औद्योगीकरण एव एकाकी परिवार, महिला स्वतन्त्रता एवं समानता के उद्घोष के कारण महिलाएँ भी अर्थोपार्जन के लिए निकल पड़ी है। आज हमारे देश में अनेक महिलाऐं उच्च पदों पर आसीन अपने कार्य का निष्पादन सफलतापूर्वक कर रही है।

कार्यकारी महिलाएँ

कामकाजी अथवा कार्यकारी महिलाओं से तात्पर्य उन महिलाओं से है जो बढ़ती हुई आर्थिक आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में पारिवारिक आय की बढ़ोतरी में सहयोग देती हैं। इनमें मजबूर या विवश महिलाएं ही नहीं बल्कि वे महिलाएं भी सम्मिलित हैं जो एक उपयोगी सामाजिक जीवन–जीना चाहती हैं।

महिलाओं के कार्यरत होने एवं किसी व्यवसाय विशेष को चुनने के सन्दर्भ में नरूला (1967) द्वारा किये गए सर्वेक्षण से इस बात की पुष्टि होती है कि मध्यवर्गीय स्त्रियां अपनी नौकरी के प्रति उदयभावी होती है। वह नौकरी इसलिए करना चाहती हैं क्योंकि इससे उन्हें आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक सन्तुष्टि मिलती है तथा वह परिवार की आमदनी में अपना योगदान कर पाती है। मिर्रा कोमारोवा क्री (1946) में अपने अध्ययन में पाया कि समय व समाज की मांग के अनुरूप भारतीय स्त्रियों का कार्यक्षेत्र अब न केवल घर ही है वरन् वर्तमान समय में वे कुछ उद्योगों में पुरूषों को भी पीछे छोड चली हैं। आज की कार्य करने वाली विवाहिता नारी को दुविधा की स्थिति में पा रही है क्योंकि प्राचीन संस्कृति उससे कुछ अपेक्षायें रखती हैं तथा आधुनिक सन्दर्भ में कुछ अलग।

रॉस ने भी अपने अध्ययन में यह स्पष्ट करते हुए बताया है कि पत्नी का वैतनिक काम धंधों में लगना अब समाज में अनुचित नहीं माना जाता है। निः सन्देह इतनी संख्या मे विवाहित मध्यम वर्गीय महिलाओं का विरोध के नौकरी कर सकने का मुख्य कारण यह है कि परिवार के रहन–सहन का स्तर बनाये रखने के लिए पत्नी भी पारिवारिक आर्थिक समस्या को समझने लगी हैं।

महिलाओं के कार्य क्षेत्रों को देखने से ज्ञात होता है कि प्रारम्भ से ही वे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति, शासन प्रशासन ललित कलाओं, साहित्य सृजन, चलचित्रों, सेना, समाज–कल्याण, शिक्षण, नर्सिंग आदि जैसे कार्यक्षेत्रों से जुड़ी रहते हुए समाज में अपना योगदान देती रही है। किन्तु उस समय ये स्वयं की रूचि के अनुरूप कार्य करती थी जिसे पैसों से नहीं आंका जाता था। पारिवारिक आवश्यकताओं के प्रकाश में भी कुछ महिलाएं प्रत्यक्ष से कार्यरत थी। अन्य कार्यों का सम्पादन जैसे–खेती संबंधी घर में बुनाई, कढ़ाई, सिलाई, बड़ी–पापड़ चिप्स, टोकरी बनाना, झाड़ू बनाना आदि कार्यों को महिलाओं की कार्य कुशलता से जोड़ा जाता था। किन्तु पारिवारिक जरूरतों के कारण इन्हीं अप्रत्यक्ष प्रकार के कार्यों को वर्तमान समय में जीविकोपार्जन हेतु प्रत्यक्ष क्षेत्रों हेतु चुन लिया गया। इनके अतिरिक्त महिलाएं आज व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों जैसे–बैंकों में, टेलीफोन ऑपरेटर के रूप में बीमा कार्यालय, आयकर विभाग, हाईकोर्ट, पुलिस सेवा, विमान चालक, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, प्रबंधन, चार्टर एकाउटेंट, तथा अन्य निजी उद्योगों में विभिन्न पदों पर कार्य करती नजर आती हैं।

समायोजन

यह दो शब्दों से मिलकर बना है सम और आयोजन सम् का अर्थ है भली–भांति, अच्छी तरह या समान रूप और आयोजन का अर्थ है व्यवस्था अर्थात् अच्छी तरह व्यवस्था करना। समायोजन का अर्थ हुआ सुव्यवस्था या अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकताएं पूरी हो जाएं और मानसिक द्वंद्व की स्थिति न उत्पन्न होने पाए।

गेट्स व अन्य समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।

व्यक्ति के जीवन में अनेक बार ऐसी परिस्थितियां आती हैं जिसमें व्यक्ति कठिनाई को अनुभव करता है तथा

अपनी इच्छाओं आवश्यकताओं व अभिलाषाओं की पूर्ति व तत्काल नहीं कर पाता है और ना ही वह संतुष्ट हो पाता है।

व्यावसायिक अभिवृत्ति

डी.ई सुपर के अनुसार: "एक व्यक्ति को स्वयं का तथा कार्य जगत में अपनी भूमिका का उपयुक्त एवं समन्वित चित्र विकसित करने तथा स्वीकार करने, इस सम्प्रत्यय को वास्तविकता के सन्दर्भ में परखने एवं अपनी संतुष्टि और समाज के हित के अनुरूप वास्तविक क्रियाओं में रूपान्तरित करने की प्रक्रिया ही व्यावसायिक अभिवृत्ति है"

डॉ. विधु: व्यावसायिक अभिवृत्ति व्यवसाय को चुनने उसके लिए तैयार होने उसमें प्रवेश तथा उसमें विकास करने की अभियोग्यता के गुण और रूचि को कहते हैं।"

व्यावसायिक अभिवृत्ति का अभिप्राय है व्यक्ति को व्यवसाय चयन में मदद करने वाली वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से वह स्वयं अपने लिए उपयुक्त व्यवसाय का चयन कर सके उसके लिए अपने को तैयार कर सके एवं उसमें प्रवेश कर उन्नति कर सके क्योंकि व्यावसायिक रूचि व्यवसाय चयन हेतु तथा उसमें दक्षता प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है, अतएव व्यावसायिक अभिवृत्ति द्वारा पूरी करती है।

व्यावसायिक अभिवृत्ति व्यक्तियों के गुणों एवं व्यवसाय के अवसरों के साथ उनके सम्बन्ध को ध्यान में रखते हुए व्यक्ति को व्यवसाय के वरण एवं उसकी प्रगति में आने वाली समस्याओं को सुलझाने में प्रदान की जाने वाली सहायता अथवा रूचि अभियोग्यता को व्यावसायिक अभिवृत्ति कहते हैं।

शोध के उद्देश्य

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे हैं:

1. कार्यकारी महिलाओं (शिक्षक एवं चिकित्सक) के समायोजन का अध्ययन करना।
2. कार्यकारी महिलाओं (शिक्षक एवं चिकित्सक) की व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. कार्यकारी महिलाओं (शिक्षक एवं चिकित्सक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

शोधार्थी ने अपने इस शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाई हैं:

1. कार्यकारी महिलाओं (शिक्षक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
2. कार्यकारी महिलाओं (चिकित्सक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध हेतु दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

इस शोध समस्या के न्यादर्श के चुनाव हेतु प्रथम चरण मे उत्तरप्रदेश के सुजानगंज ब्लॉक के कुल 40 (20 शिक्षिका एवं 20 चिकित्सक) कार्यकारी महिलाओं को सम्मिलित किया गया।

शोध उपकरण

तथ्यों का संग्रहण करने हेतु शोधार्थी द्वारा व्यावसायिक अभिवृत्ति के लिए डॉ. मंजू मेहता तथा समायोजन के लिए समायोजन के लिए डॉ. प्रमोद कुमार की मापनी का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकडों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया है:

Co-ordinator
IQAC
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur
[redacted]

RNI : CHHBIL/2021/80395
ISSN: 2583-0775 (P), 2583-3189 (E)

AMOGHVARTA

DECEMBER 2022 TO FEBRUARY 2023
YEAR-02, VOLUME-02, ISSUE-03

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट
- सार्थकता स्तर

निष्कर्ष

कार्यकारी महिलाओं (चिकित्सक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका क्र. 1

कार्यकारी महिलाएं (शिक्षक)	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
समायोजन	13.36	3.2	38	14.99
व्यावसायिक अभिवृत्ति	02.12	1.0		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

38 स्वतंत्राश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.72 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.03 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 14.99 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् कार्यकारी महिलाओं (शिक्षक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति का सार्थक प्रभाव पड़ता है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

तालिका क्र. 2

कार्यकारी महिलाएं (चिकित्सक)	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
समायोजन	14.69	3.39	38	11.76
व्यावसायिक अभिवृत्ति	4.34	2.00		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

38 स्वतंत्राश पर 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.72 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.03 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 11.76 इन दोनों से अधिक है अतः सार्थक है। अर्थात् कार्यकारी महिलाओं (चिकित्सक) के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति का सार्थक प्रभाव पड़ता है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

शोध हेतु कार्यकारी महिलाओं में शिक्षक एवं चिकित्सक के समायोजन पर व्यावसायिक अभिवृत्ति का प्रभाव देखा गया है। शोध निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि मानव के क्रमिक विकास की प्रक्रिया में महिलाओं की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं समायोजन महत्त्वपूर्ण है जिससे कार्यकारी महिलाओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति धनात्मक एवं ऋणात्मक होने से समायोजन प्रभावित होता है। कार्यरत महिलाओं की व्यवसाय के प्रति यदि अभिवृत्ति अच्छी रहती है तो वे समायोजन कर लेती हैं यदि अभिवृत्ति में थोड़ी सी भी नकारात्मकता आती है तो समायोजन पर प्रभाव पड़ता है। महिलायें चाहे शिक्षिका हों या चिकित्सक हों अपने व्यवसाय के प्रति गंभीर तो रहती हैं परंतु व्यवसाय के प्रति उनकी अभिवृत्ति ही उनके समायोजन को प्रभावित करती है।

सुझाव

1. बालिकाओं में बाल्यावस्था से ही अभिवृत्ति को सकारात्मक पक्ष की ओर अग्रसर कर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे आगे चलकर वे अपने व्यवसाय में समायोजन में सकरात्मक रहकर अपने जीवन के उच्चतम शिखर को प्राप्त कर सकें।
2. व्यावसायिक अभिवृत्ति व्यावसायिक सफलता हेतु आवश्यक होती है। इसलिए परिवार में बालिका का पालन–पोषण उचित प्रकार से किया जाए तथा उनको व्यवसाय चुनने में सकारात्मक पक्ष को विकसित किया

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghunath Mahavidyalaya
Thalai, Shikharipurkala, Jaunpur

Principal
[redacted] Mahavidyalaya
[redacted]pur, Ke...
Jaunpur

जा सके।

3. महिलाओं की व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक करने के लिए सहकर्मी द्वारा उचित व्यवहार किया जाए जिससे उनकी कार्य संतुष्टि बढ़ सके ताकि वह भावनात्मक एवं सामाजिक रूप से सहज समायोजित हो सकें।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता सुभाषचन्द्र, (2004). *"कार्यशील महिलाएँ एवं भारतीय समाज"*, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. दुबे, श्यामचरण (1963). *"वूमेन एण्ड वूमैन रोल इन इण्डिया, वूमेन इन न्यू एशिया,"* ब्रदर्स इ. वार्ड पेरिस यूनेस्को।
3. गौड, संजय, (2006). *"आधुनिक महिलाएँ और समाज उत्पीड़न, अत्याचार व अधिकार"*, बुक एनक्लेव, जयपुर, प्रथम संस्करण।
4. गुप्ता सुभाषचन्द्र, (2004). *"कार्यशील महिलाएँ एवं भारतीय समाज"*, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

——==00==——

Co-ordinator
I.Q.A.C.

Principal

अभिभावको एवं अध्यापको कि कुशलता और बच्चो कि शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन

[1]डॉ. अतुल कुमार दुबे और [2]मनोज कुमार

[1]सहायक प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान (भारत)

[2]शिक्षा शास्त्र विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान (भारत)

सार: बच्चों के विकास में अभिभावक की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। इस भूमिका के निर्वाह में स्कूलों के साथ उनका अच्छा तालमेल और समन्वय वाला रिश्ता होना जरूरी है। ऐसा करने के लिए ऐसे फोरम की जरूरत है जहाँ शिक्षक, अभिभावक और बच्चे एक साथ मौजूद हों। विद्यालय एक ऐसी जगह है जहाँ हर समुदाय से बच्चे आते हैं और औपचारिक शिक्षा ग्रहण करते हैं, जिससे वो अपने समुदाय की संस्कृति और काम को सीखते हुए जोड़ते हैं। इस यात्रा में बच्चे अपनी विभिन्न क्षेत्रों की दक्षता में सतत सुधार करते हुए सीखते हैं। पारंपरिक स्कूली शिक्षा की तरह यहां आपको अपने बच्चे की प्रगति जानने के लिए अभिभावक-शिक्षक बैठक की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के द्वारा शिक्षक मिनटों में माता-पिता को अपडेट दे सकते हैं। आप अपने बच्चे के परीक्षा में प्रदर्शन, मूल्यांकन और क्रियाकलापों के बारे में शिक्षक से तुरंत प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन लर्निंग मॉड अभिभावक-शिक्षक के निरंतर बातचीत को सुनिश्चित करता

कुंजी शब्द: अभिभावक, शिक्षा, बच्चे

प्रस्तावना: यूनेस्को के अनुसार, "माता-पिता अपने बच्चों के पहले शिक्षक होते हैं"। उनका सहयोग बच्चे की पढ़ाई और विकास को प्रभावित करता है। एक सफल अभिभावक के सहयोग के लिए, आपको शिक्षकों के साथ निरंतर बातचीत करने की आवश्यकता होती है। चूंकि बच्चे की शिक्षा और सम्पूर्ण विकास महत्वपूर्ण है, तो ऐसे में एक मजबूत साझेदारी के अलावा कुछ भी मायने नहीं रखता है। माता-पिता और शिक्षक दोनों अपने अवरोधों को दूर करते हैं और एक साझा लक्ष्य की दिशा में काम करने के लिए तैयार रहते हैं। एक नये शिक्षा प्रणाली को अपनाने के साथ-साथ आप आसानी से शिक्षकों के साथ बातचीत कर सकते हैं। एनईपी 2020 को धन्यवाद, जल्द ही एडटेक व्यवसाय के तेजी से बढ़ने की उम्मीद है, जो एक मजबूत शिक्षा प्रणाली का मार्ग प्रशस्त करता है और अधिक डिजिटल संचार तंत्र प्रदान करता है। बच्चों में जीवन जीने के सलीके में बहुत बदलाव आ गया है। आज का नागरिक अपना जीवन अपने अंदाज में व्यतीत करना चाहता है। इसमें किसी का हस्तक्षेप करना उसे बिल्कुल पसंद नहीं है। इस जीवन जीने की कला में वह अपनी जिम्मेदारियों से बचने का भी प्रयास कर रहा है। इसका प्रतिकूल प्रभाव परिवार और समाज पर पड़ रहा है। हमें विशेषकर अभिभावकों और शिक्षकों का मार्गदर्शन बच्चों के जीवन जीने की शैली को बहुत हद तक प्रभावित करता है। हमें उनकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाते हुए परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति उनके दायित्वों के प्रति भी जागरूक करना होगा। ऐसा नहीं करते हैं तो युवा पीढ़ी अपने जीवन और उनके दायित्वों के बारे में जिम्मेदार नहीं हो पाएंगे।

संस्कारों का रहता है असर : आज के विद्यार्थियों के जीवन की शैली में जो परिवर्तन आया है वह सबसे अधिक संस्कारों का है। आज का विद्यार्थी

Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala
Jaunpur

मेधावी , इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी में बहुत अधिक रुचि रखता है लेकिन सुसंस्कारित नहीं है। अच्छे संस्कारों की कमी के कारण उठना , बैठना , बोलना , बड़ोंक आदर सत्कार , माता - पिता , गुरुजनों के सम्मान में रुचि नहीं रखता। इन सबका कारण माता - पिता के समय अभाव एवं संयुक्त परिवार का कम होना है। प्रत्येक माता पिता यह उम्मीद करते है कि उनका बच्चा बेहतर शिक्षा ग्रहण करे , अच्छे संस्कार स्कूल में शिक्षक भी सिखाएं। विषय ज्ञान के लिए विद्यार्थी उत्तरदायित्व हैं लेकिन संस्कारों , वास्तविक प्रयोगशाला तो घर एवं परिवार हैं जहां बच्चों के व्यवहार एवं संस्कारों का वास्तविक प्रयोग होता है । आज का शिक्षक एवं छात्र दोनों अंकों के खेल में व्यस्त हो गए हैं। उनका एक ही लक्ष्य सर्वाधिक अंक लाकर कुछ बनने का होता है। अध्यापक भी छात्रों के सर्वांगीण विकास के स्थान पर मानसिक विकास पर केंद्रीत होता है। इस भागदौड़ में जीवन के अच्छा नागरिक या अच्छा इंसान बनाने की पहलू अछूते रह जाते हैं। हमारे समय में शिक्षक एक ईश्वर की तरह वास्तविक रूप से पूज्यनीय होते थे। आज इस स्तर में बहुत बदलाव आया हुआ है। इसके लिए हम सभी समाज के लोग जिम्मेदार हैं। आज अभिभावक शिक्षक पर अपने बच्चों से ज्यादा भरोसा नहीं करता पहले शिक्षक की बात पर विश्वास किया जाता था। पहले माता पिता अपने से ज्यादा शिक्षक को बच्चों का शुभचिंतक मानते थे।

शिक्षा में संचार के महत्व पर कुछ आवश्यक मुख्य बिंदु-

कोई बच्चा उच्च शैक्षणिक उत्कृष्टता स्तर को तभी प्राप्त कर सकता है जब उसे परिवार और स्कूल का पूरा समर्थन मिले। शिक्षक का माता-पिता के संपर्क मे होना बच्चे की सफलता के लिए सर्वोपरि है। शिक्षक से प्रतिक्रिया प्राप्त करने से आपको अपने बच्चे के कमजोर क्षेत्रों को समझने और उसमें सुधार लाने में मदद मिलेगी।

परस्पर संवाद पढ़ाई सत्र के दौरान सकारात्मक वातावरण बनाए रखता है।

माता-पिता और शिक्षकों के बीच सकारात्मक संबंध छात्रों के अपने शिक्षकों पर पूर्ण विश्वास को सुनिश्चित करता हैं और अपने विकास के लिए दोनों पक्षों द्वारा किये जा रहे मेहनत को देखकर छात्र अपने शैक्षणिक लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए अधिक लगन से पढ़ाई करते हैं।

इससे शिक्षकों को अपने छात्र से संबंधित किसी भी मुद्दे पर उनके माता-पिता के साथ संवाद करने में आसानी होती है। छात्र अपनी कमियों के बारे में शिक्षकों और अभिभावकों को पता चल जाने की चिंता करने से भी बच जाते हैं।

Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur
Principal

अभिभावकों की भूमिका है महत्वपूर्ण

अगर आप भी किसी बच्चे के अभिभावक हैं तो आपको नियमित अंतराल पर स्कूल जाना चाहिए। ताकि बच्चों के बारे में आपको शिक्षक से वास्तविक फीडबैक मिल सके। बच्चों को भी एक संदेश पहुंचे कि मम्मी-पापा उनकी परवाह करते हैं। इसके लिए स्कूल में आयोजित होने वाली विद्यालय प्रबंधन समिति (एसएमसी) या अभिभाव-शिक्षक बैठक में अपनी सक्रिय भागीदारी जरूर सुनिश्चित करें।

इससे आपको शिक्षकों के नज़रिये से बच्चे की सफलताओं, प्रगति के साथ-साथ चुनौतियों यानि सहयोग के क्षेत्रों की सटीक पहचान हो सकेगी, जिस पर आप काम कर सकते हैं। शिक्षकों की शिकायत होती है कि बहुत से बच्चों के अभिभावक स्कूल में होने वाली बैठकों में हिस्सा नहीं लेते। ऐसे पैरेंट्स को भी प्रेरित करने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। ताकि ऐसी बैठकों को ज्यादा प्रभावशाली, उद्देश्यपूर्ण और उपयोगी बनाया जा सके।

अध्यापक की कुशलता का विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर प्रभाव

विद्यालय एक उपवन है : विद्यालय भी एक उपवन हैं जहां बच्चे उसके फूल हैं। उन फूलों को हम कैसी शिक्षा से पोषण करते हैं यही उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। जब हम बच्चे का सर्वांगीण विकास की बात करते हैं तो वह केवल किताबी ज्ञान में ही बौद्धिक रूप से सफल नहीं बना रहे हैं बल्कि व्यक्तित्व और विचारों से भी उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। शिक्षकों को बच्चों के समक्ष उदाहरण बनना होगा। बच्चे माता पिता और साथियों की अपेक्षा शिक्षकों के विचार और व्यवहार को जल्दी अनुसरण करते हैं। जब जब अभिभावक यह कहता रहेगा कि बच्चों के लिए उनके पास समय नहीं है तब तब बच्चों के प्रति हम अपनी जिम्मेदारी से दूर भाग रहे हैं। ऐसे में बच्चों को उनके दायित्व के प्रति केवल पढ़ाने मात्र से काम नहीं चलेगा। ऐसे बच्चे किशोर अवस्था तथा युवा अवस्था तक पहुंचते पहुंचते वे अपने जीवन का उद्देश्य निर्धारण नहीं कर पाते जिस कारण उन्हें अपना जीवन नीरस लगने लगता है। ऐसे में हमें बच्चों में पहले मेरा जीवन का अहसास कराना होगा इसके बाद ही वे अपना दायित्व समझ सकेंगे।विद्यार्थियों की जिम्मेदारी : बच्चों को अपने जीवन के उद्देश्यों के प्रति जागरूक करना चाहिए। शिक्षण संस्थानों में क्लास मोनिटर बनाने के साथ उन्हें जो जिम्मेदारियां सौंपी जाती है उसका कारण उन्हें जिम्मेदारी बोध कराना है। यही कारण है कि विभिन्न सदनों के माध्यम से बच्चों को कई प्रभार सौंपे जाते हैं। हम सभी शिक्षकों का कर्तव्य बनता है कि समाज व विद्यालय के हर

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalí, Bhikhanpur, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalí, Bhikhanpur,
Jaunpur

बच्चे को सुसंस्कृत एवं संस्कारी बनाने का प्रयास करें जिससे वह देश व समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बन सके। अनुशासन प्रेम एवं वात्सल्य के साथ दी गई शिक्षा ही विद्यार्थियों को अच्छा नागरिक बना सकती है लगातार करते रहें प्रेरित : बच्चों को शुरू से ही उनकी जिम्मेदारियों के प्रति प्रेरित करना चाहिए। इसकी शुरुआत घर से की जानी चाहिए। घर के छोटी छोटी जिम्मेदारियां सौंपनी चाहिए जैसे पढ़ाई से फुर्सत के दौरान छोटे मोटे सामान लाने के लिए बाजार जाने, घर में मेहमान आते हैं तो जलपान आदि परोसने, माता पिता के साथ बागवानी में हाथ बंटाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे बड़े होने पर वे अपनी जिम्मेदारी समझ सकेंगे। इससे उनमें घर व्यवहार की समझ विकसित होगी। इस दौरान गलती होने पर उन्हें डांटने के बजाय समझाते हुए प्रेरित करना चाहिए। कई बार अभिभावक बच्चों को नालायक या बिल्कुल ही नाकारा मानने लगते हैं। इससे बच्चों के मानस पटल पर गलत प्रभाव पड़ता है। हमें इससे बचना चाहिए। बच्चे गलती करें तो भी उनके काम की तारीफ करते हुए उनकी खामियों को बताना चाहिए ताकि वे अगली बार उन गलतियों को नहीं दोहराएं। बच्चों को अपना जीवन जीने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हमारा दायित्व केवल उन्हें मार्गदर्शन करने का होना एक आदर्श जगत में, सभी छात्र हर वर्ष सीखने के अच्छे लाभ प्राप्त करेंगे, जिसके लिए उन्हें शिक्षा के नवीनतम सिद्धांतों के बारे में जानने वाले उन शिक्षकों से मदद मिलेगी जो इन सिद्धांतों को हर छात्र की अलग जरूरतों पर लागू करने के तरीकों से अ वगत होंगे। शिक्षक यह काम विद्यालय द्वारा प्रदान किए गए संसाधनों से संपन्न कर सकेंगे और वह भी तब जबकि उनके जीवन में अन्यत्र चाहे जो घट रहा होगा।तथापि, हम एक आदर्श जगत में नहीं रहते हैं। शिक्षक भी मनुष्य होते हैं जो कभी - कभी अपना कार्य उत्कृष्टता से नहीं दर्शा पा ते, यदि यह बात उन्हें पता हो, तो सुधार करने के लिए उन्हें शायद जरा सी ही सहायता की जरूरत पड़ेगी - लेकिन समस्या तब होती है जब शिक्षक को पता नहीं चलता कि वे बेहतर कर सकते हैं और छात्रों की सीखने की प्रक्रिया शिथिल हो रही है। यह एक संवेदनशील मुद्दा है जिसे सावधानी से संभालने की जरूरत है, लेकिन यह अच्छे विद्यालय नेता की भूमिका और दायित्व का हिस्सा है।

Co-ordinator
IQAC
Raghuveer Mahavidyalaya
Thane, Maharashtra

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thane, Maharashtra

इस इकाई में आप सीखेंगे कि शिक्षक के काम के बारे में प्रमाण कैसे एकत्र किया जाता है और नियोजन से समर्थित विकास गतिविधियों का उपयोग करते हुए उसे सुधारने की कुछ अवधारणाओं का अन्वेषण करेंगे। आपके शिक्षक छात्रों की उपलब्धि के सबसे बड़े निर्धारक हैं और इसीलिए शिक्षक के काम को प्रोत्साहित करने में आपका प्रभाव छात्रों की सीखने की प्रक्रिया और नतीजों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करेगा। एक विद्यालय नेता के रूप में आप शिक्षकों को अपने कार्य - प्रदर्शन को बेहतर करने में सहायता देकर उन्हें अधिक प्रभावी होने में सक्षम कर सकते हैं।

आपके शिक्षक में स्पष्ट शक्तियाँ हो सकती हैं लेकिन ऐसे क्षेत्र भी हो सकते हैं जहाँ वे सुधार कर सकते हैं। शिक्षकों के अच्छे कार्य - प्रदर्शन को पहचानना और अभिस्वीकृत करना महत्वपूर्ण होता है - इस बात को विशिष्ट रूप से संबोधित करने के लिए इस इकाई में आगे चलकर आप एक गतिविधि करेंगे। तथापि, सबसे पहले हमें कार्य - प्रदर्शन में कमी से निपटने पर ध्यान देना है। यह वह क्षेत्र है जिस पर शिक्षक उन कौशलों, ज्ञान और और व्यवहारों के सभी प्रकारों का उपयोग नहीं करते हैं जो एक उत्कृष्ट शिक्षक होने से संबद्ध होते हैं।

निष्कर्षयह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि शिक्षक का खराब कार्य - प्रदर्शन आवश्यक रूप से इस बात से संबंधित नहीं होता कि शिक्षक अपने अध्यापन को या अपनी कक्षा को अन्य लोगों से अलग ढंग से संयोजित करता है या नहीं। अधिकतर इसका कारण यह होता है कि अध्यापन के परिणाम स्वरूप उनके छात्र उतनी प्रगति नहीं करते हैं जिसकी उनसे उस समय सामान्य तौर पर अपेक्षा की जाती है। ऐसा भी हो सकता है कि सक्षम छात्र या मिसाल के तौर पर, किसी विशिष्ट सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के छात्र अच्छा काम करते हैं, जबकि अन्य नहीं।

यदि आप कक्षाओं में जाकर या शिक्षकों से बातचीत करके छात्रों की सीखने की प्रक्रिया पर नियमित रूप से डेटा एकत्र नहीं करते हैं, तो हो सकता है कि छात्रों की शिक्षा के बुरी तरह से हानिग्रस्त होने से पहले आपको कार्य - प्रदर्शन में इस कमी का पता न चले। इस वजह से, नियमित निगरानी करना आवश्यक होता है और उसे आपके रोजमर्रा के काम का हिस्सा होना चाहिए। निगरानी करके आप अच्छे कार्य - प्रदर्शन की पहचान और अच्छा काम कर रहे शिक्षकों को मान्यता भी प्रदान कर सकेंगे।

आप कार्य - प्रदर्शन का प्रमाण कैसे एकत्र कर सकते हैं? यह बहुत महत्वपूर्ण है कि प्रमाण के आधार पर कार्यवाही की जाये न कि कहानियों या अनु

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya

मानों के आधार पर। तथापि, आम तौर पर कोई मुद्दा अन्य शिक्षकों और उनके कार्य की तुलना में उठाया जाता है, इसलिए एक से अधिक शिक्षकों या कक्षा के बारे में प्रमाण एकत्र करना अक्सर जरूरी होता है।

संदर्भ1 . डी , कोर .
(2016). जम्मू डीविजन के विद्यार्थियों के व्यावसायिक एवं शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन . अप्रकाशित शोध प्रबन्ध . जम्मू विश्वविद्यालय , जम्मू .2 . डगलस , डी रेडडी .
(2013). शैक्षिक एवं विद्यालयी संरचना का अध्ययन . शिक्षक - महाविद्यालय अभि लेख 106 (20) अक्टूबर 2004 पेज 1989-2014.3 . डी , कॉक .
(2014). माध्यमिक शिक्षा में नवीन अधिनगम और अधिगम वातावरणों का अ ध्ययन , रिव्यु ऑफ़ एज्युकेशन रिसर्च 74(2) सित . 2004 पेज 141-170.
4 . डेविस ,
(2015). अध्यापकों के चयन में केन्द्रीय स्थिति का निर्णय और विद्यालयी अ कादमिक उपलब्धि का अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबन्ध , केलीफोर्निया स्टेट यूनिव र्सिटी , फ्रेस्नो . एन .
5 . दास ,
(2014). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अकादमिक एवं सामाजिक स्तर का अध्ययन . उत्कल विश्वविद्यालय , भुनेश्वर . एटिना .
6 . दास ,
(2015). माध्यमिक विद्यालयी वातावरण में विद्यार्थियों का मत , अप्रकाशित शोध प्रबन्ध , रॉवन विश्वविद्यालय , रॉवन।
7 . दीप्ति भारद्वाज (2017) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर विद्यालयी वातावरण , दूरदर्शन कार्यक्रम एवं पारिवारिक संस्कारों के प्रभाव का अध्ययन , उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान , मान्य विश्वविद्यालया , सरदार शहर प्रकाशित छवि नेशनल जर्नल ऑफ़ हायर एज्युकेशन , वर्ष - एक , निर्गमन - चार , जुलाई - सितम्बर 2013, पेज - 12-16
8 . गुड , बार . स्केट्स .
(2014). मेथडोलाजी ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च न्यूयार्कः सेन्चुरी कम्पनी . न्यूयार्क .
9 . गाँधी , के . ए .
(2015). संगठनात्मक विरोध और विद्यालयों के परिणामों पर प्रबंधन व्यवस्था का प्रभाव , शिक्षा में प्रयोग वोल्यूमगग 111(4) 67-74.

Co-ordinator
I.Q.A.C.

Principal

10 . धालप .
(2016). दादर और नागर हवेली संघीय क्षेत्रों में विद्यालयी बच्चों के लिए छात्रावास सुविधाओं का मूल्यांकन शोध अध्ययन , अप्रकाशित शोध प्रबन्ध , दिल्ली विश्वविद्यालय , दिल्ली .

उर्मिला .
11 . एच .
(2011). गुजरात राज्य के माध्यमिक विद्यालयों में दृश्य - श्रव्य सामग्री का अ ध्ययन , अप्रकाशित शोध प्रबन्ध , सौराष्ट्र विश्वविद्यालय , जामनगर .

सुरेखा .
12 . हींगड .
(2016). माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति . अप्रकाशित शोध प्रबन्ध , राजस्थान विश्वविद्यालय , जयपुर .

टी . सी .
13 . जानी ,
(2012). विद्यार्थियों और विश्वविद्यालयी (विद्या संबंधी) उपलब्धियों पर कक्षा क क्ष वातावरण (जलवायु) अध्यापकों के नायकत्व व्यवहार और आशाओं का प्रभाव इण्डियन एज्यूकेशनल रिव्यू , वोल्यूम 34 (2) 99-104.

2024

UGC Approved Journal No – 40297
(IIJIF) Impact Factor - 5.262

Regd. No. : 1687-2006-2007

ISSN 2231-4113

Śodha Pravāha

(A Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal)

Editor : S. B. Poddar

VOL. 14

ISSUE II

APRIL 2024

Chief Editor : S. K. Tiwari

Academic Staff College
Banaras Hindu University,
Varanasi-221005, INDIA

E-mail : sodhapravaha@gmail.com

www.sodhapravaha.com

Coordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kal
Jaunpur

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय अभिरूचि एवं पर्यावरणीय जागरूकता का अनुशीलन

*रमेश बहादुर मौर्य**
*डॉ. संजय कुमार सरोज***

शोध सार :

पर्यावरण व्यक्ति के सम्पूर्ण कार्य प्रणाली को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। इसके द्वारा सम्पूर्ण मानवीय गतिविधियां एवं क्रिया कलाप प्रभावित होते हैं। पर्यावरण की जीवन में उपयोगिता के कारण इसे शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर जोड़कर बालकों में पर्यावरणीय अभिरूचि एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया जा रहा है। पर्यावरण में हो रहे निरन्तर ह्रास को रोकने तथा पर्यावरण को शुद्ध एवं कल्याणकारी बनाने हेतु शिक्षकों में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास कर विद्यार्थियों में इसका समुचित समावेशन किया जा सकता है। शिक्षा के उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में विभिन्न पर्यावरणीय घटकों की समझ एवं संज्ञानता का आधार तैयार होता है। अतः इस स्तर पर उनकी पर्यावरणीय रूचि एवं पर्यावरणीय जागरूकता की विशेष अपेक्षा की जाती है। इसलिए प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिरूचि एवं पर्यावरणीय जागरूकता का अनुशीलन किया गया है। इसके लिए निर्मित उद्देश्यों के सापेक्ष परिकल्पनाओं का निर्माण एवं उनका परीक्षण किया गया। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज मण्डल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में लिया गया जिसमें से 50 छात्र एवं 50 छात्राओं से प्रतिक्रिया प्राप्त की गयी। इसके विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिरूचि का स्तर उच्च है जबकि उनमें पर्यावरणीय जागरूकता की स्थिति न्यून है।

भूमिका :

पर्यावरण एक व्यापक सम्प्रत्यय है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति की सम्पूर्ण आन्तरिक एवं वाह्य दशाएं आती हैं, जो उसे चारों ओर से आवृत्त किये हुए हैं। पर्यावरण बालक के विकास से लेकर उसकी सम्पूर्ण क्रियाओं को प्रभावित करता है। बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक गुणों के विकास में वंशानुक्रम के साथ–साथ वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है। वातावरण के विभिन्न घटकों में भौतिक, मानवीय एवं सामाजिक, सांस्कृतिक आदि तत्व आते हैं। भौतिक पर्यावरण के अन्तर्गत, जल स्थल एवं वायुमण्डलीय दशाएं आती हैं। मानवीय वातावरण के अन्तर्गत विभिन्न विज्ञान एवं तकनीकी खोजों एवं मानव द्वारा विकसित संसाधनों को सम्मिलित किया जाता है। सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण के अन्तर्गत विभिन्न सामाजिक मान्यताएं, रीति–रिवाज, सामाजिक संस्थाएं, त्यौहार एवं सांस्कृतिक विरासत आदि आते हैं। इस प्रकार पर्यावरण व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास से सम्बन्धित है।

आज देश में उभर रही विभिन्न समस्याओं में पर्यावरणीय असन्तुलन एवं उसका व्यतिक्रम एक जटिल समस्या बनता जा रहा है। पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की समस्यायें जैसे प्रदूषण, ओजोन क्षरण, बाढ़, सूखा, गैसों का बढ़ता दुष्प्रभाव, भूकम्प, सुनामी आदि आज मानवीय अस्तित्व के लिये खतरा बनती जा रही हैं। ऐसी स्थिति में वर्तमान शैक्षिक पाठ्यक्रमों में पर्यावरणीय ज्ञान एवं उनके प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास से सम्बन्धित पाठों को रखे जाने की आवश्यकता है।आज के इस तीव्र परिवर्तनशील विश्व में सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं चर्चित शब्द पर्यावरण बन चुका है। जीवों के चारों ओर की वस्तुएं जो उनकी जीवन क्रियाओं को प्रभावित करती है वातावरण का निर्माण करती हैं। पर्यावरण जीव के अस्तित्व को प्रभावित करता है और जीव स्वयं पर्यावरण को, अर्थात दोनों के मध्य

* शोधार्थी शिक्षक- प्रशिक्षण संकाय, मुरली मनोहर टाउन पी.जी. कालेज, बलिया।
** एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक-प्रशिक्षण संकाय, मुरली मनोहर टाउन पी.जी. कालेज, बलिया।

Coordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Ka
Jaunpur

यह अन्तःक्रिया निरन्तर चलती रहती है। इस पारस्परिक सम्बन्ध को पारिस्थितिकी कहते हैं। आज पर्यावरण की जो भी स्थिति है वह जीव एवं पर्यावरण के बीच अन्तःक्रिया का परिणाम है।

विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के साथ–साथ मानव सभ्यता इतनी अधिक तेजी से आगे बढ़ी की उसे पता नहीं चला कि पर्यावरणीय समस्याएं कब उग्र रूप धारण कर ली। पर्यावरण की गुणवत्ता एवं उसका संतुलन निरन्तर कम होता जा रहा है। आजकल जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण है उसमें भौतिक, जैविक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक तत्वों में आन्तरिक सम्बन्ध एवं निर्भरता की कमी दृष्टिगत होती है। लोगों में पर्यावरण के प्रति घटती जागरूकता एवं उसके निरन्तर अवहेलना के कारण उत्पन्न असंतुलन को कम करने हेतु शिक्षा के विविध स्तरों पर प्रयास कर बच्चों को इसकी आवश्यकता, उपयोगिता एवं जीवन से सम्बद्धता हेतु जागरूक किया जा रहा है। वर्तमान में पर्यावरणीय परिस्थितियों से तालमेल स्थापित करने हेतु अतीत की मान्यताओं को पुनर्जीवित कर पर्यावरण के विभिन्न घटकों में सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता है। इसके लिए छात्रों में पर्यावरण के प्रति अभिरुचि बढ़ाने व पर्यावरणीय जागरूकता लाने के लिए उनके शैक्षिक पाठ्यचर्या में अनेक विषयवस्तुओं को सम्मिलित किया गया है साथ ही शिक्षकों को छात्रों की पर्यावरीण रुचि बढ़ाने व उनमें इसके प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है ताकि उनमें पर्यावरण के प्रति समुचित अभिरुचि व जागरूकता बढ़ायी जा सके।

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिरुचि का विकास करने तथा उनकी पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने हेतु अनेक पाठ्यक्रमीय एवं पाठ्य सहगामी क्रियायें आयोजित की जा रही है ताकि उनमें वर्तमान में उदीयमान पर्यावरणीय चुनौतियों के प्रति सजागता आ सके। इसलिए शोधार्थी द्वारा अपने शोध प्रपत्र में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय अभिरुचि एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अनुशीलन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय अभिरुचि का अध्ययन करना।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :

1. उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि :

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। जिसमें न्यादर्श के रूप में प्रयागराज मण्डल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श प्रतिचयन विधि से किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उच्च प्राथमिक विद्यालयों से 50 छात्र एवं 50 छात्रा कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वनिर्मित पर्यावरण अभिरुचि मापनी एवं डॉ0 प्रवीण झा द्वारा निर्मित पर्यावरणीय जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, एवं क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या :

सारणी–1

उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय अभिरुचि का विवेचन

Variable	N	M	S.D.	D	σD	CR-value	सार्थकता
छात्र	50	50.96	6.28	3.66	1.3	2.81	0.05 स्तर पर सार्थक
छात्रा	50	47.30	6.73				

विश्लेषण एवं व्याख्या :

उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय अभिरूचि सम्बन्धी प्राप्तांकों का माध्य 50.96 व प्रामाणिक विचलन 6.28 है जबकि उच्च प्राथमिक स्तर की छात्राओं की पर्यावरणीय अभिरूचि सम्बन्धी प्राप्तांकों का माध्य 47.30 व प्रामाणिक विचलन 6.73 है। प्राप्त क्रान्तिक–अनुपात 2.81 है जो df 98 हेतु सार्थकता स्तर .05 पर सी0आर0 मान 2.00 से अधिक है जो सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को अस्वीकृत कर दिया गया। मध्यमानों के अवलोकन के आधार पर उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों का माध्य छात्राओं से अधिक है। अतः उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय अभिरूचि छात्राओं से उच्च है। इसका सम्भावित कारण छात्रों का अपने घरेलू परिवेश के अलावा आस–पास की परिस्थितियों के साथ अन्तःक्रिया रखना इन्हें पर्यावरणीय दशाओं के साथ तालमेल का अधिक अवसर मिलना, उनके अभिभावकों द्वारा अधिक ध्यान दिया जाना तथा उनकी वैयक्तिक रूचि आदि हो सकते है।

सारणी–2

उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता का विवेचन

Variable	N	M	S.D.	D	σ D	CR-value	सार्थकता
छात्र	50	34.49	4.46	4.00	0.92	4.34	0.05 स्तर पर सार्थक
छात्रा	50	30.49	4.72				

विश्लेषण एवं व्याख्या :

उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता सम्बन्धी प्राप्तांकों का माध्य 34.40 व प्रमाणिक विचलन 4.46 है जबकि उच्च प्राथमिक स्तर की छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता सम्बन्धी प्राप्तांकों का माध्य 30.49 व प्रमाणिक विचलन 4.72 है। प्राप्त क्रान्तिक–अनुपात 4.34 है जो df 98 हेतु सार्थकता स्तर .01 पर सी0आर0 मान 2.60 से अधिक है जो सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को अस्वीकृत कर दिया गया। मध्यमानों के अवलोकन के आधार पर उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों का माध्य छात्राओं से अधिक है। अतः उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता छात्राओं से उच्च है। इसका सम्भावित कारण छात्रों को पर्यावरण के सम्पर्क में रहने का अधिक अवसर प्राप्त होना, उनका स्थानीय परिवेश से जुड़ा होना, उन्हें विभिन्न पर्यावरणीय तत्वों को जानने के लिए अधिक अवसर मिलना, उनका पर्यावरण के साथ लगाव आदि हो सकते हैं।

निष्कर्ष :

1. उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों का माध्य छात्राओं से अधिक प्राप्त हुआ। अतः उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय अभिरूचि छात्राओं से उच्च है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों का माध्य छात्राओं से अधिक पाया गया । अतः उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता छात्राओं से उच्च है।

सन्दर्भ :

1. पाण्डेय, राजीव (2008) :परिवर्तनशील परिवेश में गुणवत्ता आधारित शिक्षा का विकास, शोध प्रपत्र, राष्ट्रीय संगोष्ठी उच्च शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन द्वारा जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज इलाहाबाद।
2. वाजपेयी, एल0बी0 (2000) :भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक प्रवृत्तियां, लखनऊ, आलोक प्रकाशन।
3. मिश्रा, संध्या (2010): पर्यावरणीय शिक्षा, मेरठ, आर0लाल बुक डिपो,
4. सिंह, सविन्द्र एवं दूबे (1983) : पर्यावरण भूगोल, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
5. गोयल (2004) : पर्यावरण शिक्षा, लखनऊ, नवनीत प्रकाशन,

***

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

UGC Approved Journal No. 49321 (Old) Impact Factor : 7.0 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 15, No. 8 Year - 15 August, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
[illegible], Bhikharipur, [illegible]
Jaunpur

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 15, No. 8, August 2024
Impact Factor : 7.0
ISSN : 0976-6650

संत काव्य एवं उनकी परंपरा

मयंक तिवारी
शोध छात्र, हिंदी विभाग, पी०जी० कॉलेज, आजमगढ

संत कवि अपनी सरलता, साधु स्वभाव तथा संत प्रवृत्ति के कारण आज प्रासंगिक है। संत कवियो मे कबीर दास के अनुसार सच्चा संत वह होता है जो दुनिया के प्रपंचो से दूर केवलप्रभु की भक्ति मे ही लीन रहता है। संत कवियो ने धर्मांधता,रूढियों का अंधानुकरण, जातिगत भेदभाव, संप्रदायगत कट्टरता आदि विघटनकारी प्रभावो के प्रति विद्रोह किया

रचनाएं

सिख ग्रंथो के आदिग्रंथ मे संत साधना का पद देखा जा सकता है, जो अर्जुन देव द्वारा संपादित है। इन पदो जो अत्यंत पुनीत हार्दिक उद्गार दृष्टिगत होते हैं। इनके पद में इनके जीवन निर्मता एव सहजता को देखा जा सकता है। इस पद के प्रारंभ में एक कथानक आया है। जिसमें एक कास्तकार केपुत्र को यह ज्ञात होता है कि राजा की पुत्री का विवाह भगवान विष्णु से होना सुनिश्चित है, तो वह स्वयं को नारायण के स्वरूप मे ढालने और सुसज्जित रखाने की चेष्टा करता है। विष्णु के सभी श्रृंगार व शस्त्र से सुसज्जित होने के पश्चात देखा जाता है की लडकी के पिता पर किसी शत्रु ने हमला कर दिया है और लड़की जब छद्म वेशधारी विष्णु से सहयोग की अपेक्षा करती है तो अर्थ के मारे उसके शांत शिथिल हो जाते हैं और वह नारायण के शरणागत हो जाता है। अंततः विष्णु कन्या के पिता और नकली वेशधारी की भी सहायता करते हैं।

संत नंतगाथा नामक संग्रह के छः पदों को पाया जा सकता है, जो प्रत्यक्ष रूप से साधना के ही हैं। जिसमें उनकी भक्ति व साधना को कृष्णा के अवतार के रूप में अनुमान कर सकते हैं। किन पदों की भाषा में अरबी फारसी के भी पद चिन्ह प्राप्त होते हैं, किंतु इन पदों के वाक्यों, शब्दों में वह भाव चेतना और गंभीरता परिलक्षित नहीं होती जो साधना को पूर्णरूपेण परिभाषित करें।

डॉक्टर ग्रियर्शन ने संत साधना के नाम पर प्रचलित किसी साधना पंथ की चर्चा करने का प्रयत्न किए हैं और उनके मातानुयायियो के बनारस में स्थित होने के बारे में भी बताया है। किंतु बनारस में इस प्रकार के लोगों के बारे में कोई ठोस प्रमाण नहीं है। डॉ० ग्रियर्शन के अनुसार साधना का काल खण्ड 17वीं ई०पू० बताया है।

संत वेणी

संत वेणी जी के कालावधि एवम् जीवन के अन्य कितने भी प्रसंग एवं घटनाओं के संदर्भ में तथ्य अ पर्याप्त है। अर्जुन देव को सिक्खों के पांचवे गुरु थे (सं० 1620—1663) ने इसका नाम अपने एक पद में वर्णित किया है—

वेणी कऊ गुरि कांड प्रगासु, रेमन तभी होही दासू।

—(गुरु ग्रंथ साहिब, रागबसंतु महल्ला—5, पृष्ठ 1192)

यह भी जानकारी प्रदान करते हैं कि सद्गुरु की महिमा से इनका और अलौकिक होता है। इनके तीन पदों का संकलन उक्त गुरुद्वारा संपादित (आदि ग्रंथ) में प्राप्त होता है, जिनमे इनके कुछ वैचारिक लगाव स्पष्ट देखे जा सकते हैं। उनकी रचनाओं में इनकी काव्य शैली बहुत प्राचीन प्रतीत होती है और इस बात से यह ज्ञात किया जा सकता है कि यह रामदेव के समकालीन तथा पंजाब प्रांत के दक्षिण पूर्वी अथवा राजस्थान के पूर्वोत्तर के रहने वाले लगते हैं। यद्यपि इनके जन्म स्थल व कर्मस्थल की स्पष्ट जानकारी प्राप्त नहीं होती। यह कब कहा जाता है कि इनके प्रदेश में नाथ योगी संप्रदाय के बीज दृष्टिगोचर होता है। प्राप्त पाठ्य सामग्रियों के आधार पर मात्र यहीं अनुमान लगाना सहज होगा कि 14वीं विक्रमी सदी में विद्यमान थे।व नाथ मत का इन पर प्रबल प्रभाव था।

रचनाएं

सत द्वारा संकलित "आदिग्रंथ"में विद्यमान तीन ऐसे पद हैं। जिसमें से इन पाखंडियों को लक्षित कर उनकी भर्त्सना करता है, जो प्रातः स्नानादि उपरांत चंदन की मालचाढ़ करके शिला पूजन करते हैं परंतु पक्ष से अत्यंत क्रूर है, बगुले के भाती वे दूसरे के धन—धान्य को चुराने या गमन करने की रणनीतिक

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhiti, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Jaunpur

गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। उनके विचार का मूल्य है कि अनुभूति ना हो तब तक समस्त आचरण व्यर्थ है।

अन्य दूसरे पद में योग साधना की चर्चा है, तथा एक और वाक्य में तीनों नाडियो का चर्चा है जो क्रमशः इड़ा, पिंगलावा, सुषम्ना। उक्त नाडियो के संगम स्थल को त्रिवेणी से संबोधित किया गया है जिसे प्रयाग की त्रिवेणी भी कहा जाता है जहां 'निरंजन' अर्थात राम का वास है।

उन्होंने ऐसे मनुष्य के बारे में निंदा की है, जो राम को विस्मृत कर लौकिक माया में डूबे रहते हैं। तथा इनके द्वारा राम की आराधना करने जीवन मुक्ति की संजीवनी का मार्ग सुझाया है। मृत्यु के पश्चात मुक्ति को संत वेणी तथा जीवन मुक्त को आधार बनाकर इसे मनुष्य के लिए अपेक्षित बनाते हैं।

कश्मीर से इनका संबंध पाया जाता है, यही उनके निवास था। स्थानीय रूप से निम्नवर्गीय परिवार में इनका जन्म हुआ, देढ़ता मेहतर जाति में। किंतु इनके विचार और आचरण सदैव उच्च और अनुकरणीय रहे।

इनके संदर्भ में यह ज्ञात होता है कि यह शैव मातानुयायी थी एवं घूमने वाली कोटी की भगिनी थी। धर्म विषय द्वंद से सदैव दूर रहने में ही इन्हें सार्थकता का बोध होता है, इसके विपरीत में सहज एवं समन्वयवादी व्यवस्था एवं व्यवहार से साम्य रखती हैं। सहज होगा कि चौदहवीं विक्रम सदी में विद्यमान थे व नाथ मत का इन पर प्रबल भी ई० शताब्दी। इनके विषय में यह सुनने को प्राप्त होता हैं कि यह अपनी दीर्घ जीवन काल तक सक्रिय एवं वृद्धावस्था तक स्वस्थ रही, इन्होंने अपने ज्ञान व विचारों के प्रसार के लिए कवि रचनाओं को मूर्त रूप भी दिया। सहज होगा कि 14वीं विक्रमी सदी में विद्यमान थे व नाथ मत का इन पर प्रबल प्रभाव हो सकता है—

कहत नामदेव सुनहु त्रिलोचन
(गुरु ग्रंथ साहिब, रागु पृष्ठ 847)

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. गुरु ग्रन्थि साहिब, राम गुरू, पृष्ठ 964
2. नाम देव गाथा
3. भक्ति सुधा, बिन्दु स्वामः (रूपकलाजी संस्मरण)
4. श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली

इण्टरनेट एवं वेबसाइट

1. shodhganga@inflibnet
2. www.wikipedia.org
3. https://www.google.com

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

❖	सामाजिक न्याय और पिछड़ा वर्ग आयोग **डॉ0 सरफराज खान**	66-68
❖	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और उसके सामाजिक प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **शिखा गिरि**	69-74
❖	एल0जी0बी0टी0क्यू0 समुदाय के अधिकारों की लड़ाई : भारत में वैधानिक संघर्ष और प्रगति **हर्षित कुमार**	75-82
❖	आगरा महानगर के ख्याति प्राप्त कथक नृत्याचार्य स्व0 श्री मोंटू गिरी जी का सांगीतिक योगदान **रचना जिंदल एवं प्रो0 नीलू शर्मा**	83-85
❖	महाभारत के आदिपर्व में वर्णित राजधर्म **डॉ0 कुमारी प्रियंका शर्मा**	86-88
❖	बिहार में विचाराधीन कैदियों द्वारा शराब और नारकोटिक्स ड्रग से संबंधित अधिनियमों के उल्लंघन की व्यापकता पर शराबबंदी का क्या प्रभाव है—एक बारह वर्षीय (2010–2021) तुलनात्मक क्रॉस–सेक्शनल अध्ययन **मो. शरीफ आलम एवं डॉ. अजय कुमार**	89-94
❖	भावनात्मक बुद्धिमत्ता की मध्यस्थ भूमिका के साथ पालन–पोषण शैलियों और खुशी के बीच सम्बन्ध **संध्या कुमारी एवं डॉ. अजय कुमार**	95-101
❖	सकारात्मक मनोविज्ञान और इंटरनेट : मानसिक स्वास्थ्य का एक अवसर **सोनी कुमारी एवं डॉ. अजय कुमार**	102-108
❖	विजयनगर साम्राज्य की सांस्कृतिक धरोहर : संगीत, नृत्य और साहित्य **डॉ0 दीक्षिता अजवानी**	109-112
❖	उच्च माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों में निम्न एवं उच्च जीवन–संतुष्टि के संदर्भ में शिक्षक हिमीकरण का अध्ययन **डॉ0 सपना शर्मा एवं उमा शर्मा**	113-123
❖	शिक्षा की दृष्टि समकालीन परिदृश्य में दृश्य कलाओं का अध्ययन एवं अध्यापन **कृष्ण कुमार एवं सिद्धार्थ त्रिपाठी**	124-126
❖	शिवमूर्ति की कहानियों में मुखर स्त्री आख्यान **सिमरन भारती**	127-130
❖	संत काव्य एवं उनकी परंपरा **मयंक तिवारी**	131-132
❖	21वीं सदी में भारत–नेपाल संबंध : चुनौतियां एवं संभावनाएं : एक विशेष अध्ययन **श्रीमती संस्मिता बरगाह एवं डॉ0 श्रीमती नाज बेंजामिन**	133-140
❖	महिलाओं में कौशल विकास के प्रति जागरूकता एवं शासकीय कार्यक्रमों की भूमिकाओं के विश्लेषण का अध्ययन **दुर्गा न्याहाले**	141-144

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 15, No. 8, August 2024
Impact Factor : 7.0
ISSN : 0976-6650

अनुक्रमणिका

✎	शंखध्वनिः मैथिली साहित्यमे महत्व : एक अवलोकन **डॉ० कुमारी संध्या**	1-2
✎	समसामयिक परिदृश्य में योगवाशिष्ठ का पुरुषार्थवाद **डॉ० दीप्ति वाजपेयी एवं अनामिका**	3-6
✎	जयप्रकाश नारायण और सम्पूर्ण क्रांति **रिंकी देवी मौर्या एवं डॉ० प्रार्थना सिंह**	7-11
✎	पर्यटन : राष्ट्रगिता एवं शांति का उद्योग **जय सिंह यादव**	12-16
✎	प्रेमचन्द की कहानियों का सामाजिक यथार्थवाद : एक सूक्ष्म अध्ययन **डॉ० बालमुकुन्द यादव**	17-20
✎	आर्ष काव्यां में संस्कृति **डॉ० कुसुम कुमारी**	21-22
✎	सृष्टिविषये वैदिकचिन्तनम् **डॉ० विमल चन्द्र काण्डपाल**	23-25
✎	दिनकर के गद्य साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप **प्रतिमा सिंह**	26-28
✎	सती प्रथा : कार्यान्वयन से उन्मूलन तक की यात्रा **साक्षी सिंह**	29-32
✎	पद्मश्री लोकवेत्ता डॉ० भगवतीलाल राजपुरोहित **मीनाक्षी टिकावत**	33-36
✎	रामायन कथा और वाल्मीकि रामायण में प्रमुख प्रसंग **डॉ० चन्दन**	37-41
✎	भारतीय सामाजिक संरचना और दलित समस्या **श्रीमती नीता आर्या**	42-44
✎	मधुकर सिंह के कथा–साहित्य में दलित चेतना **शालिनी**	45-50
✎	भारत की सामाजिक समस्या और राष्ट्रपिता महात्मा ज्योतिबा फुले **वीरेन्द्र कुमार गौतम**	51-54
✎	पश्चिमोत्तर भारत के बौद्ध केन्द्र : एक अध्ययन **डॉ० प्रदीप सिंह एवं डॉ० आदित्य सिंह**	55-58
✎	मेघदूतम् में विप्रलम्भ श्रृंगार : एक विवेचन **डॉ० संजय कुमार**	59-62
✎	मानव उत्पत्ति एवं शिक्षा का विकास **डॉ० रामकुमार प्रसाद**	63-65

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Jaunpur

वाद संवाद

आई. एस. एस. एन.
2348 – 8662

शोध विषयक अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक

PEER-REVIEWED JOURNAL

अंक-41
जनवरी-मार्च, 2024
IMPACT FACTOR 8.76

स्वाक्षर
नई दिल्ली (भारत)

Co-ordinator
I.Q.A.C.
…nhuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

[illegible]
R[illegible] [illegible]vidyal[illegible]
[illegible], [illegible], Ka[illegible]
[illegible]

अंक-41

जनवरी-मार्च, ????

संरक्षक

प्रधान संपादक

डॉ. राम रतन प्रसाद

ए.आर.एस.डी. कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. अनिल कुमार

ए.आर.एस.डी. कॉलेज

अतिथि संपादक

डॉ. सुमित्रा

पोस्ट डॉक्टरल फैलोशिप (आई.सी.एस.एस.आर.) भूगोल विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

आजीवन सदस्यता (एन.ई.पी.ए.एस.आई.) न्यू पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

मानव संसाधन विकास मंत्रालय,

(उच्चतर शिक्षा विभाग), नई दिल्ली द्वारा चयनित

वाद संवाद

आई एस एस एन : **2348-8662**

सम्पादकीय प्रभारी

डॉ. बृजेश कुमार

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक मण्डल

डॉ. शेख अब्दुल वहाब, एसोसिएट प्रोफेसर, वाणियम्बाडी, तमिलनाडु

एस. एन. मंडल, [illegible] प्राध्यापक, बिहार

श्रीमती पूनम, शोधार्थी, हिन्दी विभाग हिमालयन विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखण्ड

श्रीमती, सुधा बी., सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग पीएसजीआरके महिला महाविद्यालय, कोयम्बटूर तमिलनाडु

रामचन्द्र मीणा, सहायक प्रोफेसर, श्यामलाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

रवि कुमार गोंड़, कार्यकारी अध्यक्ष, सम्यक काव्य मंच, मिर्ज़ापुर, उत्तरप्रदेश

मीना देवी, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा

Review Committe Confidential

R.N. Mandal, Principal, KB Jha College, Katihar

C.M. Mandal, Principal, Manihari College, Manihari

प्रकाशक, मुद्रक एवं वितरक

स्वाक्षर

103, मनोकामना भवन, गली नं-2 कैलाशपुरी

पालम, नई दिल्ली - 110045 भारत

दूरभाष : +09871423939, 9711950086

ई-मेल : vaadsamvaad@gmail.com

इस पत्रिका में व्यक्त मत एवं विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं तथा आवश्यक नहीं कि यह विचार अनिवार्य रूप से प्रमाणित पत्रिका की नीतियों के द्योतक हों। इसमें संपादक एवं प्रकाशक की सहमति/प्रमाणिकता आवश्यक नहीं है।

समस्त न्याय पत्रिका से संबंधित दिल्ली क्षेत्र में होगा। इस पत्रिका के सभी सदस्य अपनी सहमति से अवैतनिक हैं।

NSL/ ISSN/ INF/ 2014/ 864 /Refered by NSL/ISSN/CERT/2016/133

IMPACT FACTOR 8.76 **त्रैमासिक पत्रिका वाद संवाद**, अंक-41, **जनवरी-मार्च, 2024**

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Shikharpurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Shikharpur, Kala
Jaunpur

अनुक्रम

संपादकीय iiii

1. प्रखर समाजवादी आचार्य नरेन्द्र देव 7
   – तुलसी कुमारी

2. आधुनिक साहित्य में किन्नर समाज पर चिन्तन : एक विवेचन 14
   – अनिल कुमार

3. राजस्थान में प्राकृतिक आपदाएं महामारी व आपदा प्रबंधन 25
   – जुगल किशोर सैनी

4. महामना और महात्मा के पारस्परिक संबंध और राष्ट्र निर्माण 30
   – डॉ. पिंटू कुमार /

5. प्राचीन भारतीय शहरी लैंगिक परिदृश्य में नारी 35
   – प्रोफेसर विजया लक्ष्मी सिंह / डॉक्टर प्रेम कुमार

6. बौद्ध धर्म में शील के महत्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन 45
   – विनय कुमार

7. अर्थनीति, नील की खेती और अंग्रेजी हुकूमत 52
   – डॉ. राम रतन प्रसाद

8. वैश्विक परिदृश्य में रामकाव्य 57
   – डॉ. अनीता मिंज

9. विभूतिनारायण राय के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ 60
   – ज्योति कुमारी

10. हिंदी सिनेमा और प्रेमचंद की दलित कहानियाँ 66
    – डॉ. विजय पाल/डॉ. पूनम सिंह

11. स्वयं बध्नाति देहेश: स्वयचैव विमुंचति 74
    – प्रो. ज्ञानञ्जय द्विवेदी

12. भारत के संविधान में मानवाधिकार 78
    – डॉ. सन्तोष कुमार उपाध्याय

13. भौतिकवादी जड़ द्रव्य की विशेषताएं 88
    – शकिल सागर

14. अनुभववाद का संक्षिप्त स्वरूप 91
    – नूतन कुमारी

NSL/ ISSN/ INF/ 2014/ 864 /Refered by NSL/ISSN/CERT/2016/133
IMPACT FACTOR 8.76 त्रैमासिक पत्रिका वाद संवाद अंक-[illegible], जनवरी-मार्च, 2024

S/Singh
Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

ISSN : 2348 – 8662

भारत के संविधान में मानवाधिकार

– डॉ. सन्तोष कुमार उपाध्याय
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
संघटक राजकीय महाविद्यालय भदपुरा,
नवाबगंज बरेली, उत्तर प्रदेश

देश के विशाल आकार और विविधता, विकासशील तथा संप्रभुता संपन्न धर्म-निरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणतंत्र के रूप में इसकी प्रतिष्ठा, तथा एक भूतपूर्व औपनिवेशिक राष्ट्र के रूप में इसके इतिहास के परिणामस्वरूप भारत में मानवाधिकारों की परिस्थिति एक प्रकार से जटिल हो गई है। भारत का संविधान मौलिक अधिकार प्रदान करता है, जिसमें धर्म की स्वतंत्रता भी अंतर्भुक्त है। संविधान की धाराओं में बोलने की आजादी के साथ-साथ कार्यपालिका और न्यायपालिका का विभाजन तथा देश के अन्दर एवं बाहर आने-जाने की भी आजादी दी गई है। यह अक्सर मान लिया जाता है, विशेषकर मानवाधिकार दलों और कार्यकर्ताओं के द्वारा कि दलित अथवा अछूत जाति के सदस्य पीड़ित हुए हैं एवं लगातार पर्याप्त भेदभाव झेलते रहे हैं। हालांकि मानवाधिकार की समस्याएं भारत में मौजूद हैं, फिर भी इस देश को दक्षिण एशिया के दूसरे देशों की तरह आमतौर पर मानवाधिकारों को लेकर चिंता का विषय नहीं माना जाता है।

अधिकार वे सुविधाएँ है जो व्यक्ति को जीने के लिए, उसके व्यक्तित्व को पुष्पित और पल्लवित करने के लिए आवश्यक है। मानव अधिकार का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इसकी परिधि के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के नागरिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अधिकारों का समावेश है। अपनी व्यापक परिधि के कारण मानव अधिकार शब्द का प्रयोग भी अत्यंत व्यापक विचार-विमर्श का विषय बन गया है। मानव अधिकारों से तात्पर्य उन सभी अधिकारों से हैं जो व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता, समानता एवं प्रतिष्ठा से जुड़े हुए है। यह अधिकार भारतीय संविधान के भाग-तीन में मूलभूत अधिकारों के नाम से वर्णित किए गए हैं और न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय हैं। इसके अलावा ऐसे अधिकार जो अन्तर्राष्ट्रीय समझौते के फलस्वरूप संयुक्त राष्ट्र की महासभा द्वारा स्वीकार किए गए हैं और देश के न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय हैं, को मानव अधिकार माना जाता है। इन अधिकारों में प्रदूषण मुक्त वातावरण में जीने का अधिकार, अभिरक्षा में यातनापूर्ण और अपमानजनक व्यवहार न होने सम्बन्धी अधिकार और महिलाओं के साथ प्रतिष्ठापूर्ण व्यवहार का अधिकार शामिल है। मानव अधिकार सबके अर्थात स्त्री, पुरूष, बच्चे एवं वृद्ध लोगों के अधिकार है, और सब को समान रूप से प्राप्त है। इन अधिकारों का हनन जाति, धर्म, भाषा,

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

लिंग-भेद के आधार पर नहीं किया जा सकता है। यह सभी अधिकार जन्मजात अधिकार हैं। मानव अधिकार, मानव स्वभाव में ही अंतर्निहित है तथा इन अधिकारों की अनिवार्यता मानव व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिये सदैव रही है।

मानवाधिकार या मानव अधिकार की परिभाषा करना सरल नहीं है। किन्तु इसे नकारा भी नहीं जा सकता है। मानव समाज में कई स्तर पर कई विभेद पाए जाते हैं। भाषा, रंग मानसिक स्तर, प्रजातीय स्तर आदि, इन स्तरों पर मानव समाज में भेदभाव का बर्ताव किया जाता है।" इन सबके बावजूद कुछ अनिवार्यताएँ सब समाजों में समान हैं। यही अनिवार्यता मानव अधिकार है जो एक व्यक्ति को मानव होने के कारण मिलना चाहिए। मानव अधिकार शब्द हिन्दी का युग्म शब्द है जो दो शब्दो मानव + अधिकार से मिलकर बना है। मानव अधिकारों से आशय मानव के अधिकार से है। मानव अधिकार शब्द को पूर्णतः समझने के पूर्व हमें अधिकार शब्द को समझना होगा।

मानव अधिकार की कोई सर्वमान्य विश्वव्यापी परिभाषा नहीं है इसलिए राष्ट्र इसकी परिभाषा अपने सुविधानुसार देते है। विश्व के विकसित देश मानवाधिकार की परिभाषा को केवल मनुष्य के राजनीतिक तथा नागरिक अधिकारों को भी शामिल रखते हैं। मानवाधिकार को कानून के माध्यम से स्थापित किया जा सकता है। इसका विस्तृत फलक होता है जिसमें नागरिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकार भी आते हैं।

हैराल्ड लास्की के अनुसार, ''अधिकार सामाजिक जीवन की वे परिस्थितियाँ है जिसके बिना आमतौर पर कोई व्यक्ति पूर्ण आत्म-विकास की आशा नहीं कर सकता।''

वाइल्ड के अनुसार, ''कुछ विशेष कार्यों के करने की स्वतंत्रता की विवेकपूर्ण माँग को अधिकार कहा जाता है।''

बोसांके के शब्दो में, ''अधिकार वह माँग है जिसे समाज स्वीकार करता है और राज्य लागू करता है।''

मानवाधिकार (Human Rights) वे नैतिक सिद्धान्त हैं जो मानव व्यवहार से सम्बन्धित कुछ निश्चित मानक स्थापित करता है। ये मानवाधिकार स्थानीय तथा अन्तरराष्ट्रीय कानूनों द्वारा नियमित रूप से रक्षित होते हैं। ये अधिकार प्रायः ऐसे श्आधारभूत अधिकारश हैं जिन्हें प्रायः श्न छीने जाने योग्यश माना जाता है और यह भी माना जाता है कि ये अधिकार किसी व्यक्ति के जन्मजात अधिकार हैं। व्यक्ति के आयु, प्रजातीय मूल, निवास-स्थान, भाषा, धर्म, आदि का इन अधिकारों पर कोई प्रभाव नहीं होता। ये अधिकार सदा और सर्वत्र देय हैं तथा सबके लिए समान हैं।

आधुनिक मानवाधिकार कानून तथा मानवाधिकार की अधिकांश अपेक्षाकृत व्यवस्थाएं समसामयिक इतिहास से संबंध हैं। द ट्वेल्व आर्टिकल्स ऑफ द ब्लैक फॉरेस्ट (1525) को यूरोप में मानवाधिकारों का सर्वप्रथम दस्तावेज माना जाता है। यह जर्मनी के किसान विद्रोह (Peasants' War) स्वाबियन संघ के समक्ष उठाई गई किसानों की मांग का ही एक हिस्सा है। ब्रिटिश बिल ऑफ राइट्स ने युनाइटेड किंगडम में सिलसिलेवार तरीके से सरकारी दमनकारी कार्रवाइयों को

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

ISSN : 2348 – 8662

अवैध करार दिया स 1776 में संयुक्त राज्य में और 1789 में फ्रांस में 18 वीं शताब्दी के दौरान दो प्रमुख क्रांतियां घटीं स जिसके फलस्वरूप क्रमशः संयुक्त राज्य की स्वतंत्रता की घोषणा एवं फ्रांसीसी मनुष्य की मानव तथा नागरिकों के अधिकारों की घोषणा का अभिग्रहण हुआ। इन दोनों क्रांतियों ने ही कुछ निश्चित कानूनी अधिकार की स्थापना की।

मानव अधिकारों से अभिप्राय "मौलिक अधिकारों एवं स्वतंत्रता से है जिसके सभी मानव प्राणी हकदार है। अधिकारों एवं स्वतंत्रताओं के उदाहरण के रूप में जिनकी गणना की जाती है, उनमें नागरिक और राजनैतिक अधिकार सम्मिलित हैं जैसे कि जीवन और आजाद रहने का अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और कानून के सामने समानता एवं आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों के साथ ही साथ सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार, भोजन का अधिकार काम करने का अधिकार एवं शिक्षा का अधिकार। मानव अधिकार – 1. मूल (fundamental), 2. आधारभूत (Basic), 3. अंतरनिहित (Inherent), 4. प्राकृतिक (Natural), 5. जन्मसिद्ध अधिकार (Birth Rights)।

संविधान में नागरिकों के मौलिक अधिकार : -

भारत के नागरिकों के मौलिक अधिकारों से जुड़े तथ्य इस प्रकार हैं-

1. इसे संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान से लिया गया है।

2. इसका वर्णन संविधान के भाग-3 में (अनुच्छेद 12 से अनुच्छेद 35) है।

3. इसमें संशोधन हो सकता है और राष्ट्रीय आपात के दौरान (अनुच्छेद 352) जीवन एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार को छोड़कर अन्य मौलिक अधिकारों को स्थगित किया जा सकता है।

4. मूल संविधान में 7 मौलिक अधिकार थे, लेकिन 44वें संविधान संशोधन (1979 ई.) के द्वारा संपत्ति का अधिकार (अनुच्छेद 31 से अनुच्छेद 19 f) को मौलिक अधिकार की सूची से हटाकर इसे संविधान के अनुच्छेद 300 (a) के अंतर्गत कानूनी अधिकार के रूप में रखा गया है।

भारतीय नागरिकों को निम्नलिखित मूल अधिकार प्राप्त हैं-

1. समता या समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14 से अनुच्छेद 18)
2. स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 19 से 22)
3. शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद 23 से 24)
4. धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 25 से 28)
5. संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार (अनुच्छेद 29 से 30)
6. संवैधानिक अधिकार (अनुच्छेद 32)

नागरिकों के मौलिक कर्तव्य :-

1976 में सरकार द्वारा गठित स्वर्णसिंह समिति की सिफारिशों पर 42वें संशोधन द्वारा संविध

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thaisi, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thaisi, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

न में कर्तव्य जोड़े गए थे। मूल रूप से संख्या में 10 मौलिक कर्तव्यों की संख्या 2002 में 86वें संशोधन द्वारा 11 तक बढ़ाई गई थी।

1. प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।
2. स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।
3. भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे।
4. देश की रक्षा करे।
5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे।
6. हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका निर्माण करे।
7. प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और उसका संवर्द्धन करे।
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और ज्ञानार्जन की भावना का विकास करे।
9. सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे।
10. व्यक्तिगत एवं सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे।
11. माता–पिता या संरक्षक द्वारा 6 से 14 वर्ष के बच्चों हेतु प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना (86वां संशोधन)। नागरिक इन कर्तव्यों का पालन करने के लिए संविधान द्वारा नैतिक रूप से बाध्य है।

मानव द्वारा मानव के दर्द को पहचानने और महसूस करने के लिए किसी खास दिन की जरूरत नहीं होती है। अगर हमारे मन में मानवता है ही नहीं तो फिर हम साल में पचासों दिन ये मानवाधिकार का झंडा उठाकर घूमते रहें, तो कुछ भी नहीं किया जा सकता है। ये तो वो जज्बा है, जो हर इंसान के दिल में हमेशा ही बना रहता है, बशर्ते कि वह इंसान संवेदनशील हो। क्या हमारी संवेदनाएं मर चुकी हैं? अगर नहीं, तो फिर चलें हम अपने से ही तुलना शुरू करते हैं कि हम मानवाधिकार को कितना मानते हैं? क्या हम अपने साथ और अपने घर में रहने वाले लोगों के मानवाधिकारों का सम्मान करते हैं?

सामान्य रूप से मानवाधिकारों को देखा जाए तो मानव जीवन में भोजन पाने का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, बाल शोषण, उत्पीड़न पर अंकुश, महिलाओं के लिए घरेलू हिंसा से सुरक्षा, उसके शारीरिक शोषण पर अंकुश, प्रवास का अधिकार, धार्मिक हिंसा से रक्षा आदि को लेकर बहुत सारे कानून बनाए गए हैं जिन्हें मानवाधिकार की श्रेणी में रखा गया है। ये अधिकार सभी अन्योन्याश्रित और अविभाज्य हैं। मानव अधिकार का ढांचा मानव अधिकारों की शक्ति का सही उपयोग करने के लिए उनकी पर्याप्त जानकारी एवं आम लोगों तक उनकी पहुंच अतिआवश्यक है। इसके लिए एक ढांचा होना जरूरी है।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Manavidyalaya
Thana, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Manavidyalaya
Thana, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

ISSN : 2348 – 8662

नीचे दिए गए बिंदु मौलिक अधिकारों और मानवाधिकारों के बीच अंतर की व्याख्या करते हैं –

1. किसी देश के नागरिकों के मौलिक अधिकार, जो संविधान में उल्लिखित हैं और कानून के तहत लागू करने योग्य हैं, मौलिक अधिकारों के रूप में जाने जाते हैं। दूसरे चरम पर, मानवाधिकार वे अधिकार हैं जिन्हें एक इंसान को सम्मान और स्वतंत्रता के साथ जीवित रहने की आवश्यकता है।
2. मौलिक अधिकारों में केवल वे अधिकार शामिल हैं जो एक सामान्य जीवन के लिए बुनियादी हैं। इसके विपरीत, मानवाधिकार में वे अधिकार शामिल हैं जो वास्तविक जीवन के लिए बुनियादी हैं और निरपेक्ष हैं, यानी इसे दूर नहीं किया जा सकता है।
3. जबकि मौलिक अधिकार देश विशिष्ट हैं, अर्थात् ये अधिकार देश से देश में भिन्न हो सकते हैं, मानवाधिकार की वैश्विक स्वीकृति है, जिसका अर्थ है कि सभी मानव इन अधिकारों का आनंद लेते हैं।

मौलिक अधिकार स्वतंत्रता के अधिकार के मूल सिद्धांत पर निर्भर करते हैं। जैसा कि, मानवाधिकार सम्मान के साथ जीवन के अधिकार पर आधारित है।

4. मौलिक अधिकारों की गारंटी देश के संविधान के तहत दी जाती है, जबकि मानव अधिकारों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है।

मौलिक और मानवाधिकार दोनों ही प्रकृति में लागू करने योग्य हैं, लेकिन पूर्व को कानून अदालत द्वारा लागू किया जाता है, और बाद में संयुक्त राष्ट्र संगठन द्वारा लागू किया जाता है।

5. मौलिक अधिकार लोकतांत्रिक समाज के विचारों से प्राप्त होते हैं। इसके विपरीत, मानव अधिकार सभ्य देशों के विचारों से निकलते हैं।

मानवाधिकार की स्थापना 2 अक्टूबर 1993 में हुई। जिसके उद्देश्य नौकरशाही पर रोक लगाना, मानव अधिकारों के हनन को रोकना तथा लोक सेवक द्वारा उनका शोषण करने में अंकुश लगाना। मानवाधिकार की सुरक्षा के बिना सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आजादी खोखली है मानवाधिकार की लड़ाई हम सभी की लड़ाई है। विश्वभर में नस्ल, धर्म, जाति के नाम मानव द्वारा मानव का शोषण हो रहा है। अत्याचार एवम जुल्म के पहाड़ तोड़े जा रहे हैं। हमारे देश में स्वतंत्रता के पश्चात् धर्म एवम जाति के नाम पर भारतवासियों को विभाजित करने का प्रयास किया जा रहा है। आदमी गोरे हो या काला, हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई, हिंदी बोले या कोई अन्य भाषा सभी केवल इंसान हैं और संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित मानवाधिकारों को प्राप्त करने का अधिकार है। मानव अधिकार का मतलब ऐसे हक जो हमारे जीवन और मान-सम्मान से जुड़े हैं। ये हक हमें जन्म से मिलते हैं, हम सब आजाद हैं। साफ सुथरे माहौल में रहना हमारा हक है। हमें इलाज की अच्छी सहूलियत मिले। हमें और हमारे बच्चों को पढ़ाई-लिखाई की अच्छी सहूलियत मिले। पीने का पानी साफ मिले। जाति, धर्म, भाषा-बोली के कारण हमारे साथ भेदभाव न हो। हमें हक है की हम सम्मान के साथ रहें। कोई हमें अपना दास या गुलाम नहीं बना सके।

Coordinator
IQAC
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai Bhikharipur, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai Bhikharipur, Kale
Jaunpur

प्रदेश में हम कहीं भी बेरोकटोक आना-जाना कर सकते हैं। हम बेरोकटोक बोल सकते हैं, लेकिन हमारे बोलने से किसी के मान-सम्मान को चोट नहीं पहुंचनी चाहिए। हमें आराम करने का अधिकार है। हमें यह तय करने का अधिकार है की हमारे बच्चे को किस तरह की शिक्षा मिले। हर बच्चे को जीने का अधिकार है, उसे अच्छी तरह की शिक्षा मिले। यदि हमें हमारा हक दिलाने में सरकारी महकमा हमारी मदद नहीं कर रहा है तो हम मानव अधिकार आयोग में शिकायत कर सकते हैं। आयोग में सीधे अर्जी देकर शिकायत कर सकते हैं।इसके लिए वकील की जरूरत नहीं है। शिकायत किसी भी भाषा या बोली में कर सकते हैं हिंदी में हो तो अच्छा है। शिकायत लिखने के लिए कैसे भी कागज का इस्तेमाल करें, स्टैम्प पेपर की कोई जरूरत नहीं होती। आयोग के दफ्तर में टेलीफोन नम्बर पर भी शिकायत दर्ज कर सकते हैं।

नागरिकों के मौलिक अधिकार एवं कर्तव्य – मानवाधिकार मनुष्य के वे मूलभूत सार्वभौमिक अधिकार हैं जिनसे मनुष्य को नस्ल, जाति, राष्ट्रीयता, धर्म, लिंग आदि किसी भी दूसरे कारक के आधार पर वंचित नहीं किया जा सकता। सभी व्यक्तियों को गरिमा और अधिकारों के मामले में जन्मजात स्वतंत्रता और समानता प्राप्त है।

वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे जीवनस्तर को प्राप्त करने का अधिकार है, जो उसे और उसके परिवार के स्वास्थ्य, कल्याण और विकास के लिए आवश्यक है। मानव अधिकारों में आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अधिकारों के समक्ष समानता का अधिकार एवं शिक्षा का अधिकार आदि नागरिक और राजनीतिक अधिकार भी सम्मिलित हैं।

मानव अधिकार मानव के विशेष अस्तित्व के कारण उनसे संबंधित है इसलिए ये जन्म से ही प्राप्त हैं और इसकी प्राप्ति में जाति, लिंग, धर्म, भाषा, रंग तथा राष्ट्रीयता बाधक नहीं होती। मानव अधिकार को मूलाधिकार आधारभूत अधिकार अंतर्निहित अधिकार तथा नैसर्गिक अधिकार भी कहा जाता है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :- अशोक के आदेश पत्र आदि अनेक प्राचीन दस्तावेजों एवं विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक पुस्तकों में अनेक ऐसी अवधारणाएं हैं जिन्हें मानवाधिकार के रूप में चिह्नित किया जा सकता है। आधुनिक मानवाधिकार कानून और इसकी अधिकांश अपेक्षाकृत व्यवस्थाओं का संबंध समसामयिक इतिहास से है।

1. द ट्वेल्व आर्टिकल्स ऑफ द ब्लैक फॉरेस्ट (1525) को यूरोप में मानवाधिकारों का प्रथम दस्तावेज माना जाता है, जो कि जर्मनी के किसानों की स्वाबियन संघ के समक्ष उठाई गई मांगों का ही एक हिस्सा है।

2. यूनाइटेड किंगडम में 1628 ई. पेटिशन ऑफ राइट्स में मानवीय अधिकारों का उल्लेख किया गया।

3. वर्ष 1690 ई. में जॉन लॉक ने भी इन अधिकारों का अपनी पुस्तक स्टेट्स ऑफ नेचर में वर्णन किया।

4. वर्ष 1791 ई. में ब्रिटिश बिल ऑफ राइट्स ने यूनाइटेड किंगडम में सिलसिलेवार तरीके से सरकारी दमनकारी कार्रवाइयों को अवैध ठहराया।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur

ISSN : 2348 – 8662

5. वर्ष 1776 ई. में संयुक्त राज्य अमेरिका की स्वतंत्रता के बाद इन अधिकारों को अमेरिकी संविधान में स्थान दिया गया।

6. वर्ष 1789 ई. में फ्रांस क्रांति के उपरांत फ्रांस में भी मानव तथा नागरिकों के अधिकारों की घोषणा को अभिग्रहीत किया गया।

संविधान में उल्लेख: – आत्मसम्मान के साथ जीने के लिए, अपने विकास के लिए और आगे बढ़ने के लिए कुछ हालात ऐसे चाहिए जिससे कि उनके रास्ते में कोई व्यवधान न आए। पूरे विश्व में इस बात को अनुभव किया गया है और इसीलिए मानवीय मूल्यों की अवहेलना होने पर वे सक्रिय हो जाते हैं। इसके लिए हमारे संविधान में भी उल्लेख किया गया है।

संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16, 17, 19, 20, 21, 23, 24, 39, 43, 45 देश में मानवाधिकारों की रक्षा करने के सुनिश्चित हैं। सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि इस दिशा में आयोग के अतिरिक्त कई एनजीओ भी काम कर रहे हैं और साथ ही कुछ समाजसेवी लोग भी इस दिशा में अकेले ही अपनी मुहिम चला रहे हैं।

मानव अधिकार के निम्न तत्व –

1. विचारधारा, 2. प्रकार्य, 3. मूल अधिकार, 4. हितग्राही, 5. अभिकर्ता, 6. संस्थान, 7. विधियां।

मानव अधिकारों का मूल उद्देश्य मानव की गरिमा को सुरक्षा प्रदान करना है। अधिकारों की विचारधारा पर मूल सहमति है कि हर देश एवं क्षेत्र के निवासी को एक गरिमामय जीवन जीने को मिले तथा उसको मूल जीवन जीने के अधिकारों को सुरक्षा प्राप्त हो।

मानव अधिकारों के 3 स्तर –1. अंतरराष्ट्रीय, 2. राष्ट्रीय 3.क्षेत्रीय,

इन तीनों स्तरों को विभिन्न संधियों से जोड़कर प्रभावशाली तरीके से मानव अधिकारों की पहचान की गई है। मानव अधिकारों से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण कार्य सर्वसम्मति से मानव अधिकारों पर एक राय बनाना है। विभिन्न वर्गों- जिनमें महिला, अल्पसंख्यक, अप्रवासी, शोषित एवं अन्य वर्ग जिनके अधिकारों का हनन होता है, पर रायशुमारी कर एकमत बनाने का प्रयत्न करना है। इसके अलावा नियमों का संदर्शन, अधिकारों के प्रति सम्मान को बढ़ावा, अधिकारों की गतिशीलता एवं अधिकारों की सुरक्षा मानव अधिकार की सुरक्षा करने वाले संस्थानों एवं अभिकर्ताओं का प्रमुख उद्देश्य है।

किसी भी देश के विकास के लिए उस देश में सामाजिक विकास आवश्यक होता है एवं सामाजिक विकास के लिए सामाजिक समस्याओं जैसे गरीबी, बेरोजगारी एवं सामाजिक बहिष्कार जैसी समस्याओं पर ध्यान देना जरूरी है।

शासन का काम है कि वह समाज में अंतरनिहित असुरक्षा की भावनाओं को मिटाने के लिए समाज में व्याप्त आंतरिक कुरीतियों एवं तंत्र में व्याप्त बुराइयों को मिटाए। इसके लिए व्यक्ति की भौतिक एवं आध्यात्मिक जरूरतें एवं परिवार, समाज एवं समूहों की जरूरतों पर ध्यान दिया जाए।

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Ka
Jaunpur

मानव अधिकारों से जुड़े गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, कुपोषण, नशा, सुनियोजित अपराध, भ्रष्टाचार, विदेशी अतिक्रमण, शस्त्रों की तस्करी, आतंकवाद, असहिष्णुता, रंगभेद, धार्मिक कट्टरता आदि बुराइयों का योजनाबद्ध तरीके से निर्मूलन जरूरी है।

10 दिसंबर को पूरी दुनिया में मानवाधिकार दिवस के रूप में मनाया जाता है। 10 दिसंबर 1948 को संयुक्त राष्ट्र की साधारण सभा ने संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकारों की विश्वव्यापी घोषणा को अंगीकृत किया गया। मानवाधिकारों की विश्वव्यापी घोषणा में प्रस्तावना एवं 30 अनुच्छेद हैं।

इस विश्वव्यापी घोषणा की प्रस्तावना में कहा गया है कि मानव समुदाय के सभी सदस्यों के गौरवपूर्ण जीवन एवं समानता के अधिकार विश्वव्यापी स्वतंत्रता, न्याय एवं शांति के अधिकार के लिए हैं, जहां पुरुष एवं महिला अच्छे सामाजिक विकास के साथ अधिक से अधिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकें अर्थात अनुच्छेद 1 से लेकर अनुच्छेद 20 तक व्यक्ति के नागरिक तथा राजनीतिक अधिकारों की व्याख्या की गई है तथा अनुच्छेद 21 से 30 तक व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक अधिकारों को सम्मिलित किया गया है।

राष्ट्रीय मानवाधिकार मुख्य उद्देश्य : –

1. संयुक्त राष्ट्र,भारतीय संविधान, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कानून के मानवाधिकारों के सार्वभौमिक घोषणा पत्र का अनुसरण करना, अपनाना और बढ़ावा देना ।

2. राज्य मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के उद्देश्य का पालन करना व संविधान में प्रदत्त मौलिक एवं मानव अधिकारों के लिए सभी को जागरुक करना, अधिकार दिलाने व सुरक्षित करने के उद्देश्य से संघर्ष करना ।

3. सरकारी व गैर सरकारी विभागों में व्याप्त रिश्वतखोरी व भ्रष्टाचार को रोकना।

4. भ्रष्ट और रिश्वतखोर अधिकारियों पर कानूनी कार्यवाही कराना व सजा दिलवाना ।

5. सरकारी अस्पतालों में सरकार द्वारा गरीबों के इलाज के लिए दी जाने वाली सुविधाओं का लाभ गरीबों को दिलाना।

6. सरकारी डॉक्टरों के द्वारा अस्पताल में आए हुए मरीजों से पैसा वसूलने, सरकारी दवा ना देने, बाहर से दवा लिखने या मरीज के साथ दुर्व्यवहार करने पर कानूनी कार्यवाही करवाना।

7. जुर्म अन्याय व भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए संघर्ष करना और शासन प्रशासन का सहयोग करना।

8. कन्या भ्रूण हत्या रोकना व समाज को जागरुक करना।

9. बाल विवाह व महिलाओं पर हो रहे उत्पीड़न पर अंकुश लगाना।

10. महिलाओं को सशक्तीकरण करने के उद्देश्य से योजनाएं संचालित करना व महिलाओं को जागरुक करना ।

1. महिलाओं के साथ हो रहे शारीरिक व मानसिक शोषण को रोकना व दहेज प्रथा को बंद करना ।

Coordinator
I.Q.A.C.
... Mahavidyalaya
... Gaurabadshahpur/Kala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Gaurabadshahpur, Kala
Jaunpur

12. बाल मजदूरी पर अंकुश लगाना व गरीब और अनाथ बच्चों की रहने खाने और शिक्षा की व्यवस्था करना।

13. गरीब व अनाथ बच्चों के लिए हॉस्टल व अनाथालय का निर्माण करना।

14. पीड़ित असहाय व्यक्तियों की हर संभव मदद करना और पीड़ितों की समस्याओं के निस्तारण हेतु शासन प्रशासन व जिम्मेदार अधिकारियों से मदद कराना ।

15. प्रदूषण को रोकने का प्रयास करना व वातावरण को शुद्ध बनाए रखने के उद्देश्य से वृक्षारोपण कराना और कार्यक्रम आयोजित कर समाज को जागरूक करना ।

16. यातायात के नियमों का पालन एवं करना कराना व कैंपों का आयोजन कर लोगों को सड़क सुरक्षा व यातायात के नियमों के बारे में जागरूक करना ।

17. समाज में असहाय व पीड़ित लोगों को कानूनी मदद एवं न्याय दिलाना ।

18. किसी भी अपराध को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन का पूर्ण सहयोग करना , सूचना देना व अपराधों की रोकथाम के लिए आपसी तालमेल बनाए रखना ।

19. खाद्य और पेय पदार्थों के मिलावटखोरों पर कानूनी कार्यवाही करवाना ।

20. एड्स कैंसर व अन्य घातक जानलेवा बीमारियों के बारे में लोगों को जागरूक करना ।

21. समय-समय पर स्वास्थ्य कैंप का आयोजन कराना व पल्स पोलियो एवं अन्य घातक और असहाय रोगों के बारे में लोगों को बताना व जागरूक करना।

22. लोगों को उनके मानवाधिकारों के संवैधानिक अधिकारों के बारे में बताना व जागरूक करना।

23. केंद्र व प्रदेश सरकारों द्वारा गरीब जरूरतमंद व किसानों के हितों के लिए की जा रही सरकारी योजना के बारे में, लोगों के बीच ले जाना व जरूरतमंद को सरकारी योजना का लाभ दिलाना ।

24. गौ हत्या पर अंकुश लगाना व गौवंश पालन को बढ़ावा देना ।

25. शिक्षा का व्यापक प्रचार प्रसार करना व देश के हर अंतिम बच्चे युवुर्ग महिला को शिक्षित बनाने का सतत प्रयास करना।

26. आम जनता की समृद्धि प्रगति और कल्याण को बढ़ावा देना।

27. जरूरतमंद और योग्य लड़कियों, अनाथ छात्रों, बच्चों, वृद्धों, विधवाओं, मानसिक रूप से मंद, शारीरिक रूप से विकलांग, नेत्रहीन, आरक्षण अक्षम व्यक्तियों को उनके उत्थान रखरखाव पुनर्वास की आवश्यकता अनुसार सहायता, राहत और सेवाएं प्रदान करना।

28. व्याख्यान, सेमिनार, सांस्कृतिक प्रोग्राम, प्रोग्राम के माध्यम से बच्चों और युवाओं के क्लबों को व्यवस्थित करना ताकि उन्हें सामाजिक सेवाओं की भावनाओं को मानवीय मूल्यों ,सरल जीवन और नैतिक चरित्र के उच्च स्तर को समझने के अवसर मिल सके।

29. एड्स, T.V., कुष्ठ रोग और कैंसर जैसे अन्य घातक रोगों के उपचार और उपचार में

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thaiai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Tuaiai, Bhikharipur, Kal.
Jaunpur

सहायता के लिए जागरूकता अभियान चलाना ।

30. गरीब और आर्थिक रुप से पिछड़े युवक-युवतियों के सामूहिक विवाह प्रोग्राम आयोजित कर विवाह कराना।

31. देश में बाढ़ चक्रवात सूखा अकाल और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित लोगों के लिए राहत वितरण कार्यक्रम का व्यवस्था करना ।

32. जनसंख्या को नियंत्रण करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर जनसंख्या को नियंत्रित करने का प्रयास करना।

33. भारत देश में रहने वाले सभी भारतीयों के बीच भाईचारा ,एकता, अखंडता, राष्ट्रीयता, राष्ट्रप्रेम सहकार्य, सहयोग , धर्मनिरपेक्षता ,देश भक्ति व आपस में तालमेल आदि भावनाओं को जगाना व बनाना।

34. लोगों को एक दूसरे का सहयोग करने ,शिक्षित बनने, स्वरोजगार स्थापित करने, आत्मनिर्भरता के आत्मविश्वास को जगाना व प्रोत्साहित करना।

35. आम जनमानस के बेहतर स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क बिजली पानी की व्यवस्था कराना कूड़ा करकट हटाने के कार्यों में तीव्र रुचि लेना सफाई अभियान व स्वास्थ्य प्रशिक्षण कैंपों का आयोजन कराना।

36. समय समय पर रक्तदान शिविर, स्वास्थ्य शिविर ,आरोग्य शिविर, नेत्र शिविर, योगा शिविर आदि का आयोजन करना व कराना और उनके लाभ को आम जनता तक पहुंचाना।

37. योग्य एवं जरूरतमंद मेधावी होनहार छात्रों के बीच किताबें ,कॉपी, यूनिफार्म ,कपड़ा, पुरस्कार छात्रवृत्ति आदि प्रदान करना या कराना छात्रों को समय समय पर प्रोत्साहित करना।

38. जल संरक्षण के लिए लोगों को जागरुक करना वह जल बचाओ अभियान को संचालित करना वह भारत के सभी प्रमुख नदियों को जल को स्वच्छ बनाए रखने के लिए आम जनता के बीच संवाद करना व आवश्यकता अनुसार जगह जगह पर पीने का पानी के लिए प्याऊ लगवाना।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत एक देश का अध्ययन 21 अगस्त 2011, संयुक्त राज्य अमेरिका के कांग्रेस पुस्तकालय।
2. "वर्ल्ड 2006 में स्वतंत्रता: सिविल लिबर्टीज और चयनित से डेटा के राजनीतिक अधिकारों सर्वेक्षण फ्रीडम हाउस की वार्षिक ग्लोबल" (122 किया), फ्रीडम हाउस 8 फरवरी 2006
3. आज बाबरी मस्जिद विध्वंस मामले की सुनवाई18 सितंबर 2007
4. बाबरी मस्जिद टियरिंग डाउन - आई विटनेस बीबीसी मार्क टुली 27 सितंबर 2010
5. -समाचार पत्र -दैनिक जागरण, द हिंदू , दैनिक हिंदुस्तान, दैनिक अमर उजाला।
6. पत्र एवं पत्रिकाएं - इंडिया टुडे, फ्रंटलाइन, योजना, कुरुक्षेत्र, प्रतियोगिता दर्पण, इंडियन जनरल ऑफ पॉलिटिकल साइंस आदि।
7. संचार माध्यम-मोबाइल, कंप्यूटर, लैपटॉप, रेडियो, चलचित्र आदि।
8. मानव अधिकार-डॉ संतोष कुमार उपाध्याय

OO

Co-ordinator
I.Q.A.C.
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipurkala, Jaunpur

Principal
Raghuveer Mahavidyalaya
Thalai, Bhikharipur, Kala
Jaunpur